इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मानविकी विद्यापीठ

BHDG -173
समाचार पत्र और फीचर लेखन

खंड

2

विभिन्न क्षेत्रों में और विशिष्ट विषयों पर फीचर लेखन

इकाई 6
यात्रा लेखन : विषय का चयन और प्रस्तुति 109

इकाई 7
सामाजिक और सांस्कृतिक फीचर लेखन : विषय का चयन और प्रस्तुति 127

इकाई 8
आर्थिक फीचर : विषय का चयन एवं प्रस्तुति 147

इकाई 9
विज्ञान, पर्यावरण और स्वास्थ्य संबंधी फीचर : विषय का चयन और प्रस्तुति 164

इकाई 10
खेलकूद में फीचर : विषय का चयन और प्रस्तुति 184

इकाई 11
समुदाय संबंधी फीचर : विषय का चयन और प्रस्तुति 209

खंड 2 परिचय

समाचार पत्र और फीचर लेखन के पाठ्यक्रम का यह दूसरा खंड है। इस खंड में कुल छह इकाइयाँ है। इकाई संख्या–6 से इकाई संख्या 11 तक। इकाई संख्या छह यात्रा लेखन से सम्बन्धित है। इस इकाई में सर्वप्रथम यात्रा लेखक की योग्यता पर विचार किया गया है। फिर यात्रा स्थल के चयन, सामग्री संकलन, संयोजन, संपादन और लेखन तथा प्रस्तुति के साथ ही भाषा एवं शैली के विषय में चर्चा की गई है।

इकाई संख्या सात 'सामाजिक और सांस्कृतिक फीचर : विषय का चयन और प्रस्तुति' है। इस इकाई में सामाजिक और सांस्कृतिक फीचर अर्थ बताने के साथ ही उनके प्रकारों, लेखन, प्रस्तुति और भाषा शैली के विषय में विस्तार से चर्चा की गई है।

इकाई संख्या आठ आर्थिक फीचर से सम्बंधित है। इस इकाई में सबसे पहले आर्थिक फीचर का अभिप्राय बताया गया है। फिर उसके विभिन्न प्रकारों का उल्लेख करते हुए उनसे सम्बन्धित फीचर लिखने के लिए आवश्यक तैयारी (विषय का चयन, सामग्री संकलन) के विषय में बताया गया है। पुनः सामग्री के संयोजन–संपादन, लेखन और भाषा शैली की प्रस्तुति के विषय में विस्तार से चर्चा की गई है।

इकाई संख्या नौ विज्ञान, पर्यावरण और स्वास्थ्य सम्बंधी फीचर लेखन से संबंधित है। इस इकाई में विज्ञान, पर्यावरण और स्वास्थ्य तीनों क्षेत्रों से सम्बन्धित फीचर लेखन के विषय में विस्तार से चर्चा की गई है।

इकाई संख्या दस खेलकूद में फीचर लेखन से सम्बंधित है। इस इकाई में सर्वप्रथम खेल फीचर का अभिप्राय बताया गया है। उसके बाद खेल फीचर के प्रकारों की चर्चा की गई है। इस इकाई में भी विषय के चयन, सामग्री संकलन, उसके संयोजन और सम्पादन और फीचर के लेखन एवं प्रस्तुति पर विचार किया गया है।

इकाई संख्या ग्यारह 'समुदाय सम्बंधी फीचर : विषय का चयन और प्रस्तुति' है। इस इकाई का आरंभ समुदाय के लिए लिखने के अभिप्राय और उसके महत्व को बताने से हुआ है इस इकाई में समुदाय के सम्बन्ध में लेखन के विभिन्न क्षेत्रों पर भी प्रकाश डाला गया है। समुदाय पर लेखन के लिए क्या योग्यता होनी चाहिए, इस पर चर्चा की गई है।

इस प्रकार यह खण्ड 'विभिन्न क्षेत्रों में और विशिष्ट विषयों पर फीचर लेखन' को समग्रता में प्रस्तुत करता है। इस खण्ड की प्रत्येक इकाई में बोध प्रश्न और अभ्यास भी दिए गए हैं जो आपके लिए लाभप्रद साबित होंगे। इन प्रश्नों के उत्तर लिखकर आप अपने को और अधिक माँज सकेंगे।

इकाई 6 यात्रा लेखनः विषय का चयन और प्रस्तुति

इकाई की रूपरेखा

6.0 उद्देश्य

6.1 प्रस्तावना

6.2 यात्रा लेखक की योग्यता

6.3 यात्रा स्थल का चयन

6.3.1 रुचि एवं विशेषज्ञता

6.3.2 यात्रा की प्रासंगिकता और महत्व

6.4 सामग्री का संकलन

6.4.1 यात्रा–पूर्व अध्ययन

6.4.2 यात्रा की तैयारी

6.4.3 तथ्यों का संकलन

6.4.4 अन्य सामग्री

6.5 सामग्री का संयोजन और संपादन

6.6 यात्रा लेखन की प्रस्तुति

6.6.1 आरंभ

6.6.2 मध्य

6.6.3 अंत एवं शीर्षक

6.7 भाषा एवं शैली

6.8 सारांश

6.9 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

6.0 उद्देश्य

समाचार पत्र और फीचर लेखन से संबंधित इस छठी इकाई में आप यात्रा लेखन के व्यावहारिक पक्ष का अध्ययन करेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- यात्रा लेखक के लिए आवश्यक योग्यता को समझ सकेंगी/सकेंगे;
- सही यात्रा–स्थल का चयन कर सकेंगी/सकेंगे;
- यात्रा के लिए आवश्यक तैयारी कर सकेंगी/सकेंगे;
- यात्रा के दौरान एकत्र सामग्री का लेखन के लिए संयोजन और संपादन कर सकेंगी/सकेंगे;
- यात्रावृत्त लिख सकेंगी/सकेंगे और
- इसके लिए उपर्युक्त भाषा–शैली का प्रयोग कर सकेंगी/सकेंगे।

6.1 प्रस्तावना

फीचर लेखन से संबंधित व्यवहारमूलक पाठयक्रम की यह छठी इकाई है। इस इकाई का संबंध यात्रा लेखन से है। इसमें यात्रा लेखन के व्यावहारिक पक्ष का परिचय दिया गया है। सबसे पहले इस बारे में विचार किया गया है कि एक अच्छे यात्रा लेखक में क्या विशेषताएँ होनी चाहिए, उसके बाद अपनी रुचि, उद्देश्य और लेखन की प्रासंगिकता को ध्यान में रखते हुए यात्रा स्थल का चयन कैसे किया जाए, इसका उल्लेख किया गया है। यात्रा आरंभ करने से पूर्व किस तरह का अध्ययन करना चाहिए, क्या तैयारी करनी चाहिए, क्या–क्या सामान साथ ले जाना चाहिए। यात्रा के दौरान लेखन की पूर्व तैयारी के तौर पर क्या–क्या नोट करना चाहिए, इन सब बातों पर भी विचार किया गया है।

यात्रा की समाप्ति के बाद अपनी समस्त सामग्री का संयोजन करने और लेखन के लिए संपादित करने के बारे में भी बताया गया है। यात्रा लेख के आरंभ, मध्य एवं अंतिम भाग के लेखन के बारे में उदाहरण सहित विचार किया गया है। उपर्युक्त भाषा–शैली के बारे में कुछ बातें हैं। फोटो आदि के उपयोग का ढंग भी बताया गया है। आलेख का आकर्षक शीर्षक कैसे दिया जाए, इस पर भी चर्चा की गई है। हमने कोशिश की है कि आपको यात्रा लेखन के सभी पक्षों के बारे में ठोस उदाहरणों द्वारा समझाएँ ताकि लिखने में मदद मिल सके। बोध प्रश्नों और अभ्यासों द्वारा आप अपनी लेखन क्षमता का विकास कर सकेंगे।

6.2 यात्रा लेखक की योग्यता

यात्रा लेखक में कुछ विशेष तरह की योग्यताओं का होना आवश्यक है। सबसे पहले तो उसे पर्याप्त सामान्य ज्ञान होना चाहिए क्योंकि यात्रा के दौरान उसे बहुत–सी ऐसी चीजें देखने–जानने को मिल सकती हैं जिनकी पूर्व जानकारी के बिना वह उनका महत्व नहीं बता सकेगा। मसलन, अलग–अलग क्षेत्रों की प्रकृति के अंतर के अनुसार वहाँ पैदा होने वाले पेड़–पौधे भी अलग–अलग होते हैं। यात्रा लेखक को प्रकृति के इन विभिन्न रूपों की जानकारी होनी चाहिए। पहाड़ों की यात्रा के दौरान भिन्न–भिन्न तरह के पेड़–पौधे मिलते हैं। अगर हम उनके बारे में कुछ नहीं जानते तो उनका न तो वर्णन कर सकते हैं और न उनका महत्व बता सकते हैं। किसी ऐतिहासिक स्मारक की यात्रा के समय हमें उसके इतिहास के बारे में काफी जानकारी होनी चाहिए।

दूसरी विशेषता यात्रा लेखक में यह होनी चाहिए कि वह वस्तुओं का सूक्ष्म पर्यवेक्षण (Observation) कर सके। प्रकृति का सौंदर्य, लोगों की स्वभावगत विशेषताएँ, स्मारकों की विशिष्टता की पहचान तभी संभव है जब आपमें उनकी बारीकी से निरीक्षण करने की क्षमता हो। सामान्य आदमी के लिए सभी समुद्र एक से होते हैं परंतु एक प्रतिभाशाली लेखक उनके अंतर को न केवल आसानी से पहचान लेता है, वरन् उनके फर्क को सुंदर ढंग से शब्दों में बांध भी देता है। यही नहीं, यात्रा के दौरान मिलने वाले लोगों का भी सूक्ष्म अवलोकन कर उनका प्रभावशाली शब्द–चित्र प्रस्तुत करने से यात्रा वृत्तांत को उत्कृष्ट बनाया जा सकता है। एक उदाहरण देखिए –

''जंगबहादुर का चेहरा भी अपने छोटेपन के प्रति इतना सतर्क था कि उसे देखकर किसी पौराणिक मनुज का स्मरण हो आता था। गोल–मटोल, कुछ पुष्ट शरीर वाले धनिया की आकृति भी उसके स्वभाव के अनुरूप थी। विरल भूरी भौंहों की सरल रेखा

और छोटी नाक की कुछ नुकीली नोक उसकी सरलता का भी परिचय देती थी और तेजस्विता का भी। ओठों का दाहिना कोना कुछ ऊपर की ओर खिंची–सा रहता था जिससे उसके मुख पर मुस्कराने का भाव स्थायी हो गया था। रंग की स्वच्छता और त्वचा की चिकनाहट से प्रकट होता था कि कुली जीवन की सारी कठोरता उसने अभी नहीं झेली है। टाट के पुराने पैजामे और जीन के फटे कोट ने उसे पराजित सिपाही की भूमिका दे डाली थी उसके मुख के भाव के साथ विरोधाभास उत्पन्न करती थी।''

(महादेवी वर्मा :पर्वत पुत्र)

यात्रा लेखक की स्मरण शक्ति भी तीव्र होनी चाहिए ताकि दिन भर यात्रा के दौरान जो कुछ वह देखे–जाने, उसे याद करके रात को सोने से पहले डायरी में लिख सके। यह तभी संभव है जब सूक्ष्म अवलोकन की क्षमता के साथ उसकी स्मरण शक्ति भी अच्छी हो। यात्रा लेखक को मिलनसार, विनम्र और तीव्र बुद्धि वाला होना चाहिए। यात्रा के दौरान भिन्न–भिन्न लोगों से मिलने–जुलने का अवसर मिलता है और इनसे वह कई महत्वपूर्ण बातें जान सकता है जिनका उपयोग यात्रा वृत्तांत में किया जा सकता है। लेकिन ऐसी बातें तभी प्राप्त की जा सकती हैं जब अपरिचितों के साथ शीघ्र संबंध बढ़ा सकने, उनसे सार्थक बातचीत करने और अपने सामान्य ज्ञान के आधार पर उनसे महत्वपूर्ण जानकारी हासिल करने की क्षमता हो।

यात्रा लेखक को साहसी और जोखिम में न घबराने वाला भी होना चाहिए। उसे कठिन परिस्थितियों में भी अपनी यात्रा अनवरत जारी रख सकने वाला होना चाहिए। इस तरह की कुछ योग्यताओं के बिना बेहतर यात्रा लेखन करना संभव नहीं है।

6.3 यात्रा–स्थल का चयन

यात्रा के लिए वैसे तो सभी जगहें उपयुक्त होती हैं क्योंकि यह लेखक पर निर्भर करता है कि वह अपनी यात्रा को कितना प्रासंगिक और महत्वपूर्ण बनाकर प्रस्तुत करता है। फिर भी यात्रा–स्थल का चयन करते हुए कुछ खास बातों को ध्यान में रखना चाहिए। आप जिनके लिए यात्रा लेखन कर रहे हैं, उन पाठकों की रुचि किन स्थलों में ज्यादा होगी, इस बात को अवश्य दृष्टि में रखना चाहिए। आमतौर पर लोग उन स्थानों के बारे में पढ़ना चाहते हैं जिनकी यात्रा करने की इच्छा तो वे रखते हैं; पर यात्रा करने का अवसर उन्हें अभी तक नहीं मिला है या फिर वे ऐसे यात्रा विवरणों को पढ़ना चाहते हैं जिसमें उन्हें साहसिक अभियानों का रोमांचकारी आनंद मिले। वे उन जगहों का भी विवरण पढ़ना चाहते हैं, जिनकी यात्रा उनके लिए संभव है। साहित्यिक यात्रा वृत्तान्तों से एक अलग तरह का आनंद मिलता है और उनके प्रति भी पाठकों की रुचि होती है। इस प्रकार यात्रा स्थल का चयन कई आधारों पर किया जा सकता है। यात्रा स्थल का चयन करते हुए आप यात्रा की प्रासंगिकता और स्वयं अपनी रुचि और विशेषज्ञता का भी ध्यान रखें ।

6.3.1 रुचि एवं विशेषज्ञता

यात्रा लेखन की ओर उन्हीं को प्रवृत्त होना चाहिए जिन्हें यात्राओं में आनंद आता हो। नयी जगहों में जाना, वहाँ के लोगों, रीति–रिवाजों, परपंराओं, प्रकृति के विविध रूपों आदि में रुचि रखने वाला व्यक्ति एक अच्छा पर्यटक हो सकता है और एक अच्छा पर्यटक ही एक अच्छा यात्रा लेखक बन सकता है। इसके अतिरिक्त यह भी जरूरी है कि यात्रा आप जिस उद्देश्य से प्रेरित होकर कर रहे हैं, उसके लिए आप में पर्याप्त

क्षमता और योग्यता होनी चाहिए। उदाहरण के लिए, आप विज्ञान, पर्यावरण या इतिहास से संबंधित किसी विशेष उददे्श्य से यात्रा कर रहे हैं तो आपमें उसको समझने की योग्यता होनी चाहिए। जैसे, अंडमान में कई आदिवासी जातियाँ उन जातियों की जीवन पद्धति भिन्न तरह की है। लेकिन इस भिन्नता को इस परिप्रेक्ष्य में तभी समझ सकते हैं जब हमें आदिवासी लोगों के रहन–सहन, विचारों का ज्ञान हो। यहां ऐसे ही एक यात्रावृत्त का एक अंश उद्धृत कर रहे हैं। आप स्वयं देखेंगे कि लेखक निम्नलिखित बात इसलिए लिख सका कि उसे इसका पूर्व ज्ञान था–

''तमाम आदिम समाजों का अपना एक विज्ञान और चिकित्सा–तंत्र रहा है, जो हमें भले ही जड़ी–बूटी, झाड़–फूंक और अंधविश्वासों पर आधारित जान पड़े। उसकी पद्धति उनके अपने परिवेश से उपजी हुई होती है और वह अवैज्ञानिक नहीं होता। मसलन, निर्वस्त्र रहने वाले ओंगी मच्छरों और जहरीली मक्खियों से बचने के लिए अपने शरीर पर सफेद मिट्टी का लेप करते हैं, जो उनकी काली त्वचा और तीखी धूप के बीच एक कवच का भी काम करता है। शहद निकालने से पहले वे कुछ खास पत्तियाँ खाते हैं जिससे मक्खियों का डंक बेअसर हो जाता है। बुखार और दर्द से छुटकारा पाने के लिए शरीर पर लाल मिट्टी का लेप किया जाता है।''

(आधुनिक और आदिम समाज – मंगलेश डबराल, जनसत्ता, 6 मई 1990)

इस तरह की बातें पाठकों को कुछ महत्वपूर्ण जानकारियाँ भी देती हैं। इसलिए यह जरूरी है कि लेखक का सामान्य ज्ञान विस्तृत हो, यात्राओं में उसकी गहरी रुचि हो, जिस उद्देश्य से प्रेरित होकर वह यात्रा कर रहा है, उसके अनुभव की उसमें क्षमता हो।

6.3.2 यात्रा की प्रासंगिकता और महत्व

यात्रा लेखन एक ऐसा विषय है जिसके बारे में लोग हमेशा पढ़ने को उत्सुक रहते हैं फिर भी लेखक को यात्रा स्थल चुनते हुए उसके महत्व और प्रासंगिकता का ध्यान रखना चाहिए। पाठक प्रायः अनजानी और अपरिचित जगहों के बारे में पढ़ने के लिए उत्सुक रहते हैं, जैसे यूरोप–अमेरिका की यात्राओं के बारे में बहुत कुछ छप चुका है लेकिन अफ्रीका, एशिया, लातिनी अमेरिका आदि महाद्वीपों के छोटे–छोटे देशों की यात्राओं के बारे में पाठक उत्सुकता से पढ़ेंगे। वहाँ की प्रकृति, लोग, इतिहास, संस्कृति आदि के बारे में अगर कोई संस्मरणात्मक यात्रावृत्त छपता है तो बहुत से लोगों के लिए वह एक नया अनुभव होगा। इसी तरह ऐसे प्रदेशों (जैसे दक्षिण ध्रुव या सहारा का रेगिस्तान) के बारे में पढ़ना भी कम रोमांचक नहीं होता है जहाँ की जलवायु और वातावरण नितांत भिन्न प्रकार के होते हैं। यात्रा लेखन के लिए ऐसे विषय भी लिये जा सकते हैं जो चिरपरिचित स्थलों के नये पक्ष उभार सकें। जैसे, केरल की यात्रा में वहां के जलमार्गों को केंद्र में रखकर वृत्तांत लिखा जा सकता है। प्रसिद्ध कथाकार काशीनाथ सिंह ने अपनी जापान यात्रा का संस्मरण काफी अलग ढंग से लिखा था। औद्योगिक प्रगति और संपन्नता के सर्वपरिचित रूप से बाहर निकालकर जापान की बिल्कुल भिन्न तस्वीर उन्होंने पेश की थी।

''यहाँ से थोड़ी दूर पर एक पार्क है। ओसाका पहुँचने पर हिंदी कथाकार और ओसाका में विजिटिंग प्रोफेसर भाई लक्ष्मीधर मालवीय बोले, 'बंधु'! मैं चाहता था, आप वहाँ से जापान देखें। उस पार्क में हर सुबह दिहाड़ी मजदूरों की भीड़ लगती है। सुबह छह बजे के आसपास वहाँ ठेकेदार आता है। बंधुवर, आपने भारत में कसाइयों

*को बकरे खरीदते हुए देखा होगा। जिस तरह कसाई बकरे की राने, पुट्ठे, सीना, टो कर, दबाकर, उठाकर वजन लेकर गोश्त की कीमत लगाता है। उसी तरह ठेकेदार अपनी जरूरत के मजदूर चुनता है। उसकी पसलियों में उंगली कोंचकर, कंधे ठोककर, हाथ के पंजे और कलाइयां मसल कर ठेकेदार बूढ़े, अधेड़, सुकुमार, साफ–सुथरे तुदियल लोगों को अलग छांटता जाता है और वे काम के लिए घिघियाते हैं, गिड़गिड़ाते है, झगड़ा करते हैं, मरने–मारने पर उतारू हो जाते हैं (**हर जापानी परेशान चुप उदास है**– काशीनाथ सिहं, रविवार, 15–21 अगस्त 1982) इसलिए महत्वपूर्ण यह है कि आप यात्रा के लिए कोई भी जगह चुनें, परंतु यात्रा–वृत्त को मार्मिक, प्रासंगिक और उद्देश्यपूर्ण बनाकर प्रस्तुत करें।''*

बोध प्रश्न 1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1) यात्रा लेखक में कौन–कौन सी योग्यताएँ होनी चाहिए? तीन योग्यताओं का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) यात्रा–स्थल के चयन के कुछ प्रमुख आधार तीन पंक्तियों में बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) यात्रा लेखन को किस प्रकार महत्वपूर्ण बनाया जा सकता है? उत्तर तीन पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

6.4 सामग्री का संकलन

यात्रा लेखन के लिए यह जरूरी है कि आप यात्रा से पूर्व कुछ आवश्यक तैयारी करें और यात्रा के दौरान कुछ आवश्यक चीजें साथ रखें। जहाँ की यात्रा आप करेंगे,

उसके बारे में आपको पहले से आवश्यक अध्ययन कर लेना चाहिए। नोटबुक, डायरी, कैमरा आदि चीजें साथ रखनी चाहिए। इन्हीं के बारे में हम इस भाग में विचार–विमर्श करेंगे।

6.4.1 यात्रा–पूर्व अध्ययन

आपने जो स्थल यात्रा के लिए चुना है उसके बारे में पहले से जानकारी एकत्र कर लेनी चाहिए। उस जगह की भौगोलिक स्थिति, जलवायु, वहाँ का इतिहास, लोगों का रहन–सहन, वेशभूषा, भाषा, रीति–रिवाज, धर्म आदि के बारे में अगर आपने पहले से पढ़ रखा है तो आपको वहाँ की स्थितियों को समझने में काफी मदद मिलेगी। कई बार इस तरह के अध्ययन से उस जगह की एक अच्छी–खासी तस्वीर हमारे दिमाग में पहले से बन जाती है। हम उसी के अनुकूल बातें वहाँ देखने की आशा रखते हैं, लेकिन ऐसा ही हो, यह जरूरी नहीं है। आप नितांत नयी चीजें भी वहाँ पा सकते हैं जिन्हें आप सही परिप्रेक्ष्य में तभी समझ पाएंगे जब आपको उस जगह के बारे में पहले से बहुत–सी बातें मालूम हों एक उदाहरण लें। प्रसिद्ध हिंदी कथाकार स्वर्गीय भीष्म साहनी कुछ वर्ष पूर्व वियतनाम गये। तब वियतनाम ने कड़े संघर्ष के बाद विदेशी हमलावरों से मुक्ति पाई थी। छोटा–सा देश होते हुए भी वियतनाम ने अमेरिका जैसे शक्तिशाली देश को भागने के लिए मजबूर कर दिया था। जब भीष्म साहनी वियतनाम गये तो वहाँ के लोगों की एक तस्वीर पहले से उनके दिमाग में बनी हुई थी। लेकिन जब उन्होंने वहाँ के लोगों को देखा तो वे बिल्कुल भिन्न नजर आए। इससे उन्हें कई नई बातें समझने को मिलीं।

''मैं कुछ ठगा–ठगा सा महसूस करने लगा हूँ। यह वह वियतनाम तो नहीं जिसकी मैंने कल्पना की थी। ख्याल था लोग सैनिकों जैसे चुस्त–दुरुस्त होंगे, जगह–जगह उस लंबे युद्ध के घाव देखने को मिलेंगे, जिसमें देशवासी जूझते रहे हैं, एक तरह की मुस्तैदी और तनाव और कर्मठता देखने को मिलेगी। मुट्ठियाँ भींच कर काम करने वाले लोग मिलेंगे। पर यहाँ तो सब अलसाया–अलसाया–सा है। जैसे हम लोग छुट्टी मनाने के लिए किसी सैरगाह में चले आए हों, कहीं कोई टूटी हुई इमारत नहीं देखी, किसी ने रास्ते भर किसी युद्ध के स्मारक की ओर इशारा नहीं किया। लगता है जैसे वहाँ पर कभी युद्ध हुआ ही नहीं हो।''

(वियतनाम की यात्रा – भीष्म साहनी, साक्षात्कार, जनवरी–फरवरी, 1983)

6.4.2 यात्रा की तैयारी

यात्रा लेखक को यात्रा पर जाने से पूर्व पर्याप्त अध्ययन तो करना ही चाहिए, उस यात्रा के दौरान होने वाले अनुभवों को लिपिबद्ध करने के लिए डायरी भी अवश्य रखनी चाहिए। डायरी में प्रकृति सौंदर्य, भौगोलिक स्थिति, लोगों की भाषा, वेशभूषा, खान–पान, व्यवहार, लोक कलाएँ, क्षेत्र का इतिहास; वर्तमान, आर्थिक, सामाजिक–राजनीतिक दशा, लोगों से बातचीत आदि का विवरण तारीखवार नोट करने चाहिए। ताकि जब यात्रा वृत्तांत लिखने बैठें तो आपके पास पर्याप्त सामग्री हो। यात्रा में किसी तरह की कठिनाई न आए, इसलिए यात्रा मार्ग का नक्शा भी पास में होना चाहिए। यात्रा लेखन का महत्वपूर्ण अंग है – 'छायाचित्र' इसके लिए आपके पास अच्छा कैमरा होना चाहिए जिसका बेहतरीन संचालन करना आना चाहिए। अगर कोई पेशेवर फोटोग्राफर आपका सहयात्री हो तो और भी अच्छा। पहाड़ या ठंडे प्रदेशों के लिए पर्याप्त गर्म कपड़े साथ में हों। आवश्यक दवाएं भी रखें। लेकिन यह अवश्य

ध्यान रखिए कि आपके पास इतना बोझ न हो जाए कि उसे उठाकर चलना मुश्किल हो।

अगर आप किसी ऐसे क्षेत्र की यात्रा कर रहे हों जहाँ की भाषा न जानते हों तो दुभाषिए की सहायता लेनी चाहिए। ये कुछ आवश्यक बातें हैं जो आपको यात्रा आरंभ करने से पूर्व अवश्य ध्यान में रखनी चाहिए।

6.4.3 तथ्यों का संकलन

यात्रा के दौरान आप अपनी डायरी में प्रत्येक दिन का विवरण नोट करें। विवरण नोट करते समय केंद्र में तो अपने उद्देश्य को रखिए, परंतु यह भी ध्यान रखिए कि कोई महत्वपूर्ण बात छूट न जाए। यात्रा के दौरान आपको कई ऐसे अनुभव हो सकते हैं जो बहुत मामूली से लगते हों पर जिनका अर्थ महत्वपूर्ण हो। आमतौर पर अच्छा यात्रा लेखन वही माना जाता है जिसमें उस क्षेत्र के बारे में विविध तरह की सूचनाएँ भी दी गई हों। अंडमान से संबंधित जिस यात्रा वृत्तांत को हमने उद्धृत किया है उसमें लेखक ने अंडमान की भौगोलिक स्थिति, जलवायु, प्राकृतिक सौंदर्य, इतिहास और वहाँ के आदिवासियों की संस्कृति, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक दशा आदि के बारे में भी बहुत सी बातें बतायी हैं। इससे वह वृत्तांत हर दृष्टि से परिपूर्ण हो गया है। ये बातें हम तभी लिख सकते हैं जब हम यात्रा से पूर्व इनके बारे में कुछ अध्ययन कर लें और यात्रा के दौरान प्राप्त जानकारियों को उससे मिलाते रहें।

6.4.4 अन्य सामग्री

यात्रा के दौरान लिए गए छायाचित्रों का अपना महत्व है। यात्रा के दौरान पड़ने वाले खूबसूरत स्थलों के चित्र लेने चाहिए और लोगों के चित्र भी, जिनसे उनके रहन–सहन आदि का पता चल सके। ऐतिहासिक स्मारकों तथा यात्रा लेखन के उद्देश्य पर प्रकाश डालने वाले पक्ष को उभारने वाले चित्र लिये जा सकते हैं। चित्र स्पष्ट और सुंदर हों और ऐसे कोण में खींचे जाएँ जो उस जगह की सुंदरता को बढ़ाने वाले हों। यात्रा लेखन के साथ छायाचित्रों का उपयोग बहुत सोच–समझकर करना चाहिए ताकि यात्रा वृत्तांत की सुंदरता और मूल्यवत्ता दोनों बढ़े। फोटो के अलावा किसी अन्य महत्वपूर्ण दस्तावेज आदि की फोटो प्रतिलिपि भी दी जा सकती है।

6.5 सामग्री का संयोजन और संपादन

यात्रा से पूर्व किये गये अध्ययन और यात्रा के दौरान लिखी गयी टिप्पणियों और अन्य एकत्र की गई सामग्री के आधार पर अपनी यात्रा का वृत्तांत लिखिए। इसके लिए जरूरी है कि आप अपनी सामग्री का ठीक से अध्ययन करें और यात्रा लेखन की एक रूपरेखा बना लें। उसी के अनुसार अपना लेखन आरंभ करें। यात्रा लेखन में केवल तथ्यों का विवरण होगा तो वह प्रभावशाली नहीं बनेगा। इसके लिए जरूरी है कि आप अपने विवरण को रोचक बनाएँ। एक तरीका यह है कि आप बस यह बताते रहें कि हम पहले अमुक जगह गये, फिर वहाँ से दूसरी जगह गये। वहाँ यह यह देखा और इस तरह घूमते–घूमते हमने अपनी यात्रा समाप्त की। यात्रा की ऐसी विवरणिका दिलचस्प नहीं होगी। लोग कुछ ऐसा जानना चाहते हैं जिसमें जीवन की धड़कनें हों, पाठक को ऐसा महसूस हो जैसे वह खुद यात्रा कर रहा है। यात्रा के दौरान जो कुछ भी आपने अनुभव किया उसे कागज पर उतारते हुए स्वयं आपका व्यक्तित्व उसमें

अभिव्यक्त होना चाहिए। यात्रा लेखन में तटस्थता और नीरसता से वर्णन शुष्क हो जाता है। यात्रा के रोचक वर्णन का एक उदाहरण देखिए–

''सुंदरनगर एक प्रशस्त घाटी है। चारों ओर पहाड़ों से घिरी। कई किलोमीटर का यह इलाका अपना ही इलाका लगता है। अपनी ही तरफ जैसे खेत, खलिहान, मकान, मैदान। कुछ फसलें कट चुकी हैं, कुछ कटने को तैयार। कुछ खेत जुत चुके हैं, कुछ जुतने के लिए तैयार। यह मिट्टी की महिमा है। वह जहाँ भी होती है बीज को धारण करती है। जन्म देती है वनस्पतियों को, हरियाली को विकसित करती है। धरित्री है वह अनन्दा है, अन्नपूर्णा है। धरती माँ का यह अन्नपूर्णा रूप शिखरों से ज्यादा खूबसूरत होता है। जैसे स्त्री पुरुष शरीर से। यह मिट्टी जहाँ भी होगी, धूल होगी वहाँ, कीचड़ होगी, गंदगी होगी लेकिन वहीं से फूटेंगे जीवन के अंकुर।''

**(जो बह रही है जिजीविषा की तरह–
विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, साक्षात्कार, जनवरी–मार्च, 1987)**

बोध प्रश्न 2

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1) यात्रा आरंभ करने से पूर्व अध्ययन करने से क्या लाभ हैं? स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) यात्रा के दौरान लेखन में सहायक कौन–कौन सी सामग्री पास में रखनी चाहिए और क्यों?

.....

.....

.....

.....

.....

3) यात्रा लेखन के साथ छायाचित्र देने के लाभ बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6.6 यात्रा लेखन की प्रस्तुति

यात्रा लेखन का उद्देश्य क्या है, इसी से यह तय होगा कि यात्रा लेखन का स्वरूप क्या हो। अगर आप व्यवसायोन्मुख यात्रा लेखन करना चाहते हैं तो आपके लेखन का स्वरूप भिन्न होगा। वहाँ सूचनाओं का महत्व होगा, साथ ही पर्यटकों को आकृष्ट करने वाली बातें केंद्र में रहेंगी। सूचनापरक यात्रा लेखन का उद्देश्य पर्यटन स्थलों के बारे में पाठकों का ज्ञानवर्द्धन करना तथा यात्रा के रोमांच और आनंद में पाठकों को भागीदार बनाना होता है इसलिए उसका लेखन अलग ढंग का होगा। विशिष्ट और साहित्यिक यात्रा लेखन भी अलग–अलग शैलियों में प्रस्तुत होंगे। आइए, इन सब पर विचार करें।

6.6.1 आरंभ

व्यवसायोन्मुख यात्रा लेखन में सूचनाओं का केंद्रीय महत्व होता है लेकिन सूचनाएँ ऐसी होंगी जो पर्यटकों को यात्रा में सहायता करें। यहाँ लेखक एक तरह से गाइड का काम करता है जो आपको पर्यटन स्थल के बारे में रोचक बातें बताकर आपका उत्साह बढ़ाता है। वह कोई नकारात्मक बात नहीं बताता। व्यवसायोन्मुख यात्रा लेखन का उद्देश्य पर्यटकों की सहायता करना होता है और संक्षेप में सारी सामग्री प्रस्तुत करनी होती है। इसीलिए लेखक को आरंभ में ही अपनी बात सीधे ढंग से रख देनी होती है।

सूचनापरक यात्रा लेखन का आरंभ भी सूचनाओं के साथ किया जा सकता है। आमतौर पर इस तरह के यात्रा वृत्तांत पत्र–पत्रिकाओं के लिए लिखे जाते हैं, इनमें आप आरंभ यात्रा की शुरूआत से ही कर सकते हैं –

''मद्रास से करीब डेढ़ सौ किलोमीटर दूर फ्रांसीसी संस्कृति का केंद्र रही पांडिचेरी जाने का एक रास्ता पल्लव साम्राज्य के प्राचीन अवशेषों के किनारे से भी जाता है। समुद्र तट से लगे सर्पिल रास्ते से गुजरते हुए पल्लव साम्राज्य का बंदरगाह और द्रविड़ शैली के मंदिरों की बुनियाद माना जाने वाला 'महाबलिपुरम' यात्रियों के लिए पहला पड़ाव है।''

**(समुद्र उर पर शिल्प का एक नगर अंबरीष कुमार,
जनसत्ता, 2 सिंतबर 1990)**

कभी–कभी यात्रा लेखन का आरंभ पर्यटन स्थल के परिचय से भी किया जाता है और यात्रा के आरंभ का विवरण उसके बाद प्रस्तुत होता है –

''भारत की मुख्य भूमि के दक्षिण पश्चिम कोने पर स्थित छोटे से राज्य केरल में प्राकृतिक सौंदर्य का अद्भुत खजाना। 38,863 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल वाले इस प्रदेश को तीन भागों उच्च भूमि, मध्य भूमि और निचली भूमि में बांटा जा सकता है। इस छोटे से प्रदेश की जनसंख्या 1981 की जनगणना के अनुसार दो करोड़ 84 लाख 680 है। आबादी के घनत्व के हिसाब से यह 655 बैठता है अर्थात् प्रत्येक किलोमीटर पर सर्वाधिक लोग। इतनी आबादी के बावजूद यह प्रांत धरती पर स्वर्ग–सा लगता है, तो सिर्फ इसलिए की प्रकृति ने यहाँ खुले हाथों से सुंदरता लुटाई है।''

**(हरियाली सिर्फ हरियाली केरल का पर्याय है।
निशा श्रीवास्तव, नवभारत टाइम्स, 2 दिसंबर 1990)**

यात्रा के आरंभ के इस उदाहरण में आप देखेंगे कि यात्रा का वर्णन सीधे–सादे ढंग से पेश किया गया है, लेकिन जब साहित्यकार यात्रा वृत्तांत आरंभ करता है तो उसकी प्रस्तुति में कलात्मकता स्वतः ही आ जाती है।

''हवाई जहाज वियतनाम की ओर बढ़ रहा है। खिड़की के बाहर आकाश का असीम प्रसार, नीचे तैरते घुमड़ते बादल। कुछ भी कह पाना कठिन है कि हम कहाँ पर हैं, किस देश की धरती के ऊपर से उड़ते जा रहे हैं।''

(वियतनाम की यात्रा, भीष्म साहनी)

साहित्यकार अपने यात्रा वृत्तांत के लिए कई तरह की शैलियाँ अपनाते हैं। निम्नलिखित यात्रा वृत्तांत को पत्र–शैली में लिखा गया है।

(मनाली, हिमाचल प्रदेश 16.10.1985)

प्रिय चितरंजन जी,

''जिस स्थान से आपको यह चिट्ठी लिख रहा हूँ वह भारत के सुंदरतम पर्वत स्थान में से एक है। हमारे यहाँ 'पहाड़ों की रानी' के नाम से कई स्थान मशहूर हैं जैसे मसूरी या नैनीताल या रानीखेत आदि। लेकिन मनाली को मैं 'पहाड़ों की राजकुमारी' कहना चाहूँगा। हिमालय कन्या 'विपाशा' बह रही है, मेरे सामने। मेरे साथ। नहीं, मुझसे होकर बह रही है... नहीं मुझको छोड़कर बह रही है। धड़कती खिलखिलाती भागी जा रही है समय की तरह... अनंत की ओर..''

(जो बह रही है जिजीविषा की तरह–विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, साक्षात्कार, जनवरी–मार्च 1987)

कभी–कभी यात्रा लेखन का आरंभ किसी लेखक, कलाकार या महान व्यक्ति के उद्धरण से भी किया जाता है और कभी किसी सहयात्री के साथ बातचीत द्वारा। विशिष्ट उद्देश्य से प्रेरित लेखन का आरंभ विषय के परिचय से किया जा सकता है–

''ट्रैकिंग–आज से छह साल पहले तक यह शब्द भारतीय परंपरा और भारतीय परिवेश के लिए बिल्कुल नया था। लेकिन आज परंपरागत पर्यटन (अर्थात् साइट सीईंग) से हटकर साहसिक और रोमांचक किस्म के पयर्टन के प्रति भारतीयों की बढ़ती रुचि ने बड़े ही कम समय में देश के कोने–कोने में ट्रैकिंग को बेहद लोकप्रिय बना दिया है। गर्मियाँ आई नहीं कि हजारों की तादाद में युवक–युवतियाँ, बच्चे तथा बुजुर्ग पीठ पर 'रकसैक' (ट्रैकिंग के लिए सामान ले जाने वाला एक खास थैला) लादकर हजारों फुट ऊँचे पहाड़ों पर कूच करने लगते हैं–ट्रैकिंग के लिए।''

(भुलाए नहीं भुलते वे मधुर रोमांचक क्षण, जगजीत सिंह, नवभारत टाइम्स, 20 अप्रैल 1991)

यात्रा वृत्तांत का आरंभिक अंश आप किसी भी रूप में शुरू कर सकते हैं, पर यह अवश्य ध्यान रखिए कि आपके लेखन का आरंभ सूचनाप्रद और रोचक हो।

6.6.2 मध्य

यात्रा लेखन का आरंभ आप चाहे जिस शैली में करें, उसमें यात्रा के आरंभ का वर्णन जरूर होगा या फिर यात्रा स्थल से संबंधित कोई महत्वपूर्ण जानकारी। केवल

साहित्यिक यात्रा, वृत्तांत में ही आरंभिक अंश भिन्न–भिन्न तरह के होते हैं। लेकिन यात्रा लेखन के मध्य भाग में तो यात्रा के विवरण को ही प्रस्तुत किया जाता है। यह विवरण दो ढंग से प्रस्तुत कर सकते हैं। एक तरीका तो यह है कि आप यात्रा का क्रम से विवरण दें, यानी यात्रा के आरंभ से अंत तक तारीखवार विवरण प्रस्तुत करते जाएँ। आपने यात्रा का आरंभ कैसे किया, फिर कहाँ गये, उसके बाद कहाँ और अंत में यात्रा की समाप्ति कैसे हुई। इस तरीके को आप सामान्य वितरणात्मक ढंग से डायरी या पत्र शैली में भी प्रस्तुत कर सकते है। एक उदाहरण देखिए–

''पहली नवंबर की शाम और जापान की धरती। हवाई अड्डे से कावासाकी के लिए रवाना होते समय श्री शिगेओ आराकि ने कार में कहा, बरे (बड़े) भाई, भारत से जो भी आते हैं, भारतीयों को ढूंढते हैं।.....'

वातानुकूलित कार तेजी से भाग रही है। मैं खिड़कियों से अंधेरे में धरती, पेड़, पहाड़ इमारतें देखने की कोशिश कर रहा हूँ। यह नवंबर की दूसरी तारीख थी। नरीता हवाई अड्डे से 'हीवा प्लाजा होटल' तीन घंटे का रास्ता। सड़क के दोनों ओर दूर–दूर तक कोई आदमी नहीं।

रात भर महिला की बातें मेरे कानों में गूंजती रहीं। एक दिन बाद (4 नवंबर) कॉन्फ्रेंस का उद्घाटन था,

जिसमें मुझे फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ (पाकिस्तान) और न्यूगी वा थियागं ओ (अफ्रीका) को जन संस्कृतियों की सहखोज पर भाषण देना था।''

(हर जापानी परेशान चुप उदास है।

(काशीनाथ सिंह, रविवार, 21 अगस्त 1982)

इससे भिन्न तरीका यह है कि आप पर्यटन स्थल के संबंध में एक–एक पक्ष के बारे में बताते चले जाएँ। जैसे वहाँ के इतिहास, संस्कृति, राजनीति, विकास आदि विवरण प्रस्तुत करें। अंडमान से संबंधित यात्रा वृत्तांत इसी ढंग से लिखा गया है। लेखक ने आरंभ में अंडमान का भौगोलिक विवरण प्रस्तुत किया है, फिर उन द्वीपों का इतिहास, इसके बाद लेखक अंडमान द्वीप समूह के वर्तमान में प्रवेश करता है और वहाँ के लोगों और उनसे जुड़े विभिन्न पक्षों के बारे में रोचक ढंग से बताता चलता है। इन दोनों तरीकों से भिन्न वृत्तांत संस्मरण के रूप में विवरण प्रस्तुत करता है। महादेवी वर्मा का 'पर्वत पुत्र' या निर्मल वर्मा का **'अंग्रेजों की खोज में'** या श्रीकांत वर्मा का **'मानवीय स्वतंत्रता की तलाश'** इसी तरह के यात्रा वृत्तांत हैं।

''अगर मैं लंदन में न आता, उनके साथ एक शहर में न रहता, तो शायद इन सब पहेलियों के बारे में कभी न सोचता शायद इसमें मैं अकेला नहीं हूँ। दूसरे भारतीय प्रवासी भी अपने–अपने ढंग से इसके बारे में सोचते हैं इसका अनुभव कुछ दिन पहले हुआ जब एक भारतीय मित्र ने मुझे बताया कि लंदन आकर उन्होंने सबसे पहला काम जो किया, वह अपने जूते एक अंग्रेज मोची से साफ करवाये थे। उनके लिए यह काफी प्रीतिकर अनुभव था। मैं उनके संतोष और सुख को समझ सकता हूँ, क्योंकि जब तक 'साहिब' मोची उनके जूतों पर पालिश करता रहा, काफी खुले और मुक्त भाव से उनके साथ बातचीत करता रहा। संभव है, मेरे इस मित्र की हरकत के पीछे 'बदला चुकाने' की हास्यास्पद भावना रही हो, किंतु अंग्रेज मोची और हिंदुस्तानी जूते

का दो मिनट का यह संबंध उन दो सौ वर्षों के दफ्तरी संबंध से मुझे कहीं अधिक मानवीय और सहज जान पड़ा, जो अंग्रेजों और भारतवासियों के बीच रहा था।''

(अंग्रेजों की खोज में – निर्मल वर्मा)

यात्रावृत्त के मध्य भाग को आप चाहे जिस शैली में लिखें, परंतु वह हो रोचक और पठनीय। शुष्क सूचनाएँ और रेलवे टाइम टेबल की तरह विवरण यात्रा वृत्तांत को अपठनीय और उबाऊ बना देता है। इससे हमेशा बचना चाहिए।

6.6.3 अंत एवं शीर्षक

यात्रा वृत्तांत के आरंभ की तरह उसका अंतिम भाग भी रोचक होना चाहिए। यात्रा का तारीखवार विवरण दे रहे हैं तो अंतिम भाग में यात्रा की समाप्ति का उल्लेख किया जा सकता है। अंतिम भाग में यात्रा के कुल प्रभाव या यात्रा के अनुभव का निचोड़ या कोई अन्य महत्वपूर्ण बात प्रस्तुत की जा सकती है।

यात्रा के अंतिम चरण में वर्णन के साथ लेखन की समाप्ति

''बहरहाल, स्लाइडिंग करते और सावधानी से बर्फ पर पाँव रखते हुए करीब डेढ़ बजे जब हमने सरपॉस पर कदम रखा, तो मंजिल पा लेने की खुशी में किसी के मुँह से यूरेका (पा लिया) निकला, तो किसी के मुंह से 'वी फॉर विक्टरी' शब्द निकले। सरपॉस पहुँच कर सभी ट्रेकर्स ने एक–दूसरे को बड़ी गर्मजोशी के साथ बधाई दी। किसी के पास मीठी गोलियाँ बची थीं, सो उसने उन्हीं से दूसरों का मुंह मीठा करा दिया। खासकर बंबई से आई बेला तो उस मौके पर बहुत ही भाव विह्वल हो उठी थी क्योंकि उसे खुद यकीन नहीं आ रहा था कि शुरू से ही ट्रैकिंग को कठिन और असंभव मानने के बावजूद वह इतनी ऊँचाई तक कैसे पहुँच गई। वह अंततः पहुँची और वह उसकी हिम्मत, दृढ़ इच्छाशक्ति तथा साथी ट्रैकर्स की सहयोग की भावना के कारण संभव हो पाया था।''

(भुलाए नहीं भूलते वे मधुर रोमांचक क्षण, पूर्वोक्त)

यात्रा के प्रभाव का निचोड़

''आधुनिक मनुष्य की तरह संचय करना और संपत्ति जोड़ना और व्यापार करना उन्होंने नहीं सीखा। तब सवाल उठता है कि सभ्य कौन है? सभ्यता का दावा करने वाला हमारा समाज या प्रकृति के साथ पूरे सामंजस्य से रह रही ये जातियां? पोर्ट ब्लेयर के एक मानवशास्त्री ए. ऑस्टिन एक बुनियादी सवाल उठाते हैं कि सभ्यता क्या है? क्या खेती करना, पशु पालना, अपनी भाषा की लिपि तैयार करना, कपड़े और जूते पहनना ही सभ्यता है? क्या सभ्यता की परिभाषा नये सिरे से नहीं की जानी चाहिए?

(आधुनिक और आदिम समाज

अंडमान पर मंगलेश डबराल का यात्रा वृत्तांत, जनसत्ता, 6 मई 1990)

यात्रा लेखन का शीर्षक यात्रा की तरह ही रोचक होना चाहिए। यात्रा लेखन के शीर्षक बहुत सामान्य किस्म के भी हो सकते हैं। जैसे 'वियतनाम की यात्रा' या 'आधुनिक और आदिम समाज'। ये शीर्षक सूचनात्मक और स्पष्ट है। कुछ सांकेतिक शीर्षक भी दिये जा सकते हैं जैसे 'समुद्र में एक सभ्यता' या 'नीलगिरि की खुशबू में नीला कैनवास' पूरी तरह से प्रभावात्मक शीर्षक भी हो सकते हैं। जैसे 'भुलाए नहीं

भूलते वे मधुर रोमाचंक क्षण' या 'जो बह रही है जिजीविषा की तरह। '**लेखक – साहित्यकार वैचारिक किस्म के शीर्षक** भी देते हैं जैसे 'अंग्रेजों की खोज में' या 'मानवीय स्वतन्त्रता की तलाश' या 'मध्य रात्रि का सूर्य' आदि । शीर्षक जो भी दें वह अर्थपूर्ण और प्रभावशाली हो। बहुत लम्बे शीर्षक उपयुक्त नहीं होते हैं।

6.7 भाषा एवं शैली

जहाँ तक यात्रा लेखन की भाषा का प्रश्न है तो व्यवसायोन्मुख यात्रा लेखन की भाषा अधिक आलंकारिक हो सकती है जबकि सूचनापरक यात्रा लेखन की भाषा वर्णनात्मक। परंतु दोनों में ही सरसता और सहजता अवश्य होनी चाहिए। साहित्यिक यात्रा वृत्तांत में भाषा संबंधी प्रयोग की गुंजाइश अधिक होती है। पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाले यात्रा लेखन की भाषा के कई रूप मिलते हैं। बहुत सामान्य किस्म की वर्णनात्मक भाषा का एक उदाहरण देखिए –

''समुद्र के किनारे तक कैशुरीना के जंगल नजर आते हैं। हालांकि यह जंगल पर्यटन विभाग ने खड़े किये हैं। कैशुरीना के दो–दो पेड़ों के बीच प्लास्टिक के जाली वाले लंबे–लंबे झूले डाले गए हैं जिन पर बच्चों और जोड़ों को हर समय देखा जा सकता है। एक तरफ परंपरागत नाव खड़ी है तो दूसरी तरफ शिव मंदिर या तट मंदिर तक कुकुरमुत्ते की शक्ल में छोटी–छोटी झोपड़ियां बनाई गई हैं।''

इससे भिन्न और अधिक प्रभावशाली भाषा निम्नलिखित उद्धरण में है, यद्यपि यह भी सूचनापरक यात्रा वृत्तांत का अंश है :

''समुद्र स्नान में आपकी दिलचस्पी न हो, तो गीली रेत पर ही बैठिए, समुद्र की लहरों का आनंद लीजिए, लहरें गिनिए और बार–बार बनाइए व तोड़िए रेत के महल । अगर इससे भी दिल भर गया हो, तो आगे तक चहलकदमी करते निकल जाइए। सामने यात्री और बीच समुद्र में एक काली चट्टान है, जिस पर कुछ विदेशी, कुछ भारतीय कपड़े – सुखाते – बतियाते, परिचय लेते–देते मिलेंगे। इधर बांई ओर कुछ विदेशी किनारे रेत पर बैठे शतरंज खेलने में या 'नॉवेल' पढ़ने में तल्लीन दिखाई देंगे।''

आप स्वयं अनुभव करेंगे कि उपर्युक्त दोनों अंशो में से दूसरे अंश की भाषा अधिक प्रभावकारी है। यहाँ वर्णन में लेखक ने पाठकों से संवाद स्थापित करने की कोशिश की है। निर्लिप्त वर्णन की बजाय आत्मीय संवाद के कारण यह अंश अधिक रोचक बन पड़ा है। अगर भाषा के स्तर को इससे भी ऊपर उठाया जाए और उसमें कलात्मकता लाई जा सके तो आपका यात्रा लेखन सर्जनात्मकता से पूर्ण हो जाएगा। पूर्व उद्धृत महादेवी वर्मा, भीष्म साहनी, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, काशीनाथ सिंह, निर्मल वर्मा, मंगलेश डबराल आदि के यात्रा वृत्तांतों के अंशों को पढ़ने से आपको भाषा की ऊँचाई का आभास हो जाएगा। इस स्तर के यात्रा वृत्तांत आवश्यक नहीं कि भावनात्मक या आलंकारिक हों। महत्वपूर्ण बात है वस्तुओं को देखने का उनका नजरिया। वे यात्रा के दौरान होने वाले अनुभवों के आंतरिक अर्थ तक पहुँचते हैं और उसे पाठकों तक भी पहुँचाते हैं। साहित्यकार यात्रा के दौरान निर्जीव इमारतों या प्रकृति के सौंदर्य तक ही अपने को सीमित नहीं रखते, वरन् लोगों के जीवन में भी गहरी दिलचस्पी लेते हैं और उनसे बातचीत द्वारा, उनसे संपर्क बढ़ाकर वे अपनी यात्रा को मनुष्य–मनुष्य के बीच रिश्ते का वाहक बनाते हैं। अपनी भाषा–शक्ति द्वारा वे इस पहलू को भी पाठकों के समक्ष उजागर करते हैं। यात्रा लेखन की भाषा तभी रोचक बनती है जब भाषा यात्रा

को सिनेमा के चित्रों की तरह हमारे सामने पेश कर दे। पढ़ते हुए ऐसा लगे जैसे हम स्वयं यात्रा कर रहे हों और उसका एक–एक दृश्य देख रहे हों। यात्रा लेखन के लिए मुख्य रूप से वर्णनात्मक, संस्मरणात्मक एवं डायरी शैली का प्रयोग किया जाता है। इस इकाई में दिए गए उदाहरणों में आप इन शैलियों का प्रयोग देख चुके है। आप इनमें से कोई भी शैली अपना सकते हैं या कोई दूसरी शैली भी खोज सकते हैं।

बोध प्रश्न 3

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1) यात्रा लेखन के आरंभिक अंश को लिखने की कुछ प्रमुख विधियों का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) यात्रा लेखन के मध्य भाग में विवरण देने की दो प्रमुख विधियों का नामोल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) सूचनात्मक यात्रा वृत्तांत की भाषा में क्या–क्या विशेषताएँ होनी चाहिए?

.....

.....

.....

.....

.....

4) यात्रा लेखन का अंतिम भाग समाप्त करने का सबसे उचित तरीका आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

6.8 सारांश

- इस इकाई में आपने यात्रा लेखन के व्यावहारिक पक्ष का अध्ययन किया है और यह जाना है कि एक अच्छे यात्रा लेखक में क्या–क्या योग्यता होनी चाहिए। आपने जाना कि यात्रा लेखक को अध्ययनशील होना चाहिए, उसमें यात्रा के प्रति गहरी रुचि, सूक्ष्म अवलोकन दृष्टि, अपरिचित लोगों से संपर्क बढ़ाने की क्षमता और तीव्र स्मरण शक्ति होनी चाहिए।

- यात्रा के उद्देश्य, महत्व और अपनी रुचि के अनुरूप ही यात्रा स्थल का चयन करना चाहिए। यात्रा आरंभ करने से पूर्व गंतव्य स्थल और उससे जुड़े क्षेत्र के बारे में पर्याप्त अध्ययन कर लेना चाहिए। यात्रा के दौरान नोट बुक पास में रखनी चाहिए ताकि प्रत्येक दिन का विवरण नोट किया जा सके। साथ में एक अच्छा कैमरा भी रखना चाहिए जिससे यात्रा के खूबसूरत दृश्यों को कैमरे में कैद करके उन्हें यात्रा लेख के साथ प्रस्तुत किया जा सके। यात्रा के दौरान ज्यादा से ज्यादा सूचनाओं को संकलित करना चाहिए और लेखन से पूर्व एक रूपरेखा बना लेनी चाहिए।

- यात्रा लेखन के उद्देश्य के अनुसार शैली अपनाकर यात्रा–वृत का लेखन आरंभ करना चाहिए। आरंभ में यात्रा का उद्देश्य या महत्व प्रस्तुत किया जा सकता है या यात्रा के आरंभ का अनुभव प्रस्तुत किया जा सकता है। मध्य भाग में यात्रा का रोचक वर्णन, तारीखवार प्रस्तुत किया जा सकता है। यात्रा के इस भाग को आज विभिन्न पक्षों, जैसे भौगोलिक स्थिति, प्रकृति, इतिहास आदि के रूप में भी पेश कर सकते हैं। अंतिम भाग में यात्रा की समाप्ति, यात्रा का प्रभाव या यात्रा के अनुभवों का निचोड़ प्रस्तुत करना चाहिए। शीर्षक यात्रा के किसी खास पहलू को उजागर करने या पर्यटन स्थल के सौंदर्य पक्ष को उजागर करने वाला हो सकता है।

- यात्रा लेखन के लिए आज अपने उद्देश्य के अनुसार वर्णनात्मक, संस्मरणात्मक, डायरी, पत्र आदि में से कोई भी शैली अपना सकते हैं। भाषा रोचक, सरस और यात्रा के दृश्यों को चित्र की तरह स्पष्ट उभारने वाली हो। निश्चय ही इस इकाई को पढ़कर आप अपना लेखन कौशल बढ़ा सकेंगे।

अभ्यास

1) हिमालय के किसी क्षेत्र की यात्रा पर लिखने के लिए आप किस विषय को महत्वपूर्ण समझते हैं और क्यों? उत्तर पाँच पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) अपनी शहर की बस यात्रा का कोई रोचक संस्मरण लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) कुल्लू–मनाली (हिमाचल प्रदेश के पर्यटन स्थल) की यात्रा के लिए अपनी तैयारी का विवरण लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

4) इस यात्रा के दौरान आप अपनी डायरी में क्या–क्या बातें नोट करना चाहेंगे?

.....

.....

.....

.....

.....

5) निम्नलिखित यात्रा वृत्तान्तों में क्या फर्क है?

क) कोवलम तट पर पहुँचकर ही पता चलता है कि महानगरीय शहर और तट के बीच कितना बड़ा फर्क है। कहाँ तो सिर्फ 15 किलोमीटर दूर ही त्रिवेंद्रम शहर की भागमभाग की जिंदगी और पसीना निकाल देने वाली चिलचिलाती धूप और कहाँ नीले पानी, नर्म मुलायम रेत, शीतल छाया और हवा वाला यह तट। कहीं सात समुद्र पार से इस एक समुद्र तट के नर्म, मुलायम रेत पर धूप स्नान का आनंद लेते विदेशी सैलानी नजर आएंगे, तो कहीं कुछ समुद्र की गिरती–उठती तेज लहरों के बीच समुद्र स्नान करते हुए दिखाई देंगे और दूर कहीं रोमांचक पर्यटन के शौकीन रंग–बिरंगी पाल नौका के साथ समुद्र के थपेड़ों से टक्कर लेते हुए दिखेंगे।

ख) हनुमान चट्टी के पाँच–छह मील की जो दुर्गम और विकट चढ़ाई आरंभ हुई थी, उसका अंत एक ओर नर और दूसरी ओर नारायण नाम के पर्वतों तथा उनकी असंख्य श्रेणियों से घिरी हुई समतल भूमि में हुआ। श्वेत कमल की पंखुड़ियों के समान लगने वाले पर्वतों के बीच में निरंतर कल–कल नादिनी अलकनंदा के तीर पर बसी हुई वह पुरी हिमालय के हृदय में इच्छा के समान जान पड़ी।

वृक्ष, फूल और पत्तों का कहीं चिह्न भी नहीं था। जहाँ तक दृष्टि जाती थी। निस्पंद समाधि में मग्न तपस्विनी जैसी आडंबरहीन सूनी पृथ्वी ही दिखाई देती थी और उतने ही निश्चल तथा उज्ज्वल हिमालय के शिखर ऐसे लगते है मानो जैसे शरद् पूर्णिमा की रात्रि में पहरा देते–देते चांदनी समेत जम कर जड़ हो गये हों।

6) उपर्युक्त दोनों अंशों की भाषा–शैली की विशेषताओं की तुलना कीजिए।

.....

.....

.....

.....

6.9 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) i) सूक्ष्म अवलोकन दृष्टि

ii) अपरिचितों से संपर्क बढ़ाने की क्षमता

iii) तीव्र रमण शक्ति

2) i) विशिष्ट उद्देश्य, जैसे ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, पर्यावरणीय अध्ययन

ii) साहसिक एवं रोमांचकारी यात्रा के लिए

iii) प्राकृतिक सौंदर्य के लिए

iv) गर्मियों की छुट्टी आदि बिताने के लिए

v) ऐतिहासिक स्मारकों को देखने के लिए .

3) यात्रा लेखन का वर्णन इस ढंग से करना चाहिए कि पाठकों का पर्यटन स्थल के बारे में ज्ञान बढ़े। उनकी सौंदर्य दृष्टि का विकास हो, उन्हें यात्रा जैसा आनंद मिले और रोमांच का अनुभव हो।

बोध प्रश्न –2

1) देखिए उपभाग 6.4.1

2) नोट बुक एवं कैमरा अवश्य पास में रखना चाहिए। इनके अतिरिक्त यात्रा स्थल की जलवायु के अनुरूप सामान रखना चाहिए। बहुत अधिक बोझ यात्रा के लिए अच्छा नहीं है। कुछ जरूरी दवाएं भी पास में होनी चाहिए। अपरिचित भाषा–क्षेत्र में दुभाषिया भी साथ में होना चाहिए।

3) i) इससे यात्रा लेख का महत्व बढ़ जाता है।

ii) लोग यात्रा स्थल के सौंदर्य का अनुमान लगा सकते हैं।

iii) लोगों की वेशभूषा, कला आदि का भी परिचय मिलता है।

बोध प्रश्न 3

1) देखिए उपभाग 6.6.1

2) देखिए उपभाग 6.6.2

3) देखिए भाग 6.7

4) सूचनापरक यात्रा लेखन में यात्रा से प्राप्त उपलब्धि या अनुभव का निचोड़ प्रस्तुत करना उत्तम तरीका है।

अभ्यास

1) हिमालय की यात्रा प्राकृतिक सौंदर्य या पर्यावरणीय दृष्टि से की जा सकती है। इन दोनों उद्देश्यों को आपस में जोड़ा भी जा सकता है। पेड़ों के बड़े पैमाने पर कट जाने से हिमालय के सौंदर्य पर बुरा असर पड़ा है। जलवायु में भी तब्दीली आई है। इन बातों को केंद्र में रखकर अच्छा यात्रा वृत्तांत लिखा जा सकता है।

2) अगर आप दिल्ली, मुंबई, कलकत्ता या अन्य किसी बड़े शहर के रहने वाले हैं तो स्थानीय बस सेवा की कठिनाइयों से अवश्य परिचित होंगे। भीड–भाड़, धक्कम–धक्का घंटों इंतजार, बस की दुर्दशा आदि को ध्यान में रखकर आप एक छोटा यात्रावृत्त लिख सकते हैं। इसके लिए आप अपनी कल्पना शक्ति का भी उपयोग कीजिए।

3) यात्रा की सामान्य तैयारी के अतिरिक्त पहाड़ी यात्रा के लिए आवश्यक सामान साथ रखना चाहिए। लेकिन अधिक बोझ पहाड़ की यात्रा में परेशानी का कारण बन जाता है।

4) i) प्राकृतिक सौंदर्य और उसमें आए परिवर्तन

   ii) जलवायु और उससे आये परिवर्तन

   iii) ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

   iv) स्थानीय संस्कृति और लोगों का व्यवहार

   v) आर्थिक दशा और विकास

   vi) राजनीति, शिक्षा आदि अन्य महत्वपूर्ण पक्ष

5) क) सूचनापरक वर्णनात्मक यात्रा लेखन

   ख) साहित्यिक यात्रा लेखन

   क्यों का विश्लेषण स्वयं करने का प्रयास कीजिए।

6) i) वर्णनात्मक शैली–भाषा सरल, वर्णनात्मक परंतु प्रभावशाली।

   ii) संस्मरणात्मक शैली–भाषा भावनात्मक और साहित्यिक ऊंचाई लिए ।

इकाई 7 सामाजिक और सांस्कृतिक फीचर लेखनः विषय का चयन और प्रस्तुति

इकाई की रूपरेखा

7.0 उद्देश्य

7.1 प्रस्तावना

7.2 सामाजिक फीचर से तात्पर्य

7.3 सामाजिक फीचर के लिए विषय का चयन

- 7.3.1 सामाजिक परंपराओं से संबंधित
- 7.3.2 सामाजिक समस्याओं से संबंधित
- 7.3.3 महिलाओं, बच्चों, बुजुर्गों की समस्याओं से संबंधित
- 7.3.4 सांप्रदायिक सौहार्द से संबंधित
- 7.3.5 सामाजिक विकास के लिए चल रहे प्रयासों से संबंधित

7.4 सामाजिक फीचर का उद्देश्य

7.5 सामाजिक फीचर की प्रस्तुति और भाषा–शैली

7.6 सांस्कृतिक फीचर से तात्पर्य

7.7 सांस्कृतिक फीचर के लिए विषय चयन

- 7.7.1 संगीत
- 7.7.2 नृत्य
- 7.7.3 अभिनय
- 7.7.4 चित्रकला
- 7.7.5 साहित्य
- 7.7.6 फैशन और रहन–सहन

7.8 सांस्कृतिक फीचर के उद्देश्य

7.9 सांस्कृतिक फीचर की प्रस्तुति और भाषा–शैली

7.10 सारांश

7.11 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

7.0 उद्देश्य

यह इस पाठ्यक्रम की सातवीं इकाई है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- सामाजिक और सांस्कृतिक फीचर का आशय स्पष्ट कर सकेंगी/सकेंगे;
- सामाजिक फीचर लेखन के उद्देश्यों को रेखांकित कर सकेंगी/सकेंगे;
- सामाजिक और सांस्कृतिक फीचर के प्रकार बता सकेंगी/सकेंगे;

- सामाजिक और सांस्कृतिक फीचर के लिए विषय के चुनाव और प्रस्तुति का तरीका सीख सकेंगी/सकेंगे;
- सामाजिक और सांस्कृतिक फीचर लेखन संबंधी आवश्यक सामग्री का संकलन और उसके स्रोतों का पता लगा सकेंगी/सकेंगे;
- सामाजिक और सांस्कृतिक फीचर लेखन में भाषा संबंधी सावधानियां बरत सकेंगी/सकेंगे।

7.1 प्रस्तावना

जैसे–जैसे संचार माध्यमों का विस्तार हुआ है, लोगों में सामाजिक, सांस्कृतिक मुद्दों और मानवीय अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ी है। लोग समझने लगे हैं कि सामाजिक सांस्कृतिक विकास के प्रति सरकार और विभिन्न संस्थानों के क्या कर्त्तव्य हैं। यही वजह है कि जिन मसलों पर सरकार ध्यान नहीं दे पाती, उन पर लोग उसका ध्यान आकर्षित करते हैं। आपने देखा होगा कि अखबारों–पत्रिकाओं में पत्र लिखकर और टेलीविजन चैनलों के माध्यम से अपने जन प्रतिनिधियों से सीधे सवाल पूछ कर लोग बिजली, पानी, सड़क, स्वास्थ्य, शिक्षा, साफ–सफाई, महिलाओं, बच्चों आदि की समस्याओं से संबंधित मसलों पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। पत्र–पत्रिकाएं और टेलीविजन चैनल इन मुद्दों पर फीचर और समाचार तो प्रकाशित–प्रसारित करते रहते हैं ताकि लोगों में जागरूकता पैदा हो साथ ही वे लोगों को इस बात के लिए भी प्रोत्साहित करते हैं कि वे अपनी समस्याओं के बारे में उन्हें बताएं और उन पर सवाल उठाने में सहभागिता निभाएं।

इस तरह संचार माध्यम और आम लोग एक दूसरे के साथ जुड़ रहे हैं। ऐसे में सामाजिक मसलों पर फीचर लेखन का क्षेत्र भी काफी व्यापक हुआ है। समाज का शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र है जो मीडिया की नजर से बचा हो। चाहे वह बाल विवाह का मसला हो, दहेज की समस्या हो, झाड़–फूंक, टोने–टोटके के जरिए तांत्रिकों –बाबाओं की धोखाधड़ी या चुड़ैल या सती घोषित करके महिलाओं को मार डालने की घटना हो, पंचायतों द्वारा अव्यावहारिक और रूढ़िवादी फैसले थोपने का मामला हो, सरकार की लापरवाही के कारण संक्रामक रोगों के फैलने, स्कूलों की बदहाली, महिलाओं–बच्चों के लिए चलाई जा रही योजनाओं के कारगर न हो पाने का मसला हो, अखबार और पत्रिकाएं तो सवाल खड़े करती ही हैं, लोग भी इन पर अपने विचार खुल कर प्रकट करते हैं।

इसी तरह, ऐतिहासिक धरोहरों की उपेक्षा, लोक संस्कृति की परंपराओं के लुप्त होते जाने, मंचीय कलाओं, कलाकारों–लेखकों को समुचित आदर–प्रोत्साहन न मिल पाने आदि पर मीडिया और सामान्य लोग अपने विचार प्रकट करते रहते हैं। अगर कोई लोक परंपरा– संगीत, वाद्य, नृत्य, गायन, अभिनय, चित्रकारी, दस्तकारी आदि लुप्त हो रही है और उसे बचाने का प्रयास किया जा रहा है तो उसकी सराहना करनी चाहिए और अगर ऐसा नहीं हो रहा है तो उसकी तरफ ध्यान देने की जरूरत आदि मसलों पर अक्सर लेख, समाचार, फीचर आदि का प्रकाशन होता रहता है। इस तरह पत्रकारिता में सामाजिक सांस्कृतिक विषयों का काफी विस्तार हुआ है। उन पर फीचर लिखना अन्य विषयों की अपेक्षा सरल भी माना जाता है। इन विषयों में अधिकांश लोगों की रुचि होती है । इसलिए इनके प्रकाशन पर भी अधिक बल दिया जाता है।

इस इकाई में हम सामाजिक–सांस्कृतिक विषयों पर फीचर लेखन के विभिन्न पक्षों के बारे में विस्तार से जानकारी हासिल करेंगे।

7.2 सामाजिक फीचर से तात्पर्य

समाज में रहने वाले व्यक्तियों, समुदाय, जाति या वर्गों से संबंधित समस्याओं पर लिखा गया कोई भी फीचर सामाजिक फीचर कहलाएगा। मगर पिछले कुछ समय से समाज में तेजी से हो रहे बदलावों के कारण पत्रकारिता जगत में प्रकाशन–प्रसारण की सुविधा के लिहाज से विषयों को अलग–अलग क्षेत्रों में विभाजित कर लिया गया है। जैसे खेल, आर्थिक मुद्दे, वैज्ञानिक उपलब्धियां, रहन–सहन फैशन आदि। फिर भी समाज का काफी बड़ा क्षेत्र और उससे जुड़ी समस्याएं सामाजिक फीचर की दृष्टि से मौजूद हैं।

तमाम वैज्ञानिक उपलब्धियों, आर्थिक और शैक्षिक विकास के चलते हमने भले ही काफी तरक्की कर ली हो, हमारा जीवन पहले से काफी सुविधा–संपन्न हो चुका हो, दुनिया की सूचनाएं आसानी से प्राप्त हो जाती हों, दूसरे देशों की जीवन शैली अपनाने के मामले में हम उदार साबित हो रहे हों, लेकिन हमारे विशाल समाज का काफी बड़ा तबका अब भी अनेक प्रकार की रूढ़ियों–अंधविश्वासों और सामंती परंपराओं से जकड़ा हुआ है। छुआछूत, सांप्रदायिक वैमनस्यता किसी न किसी रूप में बनी हुई है। हमारे देश की करीब आधी आबादी ठीक से पढ़ना–लिखना नहीं जानती। आर्थिक रूप से कमजोर तबके के अनेक बच्चों को स्कूल जाने की बजाय पेट भरने के लिए बाल मजदूरी या बंधुआ मजदूरी करनी पड़ती है। कई समाजों में गरीबी के कारण अपने बच्चे बेचने की घटनाएं भी सामने आ चुकी हैं।

हालांकि सरकार ने गरीब और अभावों में जी रहे लोगों के लिए रोजगार और जीवन व्यापन योजनाएं लागू की हैं, लेकिन प्रशासन की लापरवाही या अनदेखी के कारण वे सफल नहीं हो पा रही हैं। लड़कियों की शिक्षा और उनके स्वास्थ्य के मामले में पढ़े लिखे समाज में भी पुराना नजरिया मौजूद है। बाल विवाह, दहेज, तलाक, बलात्कार चारित्रिक लांछन और महत्ता उत्पीड़न के मामले अक्सर उजागर होते रहते हैं। दूरदराज के गांवों में सड़क, बिजली, स्वास्थ्य, शिक्षा जैसी बुनियादी सुविधाओं का अभाव होने के कारण महिलाओं को अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

लेकिन तमाम परेशानियों, असुविधाओं, सामंती परंपराओं के बावजूद देश के विभिन्न हिस्सों में लोगों ने पारंपरिक स्रोतों को पुनर्जीवित कर न सिर्फ रोजगार के नए अवसर तलाशे हैं, बल्कि दूसरों के लिए मिसाल भी कायम की है। हालांकि अब भी देश के कई पिछड़े इलाकों में जातीय पंचायतें रूढ़ियों में जकड़ी होने के कारण गैरकानूनी और असंवैधानिक फैसले करती देखी जाती हैं, मगर अनेक निर्वाचित पंचायतों ने लोगों को एकजुट कर नारी सशक्तीकरण, शिक्षा, गरीबी उन्मूलन, बाल–विवाह और दहेज रोकने, फिजूलखर्ची पर पाबंदी लगाने, सड़क, बिजली, पानी जैसी बुनियादी सुविधाएं जुटाने में सराहनीय काम किए हैं। कई इलाकों में लोगों ने बिना किसी सरकारी मदद के, आपसी सहयोग से वर्षों से सूख चुकी बावड़ियों, कुओं, तालाबों आदि को पुनर्जीवित कर अपने लिए पीने और सिंचाई के पानी का बंदोबस्त किया है और पेड़–पौधों, वन्य और जलीय जीवों की लुप्त होती प्रजातियों को बचाया है।

कई पंचायतों ने आपसी सहमति से विवाह में दहेज और फिजूलखर्ची पर रोक लगाई है। महिलाओं ने आगे बढ़कर नशामुक्ति को पूरी तरह सफल बनया है। अनेक पंचायतों ने गांवों में महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के कार्यक्रम चलाए हैं। गांवों में बिजलीकरण और स्वच्छता अभियान चलाकर आदर्श गांव बनाया है। अंधविश्वास के खिलाफ जनजागरूकता अभियान चलाया है। इसके अलावा सरकारी और गैर सरकारी संगठनों ने ग्रामीण और आदिवासी इलाकों में अनेक विकास कार्यक्रम चलाये हैं, लोगों में समाज के प्रति जिम्मेदारी की भावना विकसित की है और वर्षों से उपेक्षित पड़ी जातियों को समाज में सम्मान दिलाया है।

समाज की ऐसी अनेक समस्याओं और सामाजिक विकास, पिछड़े–दलित लोगों के उत्थान के लिए चल रहे प्रयासों को लेकर सार्थक फीचर लिखे जा सकते हैं।

7.3 सामाजिक फीचर के लिए विषय का चयन

हम पीछे चर्चा कर आए हैं, कि विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखते हुए सामाजिक फीचर के लिए निम्नलिखित क्षेत्रों से संबंधित विषय चुने जा सकते हैं।

- सामाजिक परंपराएं
- बुनियादी समस्याएं
- महिलाओं, बच्चों, बुजुर्गों की समस्याएं
- सांप्रदायिक सौहार्द
- सामाजिक विकास के लिए चल रहे प्रयास

7.3.1 सामाजिक परंपराओं से संबंधित

हमारे समाज में अनेक जाति, वर्ग, समुदाय के लोग रहते हैं। हर प्रांत की अपनी भाषा संस्कृति और रीति–रिवाज हैं। त्योहार और सामाजिक उत्सव मनाने के तरीके हैं। अगर आप दशहरे और रामलीला का उदाहरण लें तो उत्तर और दक्षिण भारत में इसे मनाने के तरीकों में साफ अंतर नजर आएगा। इसी तरह, पहाड़ी और आदिवासी समाजों में इसे अलग तरीके से मनाया जाता है। अलग–अलग इलाकों में शादी–विवाह की अलग–अलग परंपराएं हैं। यहां तक कि मेहमानों के स्वागत के तरीके भी अलग हैं। हर समाज और समुदाय के अपने देवी–देवता और पूजा पद्धतियां हैं। ऋतुओं और सामाजिक जीवन से संबंधित मान्यताएं और पर्व हैं।

कृषि–प्रधान समाज में फसलों, ऋतुओं आदि को लेकर अनेक परंपराएं प्रचलित हैं। दरअसल कृषि संस्कृति में उत्सवों, त्योहारों, व्रतों आदि की काफी समृद्ध परंपरा है। फसल बोने से लेकर काटने और मंड़ाई करने तक कई तरह के उत्सव और त्योहार प्रचलित हैं। इसी तरह आदिवासी समाज में भी काफी उत्सव मनाए जाते हैं। हर समाज के अलग–अलग उत्सव हैं, यहां तक कि महिलाओं के अपने अलग उत्सव हैं। हमारे समाज में ज्यादातर उत्सवों में महिलाओं की सक्रिय भूमिका होती है। अनेक ऐसे उत्सव हैं जिनमें पुरुषों की भागीदारी नहीं होती, उन्हें सिर्फ महिलाएं आयोजित करती और आनंद लेती हैं। यह अलग बात है कि उन उत्सवों–व्रतों का केंद्र ज्यादातर उनके पति और बच्चे होते हैं। सामाजिक परंपराओं पर फीचर लिखते समय उन समाजों का गहराई से अध्ययन जरूरी है, जिन पर आप लिखने जा रहे हैं। इसके लिए वहां के लोगों के बीच रहना और उनकी दिनचर्या एवं बाकी जीवन शैली का अध्ययन करना

पड़ सकता है। उन समाजों में रहने वाले लोगों से बातचीत भी जरूरी है। यह ऐसा फीचर है जिस पर लिखने के लिए सिर्फ पुस्तकों या दूसरे स्रोतों से तथ्य या जानकारी प्राप्त कर लिखना भर काफी नहीं होता। ऐसे फीचर में आत्मीयता और अनुभव का पुट फीचर को प्रामाणिक बनाता है। एक उदाहरण से यह बात स्पष्ट हो जाएगी–

''किसी अभिशाप की तरह छत्तीसगढ़ की मजलूम विधवाओं और परिवारों में एकाकीपन की शिकार हुई महिलाओं को एक कुचक्र के चलते टोनही घोषित कर देने की सदियों से चली आ रही प्रथा पर अब अंकुश लग जाने की उम्मीद की जा रही है।...अमूमन हर हफ्ते–पखवाड़े किसी न किसी गांव में किसी विद्रोही, वाचाल, अर्ध–विक्षिप्त अथवा गांव के मठाधीशों से हर मोर्चे पर लोहा लेने वाली दबंग किंतु टोनही कहे जाने पर प्रताड़ना और लांछन के चलते खंडित व्यक्तित्व जैसे मनोरोगों की चपेट में आ चुकी महिलाओं के साथ ज्यादती की घटनाएं उजागर होती रही हैं।''

(टोनही अब नहीं– रमेश शर्मा, सहारा समय– 30 जुलाई 2005)

7.3.2 सामाजिक समस्याओं से संबंधित

माना जाता है कि गांवों की अपेक्षा शहरों में अधिक सुविधाएं उपलब्ध होती हैं। यह धारणा काफी हद तक सही है, लेकिन शहरों में भी काफी बड़ा समुदाय ऐसा है जो अभावों में जीता है। उसे हर रोज पेट पालने के लिए तरह–तरह से संघर्ष करना पड़ता है। जिन शहरों में कल–कारखाने और रोजगार के अवसर अधिक हैं वहां ऐसे लोगों की संख्या अधिक पाई जाती है। जिन शहरों में इस तरह के अवसर कम हैं वहां नौकरी–पेशा, व्यवसाय या दूसरे कारोबार में लगे लोगों की संख्या अधिक होती है। ग्रामीण क्षेत्रों में खेती से गुजारा न हो पाने या रोजगार के नए अवसर उपलब्ध न हो पाने के कारण पढ़े–लिखे युवकों के अलावा कम पढ़े या अनपढ़ लोगों का भी पलायन महानगरों की तरफ तेजी से बढ़ा है। इस तरह महानगरों में जनसंख्या का तेजी से विस्फोट हुआ है जिससे बुनियादी सुविधाएं जुटा पाना सरकार के लिए चुनौती बन गई है।

सभी के लिए रोजगार के अवसर उपलब्ध न हो पाने के कारण महानगरों में भी अनेक लोग कचरा बीनने, दिहाड़ी मजदूरी करने, सड़कों के किनारे ठेले–खोमचे लगाने, घरों में झाड़ू–बर्तन–पोंछा का काम करने या घरेलू नौकर के रूप में आजीविका चलाने का काम करते हैं। आवास की सुविधा उपलब्ध न होने के कारण ये नालों के किनारे गंदी बस्तियों में रहते हैं। न उन्हें पीने का साफ पानी मिल पाता है और न ही वे अच्छा भोजन कर पाते हैं। ऐसी दिनचर्या और रहन–सहन से अक्सर वे गंभीर बीमारियों की चपेट में आ जाते हैं।

गांवों में हालांकि शहरों की तरह भीड़भाड़ और वाहनों की भागदौड़ अधिक न होने के कारण प्रायः हवा स्वच्छ होती है, कचरे और गंदे नालों के किनारे बस्तियां न होने के कारण शहरों जैसी बीमारियों के खतरे कम होते हैं, लेकिन गांवों के लोग अक्सर भू जल पर आश्रित होते हैं और पिछले कुछ सालों से जमीन के अंदर का जल लगातार प्रदूषित होता गया है। इसलिए जल–जनित बीमारियों के खतरे बने रहते हैं। इसके अलावा शहरों की अपेक्षा गांवों में रोजगार के अवसर कम होने के कारण साधनहीन परिवारों को भूखे रहने और उनके बच्चों में कुपोषण से समस्याएं पैदा होती हैं। हालांकि पहले का ग्रामीण समाज एक–दूसरे को सहयोग करने के लिए जाना जाता

था पर अब वहां भी जातीय और सांप्रदायिक वैमनस्य पैदा हो जाने के कारण सहयोग की भावना कम हो गई है। इससे गरीब परिवारों पर बुरा असर पड़ा है।

इसके अलावा ग्रामीण इलाकों में लोग प्रायः खेती पर आश्रित हैं। मगर सिंचाई के साधन, बिजली की सुविधा और खाद–बीज आदि के लिए समुचित सरकारी सहयोग न मिल पाने के कारण अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। दूर–दूर तक कई गावों के बीच एक स्कूल और अस्पताल बना हुआ है। शिक्षा और स्वास्थ्य संबंधी जनजागरूकता अभियान ठीक से नहीं चलाए जाते अक्सर बच्चे प्राथमिक शिक्षा के बाद स्कूल छोड़ देते हैं। सामान्य बीमारियों की स्थिति में भी लोगों को या तो शहर कस्बे के स्वास्थ्य केंद्रों पर जाना पड़ता है या पारंपरिक चिकित्सा, झाड़–फूंक, टोने–टोटके का सहारा लेना पड़ता है। अब भी अनेक गांव मुख्य सड़क से नहीं जुड़ पाए। जिससे वहां आवागमन के साधन उपलब्ध नहीं हैं। लोगों को काफी दूर तक पैदल चल कर बस या रेलगाड़ी पकड़नी पड़ती है। ऐसे में अनेक बच्चे दूरदराज के स्कूलों में शिक्षा के लिए जाने से हिचकते हैं। गंभीर बीमारी की दशा में अस्पताल पहुंचने से पहले ही रोगी दम तोड़ देते हैं।

हालांकि केंद्र और राज्य सरकारें गांवों के विकास, वहां बुनियादी सुविधाओं को बेहतर बनाने के लिए कई योजनाओं की घोषणाएं करती रहती हैं, मगर पंचायतों या जिला प्रशासन की लापरवाही के चलते वे कामयाब नहीं हो पातीं। सामाजिक फीचर लिखते समय इन मसलों पर ध्यान केंद्रित किया जा सकता है। इनमें से सभी समस्याएं अपने आप में अलग और गंभीर हैं। इनके सभी पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की जा सकती है। हालांकि अखबारों–पत्रिकाओं में इन समस्याओं से संबंधित समाचार अक्सर प्रकाशित होते हैं, फिर भी फीचर के लिए ये विषय लगातार प्रासंगिक बने रहते हैं। सामाजिक समस्याओं पर आधारित फीचर लिखते समय तथ्यों और बुनियादी हकीकत का पता लगाने के लिए संबंधित क्षेत्र का भ्रमण और वहां लोगों से बातचीत करने की भी जरूरत पड़ सकती है।

7.3.3 महिलाओं, बच्चों, बुजुर्गों की समस्याओं से संबंधित

वैज्ञानिक उपलब्धियों, संचार माध्यमों और रहन–सहन के मामले में हमने चाहे जितनी तरक्की कर ली हो, समाज का एक काफी बड़ा तबका महिलाओं, बच्चों और बुजुर्गों के प्रति आधुनिक नजरिया नहीं विकसित कर पाया है। गांवों की बात तो दूर, शहरों में रहने वाले, शिक्षित और सभ्य कहे जाने वाले समाजों में भी अनेक लोग महिलाओं के प्रति संकुचित दृष्टिकोण रखते हैं। उनके पढ़ाई–लिखाई, स्वास्थ्य संबंधी मामलों में लड़कों की अपेक्षा कम ध्यान देते हैं। नौकरी और रोजगार के दूसरे क्षेत्रों में महिलाओं को प्रवेश की इजाजत नहीं देते। गांवों में महिलाएं प्रायः निरक्षर या कम पढ़ी–लिखी होती हैं। इसलिए वे नौकरियों या रोजगार के लिए घरों से बाहर कम ही निकल पाती हैं। वे घरों के भीतर रह कर पारंपरिक, पारिवारिक, पुश्तैनी धंधों में पुरुषों का हाथ बंटाती हैं लेकिन आर्थिक रूप से स्वावलंबी नहीं हो पातीं। चूंकि पारंपरिक भारतीय परिवारों में पुरुषों के भोजन कर लेने के बाद ही महिलाओं के भोजन करने की परंपरा है इसलिए वे आमतौर पर बचाखुचा खाकर अपना पेट भरती हैं। उनकी खूराक पर उचित ध्यान नहीं दिया जाता। पुरुष उनके संतुलित भोजन पर ध्यान नहीं देते। यही वजह है कि हमारे देश की करीब चालीस प्रतिशत महिलाओं में रक्ताल्पता (एनीमिया) की शिकायत है। गर्भावस्था के दौरान संतुलित आहार न मिल पाने के कारण प्रसव के समय आज भी अनेक महिलाओं की मृत्यु हो जाती है। नवजात शिशुओं में कई तरह

की बीमारियों के लक्षण दिखाई देने लगते हैं। यह समस्या कमोबेश शहरों और गांवों– दोनों जगहों पर मौजूद है। महिलाओं के पढ़ी–लिखी न होने के कारण बच्चों के पालन–पोषण पर बुरा असर पड़ता है। जानकारी न होने के कारण वे उनके खान–पान, साफ–सफाई आदि पर जितना ध्यान दिया जाना चाहिए उतना ध्यान नहीं दे पातीं।

आमतौर पर बच्चों की देखभाल की जिम्मेदारी महिलाओं पर होती है। शहरी समाज में पुरुष जरूर बच्चों की देखभाल में महिलाओं का हाथ बंटाते हैं और उनके खान–पान, स्वास्थ्य, पढ़ाई–लिखाई के प्रति सजग रहते हैं, लेकिन ग्रामीण समाज में अब भी ऐसी जागरूकता कम देखने को मिलती है। आर्थिक रूप से कमजोर तबकों में बच्चों की देखभाल के प्रति प्रायः पुरुष और महिलाएं दोनों ही पर्याप्त ध्यान नहीं देते हैं। ऐसे में उपेक्षा के कारण बच्चों में न सिर्फ स्वास्थ्य और शिक्षा संबंधी बल्कि मानसिक विकास संबंधी कमजोरियां भी पैदा होती हैं। अनेक बच्चे हर साल कुपोषण के शिकार हो जाते हैं। हालांकि सरकार ने बाल विकास संबंधी योजनाएं शुरू की हैं। लेकिन कुछ तो योजनाएं संचालित करने वाली एजेंसियों की लापरवाही और कुछ लोगों में उनके प्रति जागरूकता और जानकारी की कमी की वजह से ये कार्यक्रम कामयाब नहीं हो पा रहे हैं।

चिकित्सा संबंधी सुविधाओं और स्वास्थ्य के प्रति लोगों में जागरूकता पैदा होने कारण लोगों की औसत आयु में बढ़ोतरी हुई है। असमय मृत्यु और संक्रामक रोगों से फैलने वाली महामारी से होने वाली मौतों में कुछ कमी आई है। नतीजतन, समाज में बुजुर्गों की संख्या काफी बढ़ी है। मगर संयुक्त परिवारों के टूटने और एकल परिवारों का प्रचलन बढ़ने से बुजुर्गों की देखभाल की समस्याएं भी पैदा हो रही हैं। गांवों में यह समस्या हालांकि शहरों की अपेक्षा कम गंभीर है, लेकिन परिवारों के बंटने के कारण वहां भी बुजुर्ग उपेक्षा के शिकार हैं। शहरों के एकल परिवारों में कामकाजी व्यस्तता के चलते बुजुर्गों की देखभाल ठीक से नहीं हो पाती। यही वजह है कि अपनी संतानों की उपेक्षा के कारण बुजुर्गों ने खुद ही वृद्धाश्रमों में शरण लेनी शुरू कर दी है। हालांकि सरकार ने वृद्धों की देखभाल और उनके अधिकारों की रक्षा के लिए कानून बनाए हैं, कई योजनाएं भी शुरू की हैं, मगर इस समस्या का हल तलाश पाना अब भी कठिन बना हुआ है। यह समस्या न सिर्फ हमारे देश में, बल्कि दुनिया के दूसरे देशों में भी किसी न किसी रूप में मौजूद है।

महिलाओं, बच्चों, बुजुर्गों की समस्याओं, उनके अधिकारों को लेकर लिखे जाने वाले फीचर में अपने समाज के भीतर की समस्याओं को उठाने के साथ–साथ दूसरे समाजों की स्थिति से तुलना भी की जा सकती है। अगर किसी समाज में इन वर्गों के लिए कोई अच्छे कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं तो उनके बारे में भी बताया जा सकता है ताकि दूसरे समाज के लोग उससे प्रेरणा ले सकें। ऐसी समस्याओं को उजागर करने का एक उद्देश्य भी होना चाहिए कि फीचर के जरिए लोगों में जागरूकता पैदा हो।

7.3.4 सांप्रदायिक सौहार्द से संबंधित

हमारे समाज में अनेक जाति, समुदाय, वर्ग के लोग रहते हैं। पहले सभी वर्गों के लोग आपस में मिल कर रहते थे। हालांकि तब छुआछूत जैसी कुरीतियां व्यापक स्तर पर फैली हुई थीं मगर सभी एक–दूसरे के दुख–तकलीफ में सहभागी बनते थे। देश के विभाजन के बाद हिंदू–मुसलमान के झगड़े और सांप्रदायिक सौहार्द की भावना पर इसका काफी बुरा असर पड़ा। सांप्रदायिक वैमनस्यता की भावना अभी खत्म नहीं हुई

है, जिसके चलते समाज में सांप्रदायिक टकराव की स्थिति पैदा हो जाती है। एक समाज के भीतर रहने वाले दो समुदाय के लोगों के आपसी टकराव के चलते देश की अर्थ व्यवस्था और विकास पर बुरा असर पड़ता है। इसलिए सरकारों की लगातार कोशिश होती है कि सांप्रदायिक सौहार्द कायम रखा जा सके। कई गैरसरकारी संगठन लगातार इस प्रयास में जुटे हैं। इसके लिए जनजागरूकता अभियान चलाए जाते रहे हैं।

ऐसे में संचार माध्यमों ने भी अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभाई है। हालांकि कुछ धार्मिक नेताओं की तरफ से विरोध के खतरे होने के कारण सांप्रदायिक सौहार्द के लिए कुछ करना या लिखना काफी नाजुक हो गया है लेकिन फीचर के माध्यम से सांप्रदायिक वैमनस्यता फैलाने वाले मसलों को उजागर करके लोगों को जागरूक बनाने की कोशिश की जा सकती है। यह हमारे समाज की एक बड़ी चुनौती है और इससे निपटना सभी नागरिकों का कर्तव्य है। इससे संबंधित विषयों का चुनाव करते और लिखते समय यह सावधानी बरतने की जरूरत होती है कि उससे किसी एक वर्ग को ठेस न पहुंचे या किसी एक वर्ग के पक्ष में अधिक झुकाव न हो। समस्याओं को उठाते वक्त संतुलित नजरिया होना इसकी प्रमुख शर्त होती है।

7.3.5 सामाजिक विकास के लिए चल रहे प्रयासों से संबंधित

समाज में अशिक्षा, अंधविश्वास, महिलाओं के प्रति संकुचित नजरिया जैसी समस्याओं और कुरीतियों से निजात पाने के लिए सरकारी और गैरसरकारी स्तर पर अनेक सराहनीय प्रयास किए जा रहे हैं। इन प्रयासों के चलते लोगों में जागरूकता आयी है। कई कुरीतियों को त्याग कर लोग वैज्ञानिक नजरिए से चीजों को देखने लगे हैं। कई इलाकों में अंधविश्वास उन्मूलन समितियां काम कर रही हैं जो लोगों को झाड़–फूंक, जादू–टोने, गंडा–तावीज, भूत–चुड़ैल जैसी मान्यताओं से बाहर निकालने की कोशिश में जुटी हैं। लोगों को अपने जाल में फंसा कर ठगने वाले तांत्रिकों–बाबाओं पर कानूनी शिकंजे कसे जाते हैं। मगर अब भी इस तरह की प्रवृत्तियां समाज में व्याप्त हैं। इन्हें पूरी तरह से खत्म करने में मीडिया और लेखकों की सक्रिय भूमिका जरूरी है। ग्रामीण और शहरी विकास के लिए सरकारें अनेक योजनाएं तैयार और लागू करती हैं। केंद्र ने ग्रामीण बिजलीकरण, सिंचाई और स्वास्थ्य से संबंधित कई योजनाओं की घोषणा की है। उन्हें लागू करने में जिला प्रशासन और पंचायतों की भूमिका महत्वपूर्ण होगी। देखा जाता है कि पंचायतों की निष्क्रियता के चलते कई योजनाओं का लाभ गांवों को नहीं मिल पाता और केंद्र से मुहैया कराए गए धन का सही तरीके से उपयोग नहीं हो पाता। इसी तरह शहरों में नगरपालिका और नगर परिषद जैसे स्थानीय निकायों की निष्क्रियता या अनियमितता की वजह से गलियों में बिजली, सड़कों की मरम्मत, साफ–सफाई जैसे जरूरी काम भी नहीं हो पाते। लोगों को इन योजनाओं की जानकारी उपलब्ध कराने, उनके अधिकारों का ज्ञान कराने और उनकी भूमिका को रेखांकित करने में मीडिया और मीडियाकर्मियों की भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है। इसलिए विकास संबंधी कार्यक्रमों से संबंधित विषयों का चुनाव करते समय यह ध्यान रखना जरूरी है कि विकास योजनाओं के बारे में जानकारी उपलब्ध कराने के साथ–साथ आम लोगों की भूमिका और उनके कर्तव्यों को भी रेखांकित किया जाए।

अनेक क्षेत्रों में बुनियादी सुविधाओं के साथ–साथ पर्यावरण संरक्षण, अंधविश्वास उन्मूलन, दहेज, तलाक और महिलाओं की उपेक्षा जैसी कुरीतियों के खिलाफ स्थानीय

स्तर पर बेहतर प्रयास हो रहे हैं। इससे लोगों में जागरूकता भी है। कई क्षेत्रों में महिलाओं और स्थानीय लोगों ने आपसी सहमति से दहेज उन्मूलन, बालिका शिक्षा को अनिवार्य रूप से लागू करने और शराबबंदी जैसे फैसले किए हैं और इससे उन क्षेत्रों में तेजी से सामाजिक परिवर्तन हुआ है। फीचर लेखन के लिए विषय का चुनाव करते समय ऐसे प्रयासों को भी उजागर और रेखांकित करने की जरूरत है ताकि दूसरे लोग इससे प्रेरणा ले सकें।

बोध प्रश्न–1

निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर दीजिए।

1) सामाजिक फीचर से क्या तात्पर्य है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) सामाजिक फीचर कितने प्रकार के हो सकते हैं? सामाजिक विकास संबंधी फीचर लेखन में विषय का चुनाव करते समय किन बातों का ध्यान रखना जरूरी है?

.....

.....

.....

.....

.....

3) सामाजिक समस्याओं से संबंधित फीचर लेखन में मुख्य रूप से किन बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए?

.....

.....

.....

.....

.....

7.4 सामाजिक फीचर का उद्देश्य

जैसा कि आप जानते हैं, पत्रकारिता को जनतंत्र का पांचवां स्तंभ कहा जाता है। इसलिए सामाजिक विकास या इसके लिए चल रहे प्रयासों में मीडिया की भूमिका महत्त्वपूर्ण हो जाती है। सामाजिक फीचर लेखन का उद्देश्य सामाजिक विकृतियों को उजागर करना, वैकल्पिक व्यवस्था सुझाना और इसके लिए चल रहे प्रयासों को उजागर करना होना चाहिए। यह काम अखबार–पत्रिकाएं कर रहे हैं, मगर कई बार

देखने में आता है कि लेखक समस्याओं को रेखांकित कर देना भर अपना कर्तव्य मान लेते हैं। समस्याओं को उजागर करने के साथ–साथ फीचर लेखक का यह कर्तव्य बनता है कि वह दूसरे समाजों से वे उदाहरण ढूंढ कर लाए जिनके चलते सामाजिक परिवर्तन या विकास के रास्ते खुले हैं। सिर्फ सरकारी योजनाओं की कमजोरियों या उनमें बरती जा रही अनियमितताओं को रेखांकित कर देने से फीचर लेखक का सामाजिक समस्याओं को उजागर करने और उन्हें दूर करने के प्रयासों का कर्तव्य पूरा नहीं हो जाता। लोगों में जागरूकता पैदा करने में भी उसे भूमिका निभाने की जरूरत होती है। इसलिए सामाजिक फीचर लेखक से सामाजिक कार्यकर्ता जैसी प्रतिबद्धता, संवेदनशीलता और सतर्कता की अपेक्षा की जाती है। जब तक फीचर लेखक में समाज के प्रति संवेदनशीलता और समस्याओं से जूझ रहे लोगों के प्रति आत्मीयता का भाव नहीं होगा, उसका लेखन महज औपचारिक बन कर रह जाएगा।

7.5 सामाजिक फीचर की प्रस्तुति और भाषा–शैली

जैसा कि हम ऊपर कह आए हैं, सामाजिक फीचर लेखक में सामाजिक कार्यकर्ता की तरह प्रतिबद्धता, संवेदनशीलता और सजगता होनी चाहिए। विषय का चुनाव करते समय उसे खासतौर से यह भी ध्यान रखने की जरूरत होती है कि वह जिस विषय को उठाए उस पर विस्तार और गहराई से अध्ययन करे। इस क्षेत्र में अनेक तरह की समस्याएं हैं और उनका विस्तार काफी है इसलिए एक विषय को दूसरे के साथ न मिलाएं। विषय का चुनाव करते समय सावधानी बरतें कि किस मुद्दे पर बात करना चाहते हैं।

ऐसा नहीं होना चाहिए कि आप किसी ग्रामीण इलाके में अंत्योदय कार्यक्रम पर फीचर लिख रहे हैं और उसमें वहां की बिजली और पानी की समस्या पर भी साथ ही लिखने बैठ जाएं। कुछ लोग समस्या कुछ और उठाते हैं और उस क्षेत्र की सारी समस्याओं को गिनाने बैठ जाते हैं। ऐसे में फीचर अपने मूल विषय से तो भटक ही जाता है, समस्या का पूरी तरह विवेचन नहीं हो पाता और पाठक को पूरा बोध नहीं हो पाता। इस तरह के घालमेल से बचना फीचर लेखक के लिए बहुत जरूरी होता है और यह तभी संभव है जब आप उस विषय की गहराई से पड़ताल करें, आंकड़े जुटाएं और समस्या के विस्तार को जानें। इस समस्या से निपटने की दिशा में दूसरे क्षेत्रों में क्या प्रयास हो रहा है, इसकी भी जानकारी रखें। अधूरी जानकारी या तथ्यों के आधार पर फीचर न लिखें।

सामाजिक फीचर के साथ एक समस्या यह भी होती है कि फीचर लेखक जिस मुद्दे पर संबंधित क्षेत्र के लोगों या विशेषज्ञों से बात करने जाते हैं तो वे प्रायः सरकारी योजनाओं की कमजोरियों और प्रशासन की अनियमितताओं के बारे में बढ़–चढ़ कर बताने लगते हैं। ऐसे में उनकी बातों में आकर या भावना में बह कर फीचर लेखक के अपने मूल उद्देश्य से भटकने का खतरा रहता है। इसलिए फीचर लेखक को एक–पक्षीय नहीं होना चाहिए। इसके लिए योजनाओं का संचालन कर रहे लोगों से भी बातचीत करनी चाहिए और दोनों पक्षों की बातों का तार्किक विश्लेषण करना चाहिए। क्या सही है और क्या होना चाहिए। इस पर विशेष ध्यान होना चाहिए। कई बार सरकारी या स्वयंसेवी संगठनों के आंकड़े भी भ्रम पैदा कर सकते हैं इसलिए आंख बंद करके उन पर भरोसा करने की बजाय तार्किक ढंग से उनका विश्लेषण और अध्ययन करने के बाद ही उन्हें अंतिम रूप से सच मानना चाहिए।

विषय का चुनाव सही हो, उससे संबंधित पर्याप्त सामग्री उपलब्ध हो, समस्याओं से संबंधित व्यापक अध्ययन हो, मगर यदि सही तरीके से उसे प्रस्तुत न किया जाए तो पाठक पर फीचर का प्रभाव नहीं पड़ता। इसलिए फीचर लिखते समय भाषा और शैली का खासतौर से ध्यान रखना चाहिए। चूंकि सामाजिक विषयों के फीचर सभी वर्गों के पाठकों द्वारा पढ़े जाते हैं इसलिए भाषा सहज, सरल और प्रवाहमय होनी चाहिए। शब्द दुरूह और विचार उलझे हुए न हों। ऐसा होने पर बात चाहे जितनी महत्त्वपूर्ण हो, पाठक के सिर के ऊपर से निकल जाती है। इसलिए बातचीत की शैली में उसे प्रस्तुत करने की कोशिश होनी चाहिए। इसके अलावा बातों को क्रम से रखा जाना चाहिए। जिस बात को एक जगह शुरू किया जाए उसे विस्तार से बताते हुए वहीं खत्म कर दिया जाना चाहिए, उसके बाद दूसरी बात को आगे बढ़ाना चाहिए। कई बातों को आपस में मिलाने से विषय को समझने में बाधा पड़ जाती है। इसलिए लिखना शुरू करने से पहले बातों के क्रम को दिमाग में बिठा लेना चाहिए। हो सके तो पहले से अलग कागज पर इसके क्रम के नोट्स तैयार कर लें।

बोध प्रश्न 2

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1) सामाजिक फीचर लेखन का क्या उद्देश्य होना चाहिए? उसे लिखते समय लेखक को किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

.....

.....

.....

.....

.....

2) फीचर की प्रस्तुति में किन बातों की विशेष रूप से ध्यान रखने की जरूरत होती है?

.....

.....

.....

.....

.....

7.6 सांस्कृतिक फीचर से तात्पर्य

जैसा कि ऊपर कहा गया हैं, भारतीय समाज में हर प्रांत की अपनी अलग भाषा है, परंपराएं हैं, उत्सव और त्योहार मनाने के तरीके हैं, रीतिरिवाज और मान्यताएं हैं। इस वजह से अलग–अलग समाजों में अलग–अलग संस्कृतियां हैं। हर प्रांत के अपने नृत्य, गायन शैली, वाद्ययंत्र और उन्हें गाने–बजाने प्रस्तुत करने के तरीके हैं। लोक संस्कृति में तो भिन्नता है ही, शास्त्रीय परंपरा में भी अंतर नजर आता है। आप देखेंगे कि उत्तर भारत की शास्त्रीय गायन–वादन–नृत्य परंपरा दक्षिण भारत की परंपरा से अलग

है। शायद इस बात से भी आप परिचित होंगे कि उत्तर भारत में आमतौर पर भातखंडे की गायन परंपरा चलती है जबकि दक्षिण में कर्नाटक संगीत की परंपरा है। इसी तरह नृत्य में उत्तर में कथक है तो दक्षिण में भरतनाट्यम, कुचिपुड़ि और कथकलि। उड़ीसा में ओडिसी पहले लोक नृत्य हुआ करता था, लेकिन केलुचरण महापात्र ने उसे शास्त्रीय नृत्य के रूप में प्रतिष्ठित किया और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाई। इसी प्रकार हर प्रदेश की अपनी लोक गायन–वादन और नृत्य शैलियां हैं। बंगाल में रवींद्र संगीत है तो असम में छऊ, हिमाचल में स्वांगटेकी तो पंजाब में भंगड़ा जैसे लोक नृत्य हैं। इसके अलावा हर क्षेत्र में अभिनय की अपनी परंपराएं हैं। राष्ट्रीय स्तर पर रंगमंच और अभिनय ने अपनी पहचान तो बनाई ही है, जिसमें निरंतर नए प्रयोग हो रहे हैं।

सांस्कृतिक फीचर से तात्पर्य उन सभी मंचीय कलाओं से है जो लोक या शास्त्रीय रूप में हमारे समाज में मौजूद हैं। हर त्योहार और उत्सव पर सांस्कृतिक आयोजन की परंपरा है। कहीं पुरुष और स्त्रियां दोनों मिल कर इन आयोजनों में भाग लेते हैं तो कहीं अलग अलग। पंजाब में भंगड़ा मुख्य रूप से पुरुषों द्वारा किया जाने वाला नृत्य है तो गिद्दा महिलाओं का नृत्य है। छत्तीसगढ़ में नाचा नाट्यशैली और पंडवानी गायन का बहुत प्रचलन है। देश के हर हिस्से में लोकगीत गायन की परंपरा को पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं ने अधिक सुरक्षित रखा है। शायद ही कोई त्योहार, व्रत या उत्सव ऐसा हो जिस पर महिलाओं के पास गीत न हों।

लोक संस्कृति में गायन और अभिनय की परंपरा ज्यादातर अलिखित रूप में श्रुति परंपरा के रूप में मौजूद है। इसलिए इसमें दूसरी संस्कृतियों के आकर मिल जाने या इनके मूल स्वरूप के लुप्त हो जाने का खतरा अधिक होता है। आपने महसूस किया होगा कि व्यावसायिक संगीत कंपनियों ने कुछ लोक गायकों को राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित करने के नाम पर लोक संगीत के मूल स्वरूप को काफी नुकसान पहुंचाया है। पारंपरिक गीत के स्थान पर लोक गीतों के नाम पर अश्लील और भोंडे गीत प्रचलन में आ गए हैं। इसका नतीजा यह निकला है कि कई लोक वाद्य धीरे–धीरे लुप्त होने के कगार पर हैं। होरी, कजरी, चैती, आल्हा, बिरहा, लोरिकी, नचारी, सोहर, विवाह गीत, गारी जैसे उत्तर भारत के पारंपरिक गीतों में काफी विकृति आ गई है या उनका गायन बंद हो चुका है। धोबी नाच, गोंड़ नाच जैसी अभिनय प्रधान गायन–वादन शैलियां लुप्त हो रही हैं, नौटंकी का प्रचलन लगभग खत्म हो चुका है। इनके स्थान पर ऑर्केस्ट्रा और भोंडे नृत्य–प्रधान गायन की परंपरा तेजी से फैली है।

सांस्कृतिक फीचर का सम्बन्ध इन लुप्त होती सांस्कृतिक परंपराओं को सुरक्षित रखने और प्रोत्साहित करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर हो रहे प्रयास से भी है। इलाहाबाद में हर साल लगने वाला नौटंकी मेला और पश्चिम बंगाल के नदिया जिले में बाउल मेला अपनी लोक संस्कृति को लुप्त होने से बचाने के बेहतर तरीके हैं मगर सरकारी स्तर पर इन्हें प्रोत्साहन न मिलने और लोगों में इनके प्रति रुचि पैदा करने की कोशिश न हो पाने के कारण ऐसे प्रयास बहुत प्रभावी साबित नहीं हो पा रहे हैं। ऐसे प्रयासों को रेखांकित करना भी सांस्कृतिक फीचर लेखक की जिम्मेदारी होनी चाहिए।

7.7 सांस्कृतिक फीचर के लिए विषय का चयन

संस्कृति के अंतर्गत आमतौर पर मंचीय कलाएं आती हैं जिनमें गायन, वादन, नृत्य और अभिनय प्रमुख हैं चाहे वे शास्त्रीय हों या लोक। इसके अलावा साहित्यिक संगोष्ठियों,

कविता या कहानी पाठ, चित्रकला आदि को भी इसी के अंतर्गत रखा जाता है। हमारी फिल्में भी लोकचेतना जगाने और मनोरंजन के साधन के रूप में काफी लोकप्रिय हुई हैं। टेलीविजन का तेजी से प्रसार होने के कारण न सिर्फ ज्यादातर घरों में टेलीविजन सेट आ गए हैं बल्कि टी.वी चैनलों की भरमार हो गई है और चौबीसों घंटे कार्यक्रमों का प्रसारण शुरू हो गया है। इस तरह फिल्में और टेलीविजन भी हमारी संस्कृति का अहम हिस्सा बन गए हैं। सांस्कृतिक फीचर के दायरे में इन्हें भी शामिल किया जाता है। सिनेमा और टेलीविजन कार्यक्रमों पर फीचर की परंपरा काफी समृद्ध हुई है। हर अखबार और पत्रिका इस क्षेत्र से संबंधित खबरों, कलाकारों से साक्षात्कार और कार्यक्रमों की समीक्षाएं प्रमुखता से प्रकाशित करने लगा है। लगभग सभी अखबार फिल्म और टेलीविजन कार्यक्रमों पर सप्ताह में एक दिन अलग से विशेष परिशिष्ट निकालने लगे हैं। बाकी सांस्कृतिक आयोजनों की खबरें या तो दैनिक समाचारों के साथ प्रकाशित की जाती हैं या शहर के लिए अलग से निकाले जाने वाले परिशिष्ट में शामिल कर ली जाती हैं। इस तरह सांस्कृतिक आयोजनों पर फीचर लेखन की गुंजाइश काफी बढ़ी है। सांस्कृतिक फीचर के लिए निम्नलिखित क्षेत्र से सम्बन्धित विषय चुने जा सकते हैं।

- संगीत
- नृत्य
- अभिनय
- चित्रकला
- साहित्य
- फैशन और रहन–सहन

7.7.1 संगीत

संगीत संबंधी फीचर के अंतर्गत गायन और वादन को लिया जा सकता है। इसमें शास्त्रीय, लोक और इन दिनों प्रचलन में पॉप टॉक फ्यूजन संगीत और जैज भी शामिल हैं। संगीत के क्षेत्र में निरंतर नए प्रयोग हो रहे हैं। शास्त्रीय संगीत के जानकार नए रागों की रचनाएं करने के साथ–साथ लोक संगीत को मिलाकर नयी तरह का संगीत रच रहे हैं। हिंदुस्तानी और कर्नाटक के मेल से नए राग और धुनें रचने के प्रयोग भी काफी पहले से हो रहे हैं। अब यह दायरा सिर्फ अपने देश तक सीमित नहीं रह गया है। दूसरे देशों में प्रचलित लोक परंपराओं से भी संगीत उठाकर हिंदुस्तानी संगीत में पिरोने की कोशिश की जा रही है। इसमें जैज और दूसरे पश्चिमी संगीत का काफी अच्छा मेल दिखाई देता है। इन दिनों फ्यूजन संगीत काफी लोकप्रिय हो रहा है।

संगीत को आमतौर पर तीन भागों में बांट कर देखा जाता है– शास्त्रीय, लोक और सुगम संगीत। सुगम संगीत के अंतर्गत भजन, कीर्तन, गजल आदि के गायन आते हैं। पश्चिम बंगाल में गाए जाने वाले रवींद्र संगीत को सुगम और शास्त्रीय दोनों श्रेणियों में रखा जा सकता है। इसके अलावा पिछले कुछ सालों से पॉप संगीत का काफी प्रचलन हुआ है, जिसमें खासतौर से तेज संगीत वाले पंजाबी गीतों की प्रमुखता होती है। इसी तरह धुनों के साथ–साथ वाद्य यंत्रों को लेकर भी नए–नए प्रयोग हो रहे हैं। कई मामलों में लुप्त हो रहे पारंपरिक वाद्य यंत्रों का इस्तेमाल किया जा रहा है तो अनेक स्तरों पर आधुनिक वाद्य यंत्रों का भी प्रयोग हो रहा है।

आधुनिक वाद्य यंत्रों और विदेशी धुनों के इस्तेमाल की बढ़ती प्रवृत्ति के कारण हमारे कई प्राचीन और पारंपरिक वाद्य यंत्र और लोक धुनें लुप्त हो रही हैं। इन्हें सहेज कर रखने के प्रयास बहुत कम दिखाई देते हैं। राजस्थान में कोमल कोठारी ने राजस्थान और बाहर के भी लुप्त होते वाद्य यंत्रों और लोक धुनों को सहेज कर रखने के लिए एक संग्रहालय की स्थापना भी की, न सिर्फ लुप्त होती संगीत परंपरा को उन्होंने सहेजा बल्कि इसके लिए नए गायकों–वादकों को भी तैयार किया और परंपराओं को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया। राजस्थान के लंगा और मांगणियार गायकों को पहचान दिलाने में उनका काफी योगदान है। संगीत पर फीचर के लिए विषय का चुनाव करते समय प्रचलित परंपराओं के बारे में बताने के साथ–साथ लुप्त होती परंपराओं पर भी प्रकाश डालने की कोशिश होनी चाहिए और लोगों में जागरूकता पैदा करने का प्रयास होना चाहिए ताकि वे प्राचीन परंपराओं के प्रति प्रोत्साहित हों और उन्हें आगे बढ़ाने में सहयोग करें।

7.7.2 नृत्य

नृत्य भी संगीत की ही एक विधा है, मगर पिछले काफी समय से इसने अपनी स्वतंत्र पहचान बना ली है। गायन और वादन की तरह नृत्य की भी दो धाराएं हैं– शास्त्रीय और लोक। शास्त्रीय परंपरा में कथक, भरतनाट्यम, कथकलि, कुचिपुड़ी, ओडिसी, मोहिनी अट्टम आदि आते हैं। लोक नृत्य हर प्रांत में अनेक रूपों में प्रचलित हैं। गायन–वादन की तरह नृत्य में भी नित नए प्रयोग हो रहे हैं। एकल नृत्य, समूह नृत्य, नृत्य नाटिका (बैले) आदि प्रचलन में हैं। नृत्य में गायन–वादन के साथ–साथ अभिनय की भी गुंजाइश होती है। हमारे यहां कृष्ण लीला पर आधारित अनेक नर्तकों ने नृत्य संरचनाएं तैयार की हैं। इसी तरह बैले यानी नृत्य नाटिका चूंकि अभिनय प्रधान होती है, इसमें नाटक के तत्त्व काफी मात्रा में पाए जाते हैं। जब से फिल्मों में नृत्य का प्रचलन बढ़ा है, नए प्रयोग काफी होने लगे हैं।

7.7.3 अभिनय

हालांकि अभिनय शब्द मुख्य रूप से नाटकों के लिए प्रयोग होता रहा है, लेकिन फिल्मों और टेलीविज़न धारावाहिकों के प्रचलन से यह व्यापक अर्थ में प्रयुक्त होने लगा है। अभिनय, नायक–नायिका, खलनायक, सहनायक या विदूषक किसी भी रूप में हो सकता है। नाटकों के बारे में अक्सर साहित्यिक कार्यक्रमों के अंतर्गत लिखा–पढ़ा जाता है। जबकि फिल्मों और टेलीविजन धारावाहिकों के बारे में मनोरंजन की विधाओं के अंतर्गत समीक्षा होती है। यही वजह है कि ज्यादातर पत्र–पत्रिकाओं में आज भी जहां फिल्मों के लिए अलग से परिशिष्ट निकाला जाता है, नाटकों की समीक्षाएं साहित्यिक कार्यक्रमों के अंतर्गत ही की जाती है। इस अर्थ में कहा जा सकता है कि आज भी नाटकों को फिल्मों और धारावाहिकों की अपेक्षा गंभीर विधा के रूप में देखा जाता है।

अभिनय संबंधी फीचर के अंतर्गत न सिर्फ अभिनय, बल्कि कथा–वस्तु, मंच–सज्जा, प्रकाश व्यवस्था, ध्वनि संयोजन, पार्श्व संगीत, परिधान, निर्देशन, संवाद शैली आदि पर भी विचार किया जाता है। फिल्मों और धारावाहिकों के संदर्भ में भी ये बातें लागू होती हैं। नाटकों से इतर इन विधाओं में कैमरे का संचालन, स्थान का चुनाव, संपादन कौशल आदि की भी समीक्षा की जाती है। अभिनय संबंधी फीचर लेखन मुख्य रूप से समीक्षात्मक होता है इसलिए इसमें अधिक शोध या आंकड़े एकत्र करने की जरूरत नहीं होती। लेकिन फिल्मों और धारावाहिकों के अभिनेताओं–अभिनेत्रियों की

लोकप्रियता को देखते हुए उनके बारे में दिलचस्प या गपशप जैसी बातें प्रकाशित करने का प्रचलन इधर कुछ समय से काफी तेजी से बढ़ा है। इस तरह के फीचर पाठकों की रुचि को भुनाने की दृष्टि से उपयुक्त हो सकते हैं, चटखारे लेकर इन्हें पढ़ा भी जाता है, लेकिन ऐसे लेखन को गंभीर लेखन की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। इस तरह के चलताऊ फीचर लेखन के कारण ही हिंदी में गंभीर फिल्म समीक्षाएं लिखने की परंपरा विकसित नहीं हो पाई है। अभिनय संबंधी फीचर लेखन करने वाले को ऐसी सस्ती लोकप्रियता से बचना चाहिए।

7.7.4 चित्रकला

पहले माना जाता था कि चित्रकला महज सजावट की वस्तु है, लेकिन धीरे–धीरे यह धारणा टूटी है। साहित्य, संगीत और दूसरी मंचीय कलाओं की तरह चित्रकला और मूर्तिकला भी अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। अन्य विधाओं में शब्दों और भंगिमाओं के जरिए अभिव्यक्ति की जाती है तो चित्रकला में रंगों और रेखाओं के माध्यम से दूसरी कलाओं की तरह ही चित्रकला में भी नित नए प्रयोग हो रहे हैं और हाल के वर्षों में उसका बाजार भी बना है। आधुनिक कलाकृतियां खासी मंहगी बिकने लगी हैं। लोक चित्रकला शैलियों को आधुनिक शैलियों के साथ मिला कर नया रचने की कोशिश भी की जा रही है। यहां तक कि इसमें भित्ति–चित्र, संस्थापन, छापा चित्र, फोटोग्राफी आदि को भी एक–दूसरे के साथ मिला कर नए प्रयोग किए जा रहे हैं। चित्रकला अब रंगों और रेखाओं के अलावा धातु, चमड़ा, कांच, मिट्टी, लकड़ी आदि के जरिए भी बनाई जा रही है। इधर रद्दी की टोकरी में फेंक दी जाने वाली वस्तुओं के इस्तेमाल से भी रचनाएं तैयार करने का प्रचलन बढ़ा है। भवनों के नक्शे तैयार करने और उनकी आंतरिक साजसज्जा में भी चित्रकला की महत्त्वपूर्ण भूमिका हो रही है।

चित्रकला और मूर्ति शिल्प की लोक परंपरा काफी समृद्ध है। प्राचीन काल में अजंता और एलोरा की गुफाओं में बने भित्तिचित्र इसके उत्कृष्ट नमूने हैं। मध्यकाल में भवन निर्माण में चित्रकला की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। लघु चित्र यानी मिनिएचर कला हमारे देश की विशिष्ट कला है, जिसमें हिमाचल और राजस्थान का काफी योगदान है। आज भी गांवों में कला की अनेक लोक शैलियां प्रचलित हैं। कांगड़ा शैली, मधुबनी, कालीघाट आदि चित्रकला की लोक शैलियां हैं। लोक कलाओं में आमतौर पर प्राकृतिक रंगों का इस्तेमाल किया जाता रहा है। लोक और शास्त्रीय चित्रकलाओं को संरक्षित और प्रोत्साहित करने के लिए हर राज्य में सरकारी संस्थाएं और अकादमियां हैं और केंद्रीय स्तर पर ललित कला अकादमी है, जो निरंतर कला प्रदर्शनियां और कलाकारों को प्रोत्साहित करने के लिए कार्यक्रम आयोजित करती रहती हैं। बड़े शहरों में अनेक निजी कला दीर्घाएं हैं जहाँ प्रदर्शनियाँ लगती हैं और कई ऐसे संस्थान हैं जो कलाओं को प्रोत्साहन देते हैं। चित्रकला पर फीचर लिखते समय कला प्रदर्शनियों पर लिखने के साथ–साथ लोक कलाओं के बारे में भी लिखने की काफी संभावना होती है। एक उदाहरण देखें–

''पीढ़ियों से चले आ रहे शिल्पों से जुड़े अधिकांश कलाकार ग्रामीण अंचलों से हैं जो इस बात से बेखबर है कि देश–दुनिया में क्या हो रहा है। 'पारंपरिक कारीगर' ऐसे ही शिल्प और शिल्पियों का संरक्षण करती है। शिल्पियों को नए डिजाइन, नए विषय, नई तकनीक, नई खोज और नए बाजार की जानकारी देती है, उन्हें प्रोत्साहित करती है ताकि उनके कार्य का स्तर सुधरे, समय बचे और श्रम कम हो। संस्था द्वारा कलाकारों

के बच्चों में इन कलाओं के प्रति लगाव और कुशलता पैदा करने के लिए कार्यशालाओं का आयोजन करता है।''

(परंपरा के लिए पहलः निर्मल डोसी, सहारा समय – 1 जून 2005)

7.7.5 साहित्य

अखबारों–पत्रिकाओं में आमतौर पर साहित्यिक गोष्ठियों की खबरें प्रकाशित होती हैं, लेकिन रविवारी या विशेष परिशिष्टों में साहित्यकारों या साहित्यिक विधाओं पर लेख लिखने की परंपरा भी है। साहित्य के लिए अलग से अनेक पत्रिकाएं निकलती हैं। इसलिए अखबारों में साहित्य पर उतना जोर नहीं होता जितना साहित्यिक पत्रिकाओं में होता है। कई अखबार इस आधार पर साहित्य संबंधी फीचर और लेख प्रकाशित करने की परंपरा को बंद कर चुके हैं। फिर भी लिखित साहित्य के साथ–साथ मौखिक साहित्य की परंपरा पर अक्सर उनमें कुछ न कुछ प्रकाशित होता ही रहता है। लिखित साहित्य के अलावा लोक में अब भी मौखिक साहित्य की काफी समृद्ध परंपरा है। लिखित साहित्य की अधिकता और प्रकाशन संबंधी सुविधाओं के कारण लोक और मौखिक की परंपरा धुंधली होती जा रही है। देवेंद्र सत्यार्थी जैसे कुछ लोगों ने गांव–गांवघूम कर लोक और मौखिक साहित्य को लिपिबद्ध करने का काम किया। सरकारी संस्थाएं भी इसके अध्ययन को प्रोत्साहित करती हैं। लेकिन इस काम में अपेक्षित तेजी नहीं दिखाई देती। कई अखबारों में साहित्यिक गोष्ठियों, पुस्तक, लोकप्रिय समारोहों या किसी साहित्याकार के जन्मदिन संबंधी समाचार छपते हैं या बड़े साहित्यिक आयोजन की रिपोर्ट छपती है। साहित्यिक फीचर लेखन लिखते समय लिखित साहित्य के अलावा मौखिक और लोक साहित्य पर भी विशेष रूप से ध्यान दिया जाना चाहिए। यह इसलिए भी जरूरी है कि लोग इसके प्रति जागरूक हों और उसे संरक्षित, सुरक्षित रखने की कोशिश करें।

7.7.6 फैशन और रहन–सहन

संस्कृति के क्षेत्र में इन दिनों फैशन एक महत्त्वपूर्ण विषय के रूप में उभर कर आया है। पत्र–पत्रिकाएं और टेलीविजन चैनल फैशन पर फीचर अधिक देने लगे हैं। हालांकि इसकी एक बड़ी वजह फैशन उद्योग में लगी कंपनियों के विज्ञापन पाने की मंशा भी है। लेकिन फैशन अब हमारे जीवन में काफी गहराई तक प्रवेश कर चुका है और इसे नजरअंदाज कर पाना मुश्किल है। आमतौर पर फैशन का अर्थ पहनावे और रहन–सहन से लगाया जाता है, लेकिन यह इतने तक सीमित नहीं है। कपड़ों की डिजाइन से लेकर महिलाओं के आभूषण, सौंदर्य प्रसाधन, नेल पॉलिश, बैग, कपड़ों और बालों की स्टाईल, चलने का तरीका, सजने–संवरने की शैलियों तक को लेकर अध्ययन हो रहे हैं। फैशन उद्योग में लगी कंपनियां फैशन शो आयोजित कर अपने उत्पाद के प्रचार–प्रसार और लोगों को उनके प्रति आकर्षित करने की कोशिश करती हैं। इसके लिए वे मीडिया का सहारा लेती हैं। सौंदर्य प्रतियोगिताओं, भूमंडलीकरण और फैलते बाजार के इस दौर में फैशन संबंधी फीचर काफी प्रचलन में हैं।

बोध प्रश्न 3

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए।

1) सांस्कृतिक फीचर से आपका क्या तात्पर्य है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) लोक संस्कृति के संरक्षण–संवर्धन में सांस्कृतिक फीचर किस प्रकार सहायक सिद्ध हो सकते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

3) क्या फिल्मों और टेलीविजन धारावाहिकों की लोकप्रियता से नाटकों पर बुरा प्रभाव पड़ा है? अभिनय संबंधी फीचर लेखन में किस प्रकार की सावधानियां बरतने की जरूरत होती है?

.....

.....

.....

.....

.....

7.8 सांस्कृतिक फीचर के उद्देश्य

सांस्कृतिक फीचर लेखन का उद्देश्य नयी संस्कृति के विकास के बारे में जानकारी उपलब्ध कराने, उसके सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं को उजागर करने के साथ–साथ पारंपरिक संस्कृति पर मंडरा रहे खतरों से भी अवगत कराना होता है। फैशन के प्रति अंधानुकरण के चलते समाज में कई प्रकार की विकृतियां पैदा होने लगी हैं। समाज को उनसे अवगत कराना सांस्कृतिक फीचर का मकसद होना चाहिए। संगीत और नाटक–नृत्य जैसी मंचीय कलाओं में हो रहे नए प्रयोगों की जानकारी उपलब्ध कराने के साथ–साथ गायन–वादन–नृत्य–अभिनय आदि की लुप्त होती परंपराओं के बारे में जानकारी देने और उनके संरक्षण–संवर्धन के प्रति लोगों को जागरूक बनाने की कोशिश भी होनी चाहिए। सांस्कृतिक फीचर का अर्थ सिर्फ मंचीय कलाओं या फैशन संबंधी कार्यक्रमों की खबरें देना या समीक्षा करना भर नहीं होता।

इसका मकसद परंपराओं और संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन के लिए लोगों में जागरूकता पैदा करना भी होना चाहिए।

7.9 सांस्कृतिक फीचर की प्रस्तुति और भाषा शैली

सांस्कृतिक फीचर का क्षेत्र विस्तृत है और इसके अंतर्गत आने वाले सभी विषयों की प्रकृति एक दूसरे से भिन्न होती है। इसलिए इन पर फीचर लिखना सामाजिक, आर्थिक, खेल या दूसरे विषयों की अपेक्षा अलग तरह के कौशल की मांग करता है। सांस्कृतिक फीचर लिखने के लिए संस्कृति की गहरी समझ होना जरूरी है। इसे सिर्फ आंकड़े जुटाकर या लोगों से बातचीत करके नहीं लिखा जा सकता। ऐसा करने से फीचर की विश्वसनीयता नहीं बन पायेगी।

संगीत के बारे में फीचर लिखने के लिए जरूरी है कि आपको रागों, तालों और वाद्य यंत्रों आदि की जानकारी हो। अन्यथा इस पर फीचर लिखते समय अर्थ का अनर्थ होने का खतरा बना रहता है। इसी तरह नृत्य और अभिनय पर लिखते समय उसके सभी पक्षों की बारीकियों को जानना जरूरी है। मंच सज्जा, प्रकाश व्यवस्था, ध्वनि संयोजन, तकनीकी प्रयोग, संवाद, निर्देशन, परिधान आदि के बारे में भी समझना जरूरी है। इसी तरह साहित्य पर फीचर लिखने वाले से उम्मीद की जाती है कि उसकी साहित्य में गहरी रुचि हो और उसमें चल रही गतिविधियों की भी जानकारी हो। हालांकि फैशन और सिनेमा पर लिखने का प्रचलन इन दिनों खूब है और ज्यादातर पत्रकारिता में प्रवेश करने वाले युवा इसके प्रति आकर्षित भी होते हैं, लेकिन वे या तो इससे संबंधित विषयों पर शुद्ध मनोरंजनपरक फीचर या गपशप जैसी चीजें लिखते हैं।

सांस्कृतिक फीचर लेखन के प्रति गंभीरता न होने की वजह से अभी तक हिंदी में यह सिर्फ मनोरंजन की चीज बना हुआ है। दूसरी अनेक भाषाओं में सिनेमा, फैशन, संगीत आदि पर गंभीर लेखन की परंपरा काफी पहले शुरू हो गई थी। इसलिए बिना कौशल और क्षेत्र विशेष की बारीकियों की जानकारी के ऐसे फीचर लेखन की कोशिश नहीं करनी चाहिए। दूसरे, सांस्कृतिक लेखन के लिए विषय का चुनाव करते समय लेखन के उद्देश्यों को पहले से निर्धारित कर लेना चाहिए। तभी सार्थक और गंभीर सांस्कृतिक फीचर लेखन संभव हो सकेगा। सांस्कृतिक फीचर की भाषा में एक प्रकार की गरिमा होनी चाहिए। इसका आशय यह नहीं कि तत्सम शब्दों की भरमार कर दी जाए। इसी प्रकार शैली में भी सहज प्रवाह आवश्यक है। इन सबके बिना फीचर प्रभावहीन हो जाता है।

बोध प्रश्न –4

निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर दीजिए ।

1) सांस्कृतिक फीचर का क्या उद्देश्य होना चाहिए?

.....

.....

.....

.....

2) गंभीर और सार्थक सांस्कृतिक फीचर लेखन के लिए क्या–क्या सावधानियां बरतनी आवश्यक है?

.....

.....

.....

.....

.....

7.10 सारांश

- समाज से जुड़ी समस्याओं पर फीचर लेखन सामाजिक फीचर कहलाता है। आर्थिक, वैज्ञानिक, खेल आदि के लिए अलग से फीचर लेखन होता है।
- सामाजिक परंपराओं, बुनियादी समस्याओं, बच्चों, बुजुर्गों, महिलाओं, सामाजिक जागरूकता पैदा करने और विकास से संबंधित प्रयासों आदि को लेकर सामाजिक फीचर लिखे जा सकते हैं।
- सामाजिक फीचर का उद्देश्य सामाजिक समस्याओं को उजागर करने के साथ–साथ लोगों में जागरूकता पैदा करना भी होना चाहिए। सामाजिक फीचर के लिए विषय का चुनाव करते समय पहले से स्पष्ट होना चाहिए कि आप किस समस्या पर लिखने जा रहे हैं और उसका क्या मकसद है। साथ ही विषय को प्रस्तुत करते समय बातों को क्रम से रखना चाहिए, एक दूसरे में गड्डमड्ड नहीं करना चाहिए। भाषा सरल और सहज होनी चाहिए।
- हालांकि संस्कृति समाज का अभिन्न हिस्सा है, लेकिन इसमें गायन–वादन–नृत्य–अभिनय–चित्र और मूर्ति कला आदि से जुड़े मुद्दे सामाजिक समस्याओं से भिन्न होती हैं इसलिए इसे अलग क्षेत्र के रूप में देखा जाना उचित है।
- सांस्कृतिक फीचर के अंतर्गत संगीत, नृत्य, अभिनय, साहित्य, फैशन, रहन–सहन, सिनेमा और टेलीविजन से संबंधित लेखन आता है।
- सांस्कृतिक लेखन के लिए संबंधित क्षेत्र की बारीकियों की जानकारी होना जरूरी है। इसलिए इसमें दूसरे क्षेत्रों की अपेक्षा ज्यादा विशिष्टता अर्जित करनी पड़ती है।
- सांस्कृतिक लेखन के प्रति हिंदी में प्रायः गंभीरता का अभाव है, इसलिए इस क्षेत्र में प्रवेश करने वाले नए लोगों से अपेक्षा की जाती है कि वे विषय के बारे में गंभीरता से जानकारी रखे बिना सतही और अगंभीर लेखन से बचें।

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दें।

1) सामाजिक फीचर से क्या तात्पर्य है। इसे दूसरे क्षेत्रों के विषयों से किस प्रकार अलग माना जा सकता है?

2) सामाजिक फीचर लेखन का क्या उद्देश्य होना चाहिए?

3) सामाजिक फीचर के लेखक से सामाजिक कार्यकर्ता की तरह संवेदनशील और जागरूक होने की अपेक्षा क्यों की जाती है?

4) सांस्कृतिक फीचर का दायरा कहां तक है और इसके लिए विषय का चुनाव करते समय किस तरह की सावधानियां बरतनी जरूरी हैं?

5) सार्थक और गंभीर सांस्कृतिक लेखन की परंपरा विकसित करने के लिए किस तरह के प्रयास किए जाने चाहिए?

7.11 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखिए उपभाग 7.2

2) उपभाग 7.3 के आधार पर उत्तर लिखिए।

3) इकाई को शुरू से अंत तक पढ़कर उत्तर लिखिए।

बोध प्रश्न –2

1) देखिए उपभाग 7.4

2) स्वयं उत्तर लिखिए।

बोध प्रश्न–3

1) देखिए उपभाग 7.6

2) और 3. प्रश्न संख्या के उत्तर इकाई के अध्ययन के पश्चात् अपने विवेक से लिखिए।

बोध प्रश्न–4

1) और 2. के उत्तर इकाई के अध्ययन के पश्चात् अपने विवेक से लिखिए।

अभ्यास में दिए गए प्रश्नों के उत्तर भी स्वयं लिखिए।

इकाई 8 आर्थिक फीचर : विषय का चयन और प्रस्तुति

इकाई की रूपरेखा

8.0 उद्देश्य

8.1 प्रस्तावना

8.2 आर्थिक फीचर का अभिप्राय

8.3 आर्थिक फीचर का महत्व

8.4 आर्थिक फीचर के प्रकार

- 8.4.1 आर्थिक विकास संबंधी फीचर
- 8.4.2 वाणिज्य व्यापार संबंधी फीचर
- 8.4.3 बजट संबंधी फीचर
- 8.4.4 अन्य आर्थिक फीचर

8.5 विषय का चयन

- 8.5.1 रुचि और विशेषज्ञता
- 8.5.2 प्रकाशन की प्रकृति
- 8.5.3 विषय की प्रासंगिकता

8.6 सामग्री का संकलन

- 8.6.1 विषय पर शोध और अध्ययन
- 8.6.2 तथ्यों का संकलन
- 8.6.3 साक्षात्कार
- 8.6.4 अन्य सामग्री

8.7 सामग्री का संयोजन और संपादन

8.8 लेखन की प्रस्तुति

- 8.8.1 आरंभ
- 8.8.2 मध्य
- 8.8.3 अंत और शीर्षक

8.9 भाषा और शैली

8.10 सारांश

8.11 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

8.0 उद्देश्य

समाचार पत्र और फीचर लेखन से संबंधित व्यवहारमूलक पाठ्यक्रम की यह आठवीं इकाई है। इस इकाई में आप आर्थिक और बिजनेस फीचर के बारे में अध्ययन करेंगे और इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- आर्थिक और बिजनेस फीचर का अभिप्राय स्पष्ट कर सकेंगी/सकेंगे;
- आर्थिक और बिजनेस फीचर के लिए उपयुक्त विषय का चयन कर सकेंगी/सकेंगे;
- फीचर लेखन के लिए आवश्यक सामग्री का संकलन कर सकेंगी/सकेंगे;
- संकलित सामग्री पर विचार करके फीचर की रूपरेखा बना सकेंगी/सकेंगे;
- आर्थिक विषय पर फीचर लेखन की विधि समझने के बाद फीचर लेखन कर सकेंगी/सकेंगे;और
- फीचर के लिए उपयुक्त शैली और भाषा का प्रयोग कर सकने की क्षमता बढ़ा सकेंगी/सकेंगे।

8.1 प्रस्तावना

समाचार पत्र और फीचर लेखन पाठ्यक्रम के दूसरे खंड की इस तीसरी इकाई में आप आर्थिक और बिजनेस फीचर का अध्ययन करेंगे। इससे पहले की इकाई में आपने सामाजिक और सांस्कृतिक फीचर लेखन के बारे में अध्ययन किया था। सामाजिक, सांस्कृतिक और खेलकूद आदि की तरह आर्थिक क्षेत्र भी विशिष्ट प्रकार का क्षेत्र है। इस क्षेत्र में लेखन के लिए ऐसे पत्रकारों को आगे बढ़ना चाहिए जो इस विषय की तकनीकी बातों को भली भांति जानते हों। अर्थशास्त्र एक ऐसा विषय है जिसमें खास तरह की प्रवीणता की आवश्यकता है। अर्थ का महत्व सर्वाधिक होने के बावजूद इसके तकनीकी पहलुओं को समझने में आम पाठक को प्रायः कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इन कठिनाइयों के कारण विषय शुष्क और नीरस लगने लगता है। लेकिन रोचक तथ्य यह है कि सभी लोगों को रकम, अर्थ, रुपया अच्छा लगता है। जमीन–जायदाद की चर्चा में उनका मन लगता है, लेकिन आर्थिक विषय पर लिखे गए लेख–फीचर उबाऊ लगते हैं। इसलिए सबसे पहले आर्थिक लेखों में रोचकता पैदा करनी होगी। जो लेखक आर्थिक फीचर लिखना चाहते है उन्हें अपनी शैली में रोचकता पैदा करने की ओर विशेष ध्यान देना होगा। इस इकाई में हमने सबसे पहले आर्थिक फीचर के अर्थ पर विचार किया है। यानी यह कि इसके अंतर्गत किन–किन विषयों को शामिल किया जा सकता है और फीचर के लिए विषय के चयन का आधार क्या होना चाहिए। विषय का चयन करने के बाद सामग्री का संकलन कैसे किया जाए और संकलित सामग्री के आधार पर फीचर की रूपरेखा कैसे बनाई जाए, इस पर भी इकाई में विचार किया गया है।

फीचर के लेखन का आरंभ किस प्रकार करना चाहिए, उसके मध्य में विषय सामग्री किस तरह प्रस्तुत करनी चाहिए और फीचर का अंतिम भाग कैसे लिखना चाहिए, इन सभी पक्षों के बारे में उदाहरण द्वारा समझाया गया है। फीचर का शीर्षक देने पर भी विचार किया गया है। आर्थिक और बिजनेस फीचर की भाषा का विशेष महत्व है।

इसमें कुछ विशेष प्रकार की पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग होता है। आपको उसके बारे में भी बताया जाएगा। इकाई में दिये गये बोध प्रश्नों और अभ्यासों को करने से आप स्वयं फीचर लेखन में कुशलता बढ़ा सकेंगे।

8.2 आर्थिक फीचर का अभिप्राय

किसी देश, समाज या संपूर्ण विश्व की आर्थिक स्थिति के संबंध में लिखा गया फीचर आर्थिक फीचर कहलाता है। राजनीति और अर्थव्यवस्था का घनिष्ठ संबंध है। शासन तंत्र के स्वरूप से आर्थिक नीति की दिशा निर्धारित होती है। समाजवादी शासनतंत्र की अर्थव्यवस्था अलग होगी जबकि पूंजीवादी शासनतंत्र की अर्थव्यवस्था अलग। इसके अलावा राजनीति की स्टीयरिंग सीट पर बैठे राजनेता की सोच से भी अर्थव्यवस्था प्रभावित होती है। जब किसी देश की राजनीतिक स्थिति में परिवर्तन होता है तो उसका असर अर्थव्यवस्था पर भी पड़ता है। इसी प्रकार जब देश में, बाढ़ का प्रकोप होता है और उत्पादन घट जाता है या निर्यात व्यापार कम हो जाता है तब राजनीति भी प्रभावित होती है। राजनीतिक स्थिरता के लिए अर्थव्यवस्था सुदृढ़ होना आवश्यक है। ऐसे कई उदाहरण हैं जब अर्थव्यवस्था डावांडोल होने पर सरकारें गिर गयीं या बदल गयीं। आर्थिक शक्ति ही देश की असली शक्ति है। किसी देश की शक्ति या प्रगति का अंदाजा केवल उसकी फौजी ताकत से नहीं लगाया जा सकता। इसके लिए प्रति व्यक्ति आय और राष्ट्रीय आय के आंकड़ों को देखा जाता है। यह भी देखना होता है कि सबको जीवन की बुनियादी आवश्यकताएं सुलभ हो रही हैं या नहीं। कृषि और औद्योगिक उत्पादन अर्थव्यवस्था के मुख्य आधार स्तंभ हैं। जब इन दोनों क्षेत्रों में स्थिति संतोषजनक होती है तभी देश खुशहाली की ओर बढ़ता है। जिस प्रकार साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है उसी तरह वाणिज्य व्यापार को अर्थव्यवस्था का दर्पण माना जाता है। उत्पादन या औद्योगिक प्रगति के लाभ वाणिज्य व्यवसाय के जरिए ही जनसाधारण तक पहुंचता है।

आप अच्छी तरह समझ गये होंगे कि देश के विकास में अर्थव्यवस्था का कितना महत्व है। अर्थव्यवस्था के विभिन्न पहलुओं की जानकारी समाचार पत्रों में प्रकाशित होने वाले आर्थिक लेखों या आर्थिक फीचर से हो सकती है। यह सही है कि समाचार पत्रों का ध्यान आर्थिक फीचर की ओर जरा देर से गया। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के इस युग में अब हिंदी समाचार पत्र लगातार आर्थिक फीचर प्रकाशित कर रहे हैं। आर्थिक फीचर की परिपाटी अंग्रेजी अखबारों से शुरू हुई थी लेकिन इस फीचर का लाभ आम जनता को नहीं मिल पाता था। बाद में हिंदी के प्रमुख समाचार पत्रों ने धीरे–धीरे आर्थिक फीचर प्रकाशित करना शुरू किया। अब ऐसे फीचर लगातार छप रहे हैं। इन फीचरों में खबरों से जुड़े हुए सवाल और उनके विश्लेषण पाठकों के सामने पेश किये जाते हैं। आर्थिक समाचारों की विवेचना फीचर में की जाती है जिससे पाठकों के सामने खबरों के पीछे और खबरों के आगे के प्रभाव का खुलासा हो सके।

8.3 आर्थिक फीचर का महत्व

आर्थिक समस्याओं पर फीचर के जरिए समाज और देश की सेवा की जा सकती है। सदियों से शोषित, पीड़ित और उपेक्षित तबके की दुर्दशा के चित्रण और बेहतरी के लिए सुझावों के जरिए आप समाज और सरकार की मदद कर सकते हैं। गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले देश के करोड़ों लोगों की कठिनाइयों की ओर ध्यान

आकर्षित करके आप बता सकते हैं कि गरीबी का उन्मूलन कैसे किया जाए। बेरोजगारी, औद्योगिक विकास की राह में आने वाली दिक्कतों आदि पर भी फीचर लिखा जा सकता है। कोई अनिवासी भारतीय जब यहां उद्योग लगाना चाहता है तो उसे किस तरह की लालफीताशाही का सामना करना पड़ता है, यह भी आपके फीचर का विषय हो सकता है। कृषि प्रधान देश होने के बावजूद कृषि के पिछड़ेपन पर फीचर समाज का भला कर सकते हैं।

समाज के निचले तबकों की व्यावहारिक कठिनाइयों के अलावा सरकार की आर्थिक नीतियों की समीक्षा भी आपके फीचर में हो सकती है। इन नीतियों से आम लोगों की आकांक्षाओं, व्यापारियों, उद्योगपतियों की आकांक्षाओं पर फीचर लिखा जा सकता है। 'शेयर बाजार की बजट से उम्मीद' भी आर्थिक फीचर का विषय हो सकता है। बजट के बाद इसका विश्लेषण, आम लोगों पर प्रभाव, उद्योग एवं कृषि पर प्रभाव, कर ढांचे में बदलाव आदि पर अच्छे फीचर लिखे जा सकते हैं। बजट के उपबंधों में जहां कहीं ऐसी बात मिले जिसमें संशोधन की जरूरत हो तो उसका सुझाव फीचर में दिया जा सकता है। बजट एक ऐसा विषय है जिसके इर्द–गिर्द सभी आर्थिक हलचलें होती हैं। इसलिए बजट के साथ जोड़कर शेयर बाजार, विदेशी निवेश, कर ढांचे, कृषि, उद्योग आदि पर भी फीचर किये जा सकते हैं। रेल बजट से भी आम जनता का घनिष्ठ संबंध है। यात्री भाड़े और माल भाड़े की महंगाई आदि को जोड़कर फीचर किया जा सकता है। आर्थिक फीचर के विषय बहुत व्यापक होते हैं। जीवन का हर पहलू अर्थ से जुड़ा है। उपभोक्ता बाजार, सर्राफा आदि में ऑन लाइन फ्यूचर ट्रेडिंग का नया ट्रेंड शुरू हुआ है। इन सभी विषयों पर फीचर लिख कर बताया जा सकता है कि किस तरह से यह व्यवस्था कीमतों को नियंत्रित करने में मदद देती है। आर्थिक फीचर में उपभोक्ताओं को जरूर शामिल किया जाना चाहिए – 'उपभोक्ता राजा है' यह बात आम उपभोक्ता जाने, इसलिए बजट के तमाम मुददे फीचर में बताने चाहिए। उपभोक्ताओं पर ज्यादती को भी प्रकाश में लाया जाना चाहिए। अर्थ–व्यवस्था में जुड़े महकमों में अनियमितताएं और भ्रष्टाचार भी आर्थिक फीचर के अच्छे विषय हो सकते हैं। यह ध्यान रखना चाहिए कि रेल और आम बजट समाज के सभी क्षेत्रों पर व्यापक असर डालते हैं। इसके विभिन्न पहलुओं को व्यावहारिक स्तर पर उजागर करना जरूरी है।

8.4 आर्थिक फीचर के प्रकार

आर्थिक फीचर के महत्व की चर्चा के दौरान हमने उसके क्षेत्र और व्याप्ति की चर्चा की है। कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जिसका संबंध अर्थ से न हो। अर्थ की दुनिया बहुत व्यापक है। इसे ठीक से समझने–समझाने के लिए आर्थिक फीचर को निम्नलिखित प्रकारों में विभाजित कर सकते हैं–

– आर्थिक विकास संबंधी फीचर

– वाणिज्य व्यापार संबंधी फीचर

– बजट संबंधी फीचर

– अन्य आर्थिक फीचर

आइए, इन पर अलग–अलग विचार करें।

8.4.1 आर्थिक विकास संबंधी फीचर

आर्थिक विकास से देश की प्रगति का ग्राफ जुड़ा हुआ है। जिस देश का आर्थिक विकास ठीक से होता है उसे हम प्रगति करने वाले राष्ट्र की श्रेणी में रखते हैं। विकास के मुख्य रूप से दो क्षेत्र हैं – कृषि और उद्योग। कृषि, भोजन संबंधी मूलभूत आवश्यकता को पूरा करती है तो उद्योग जीवन के अन्य क्षेत्रों की जरूरतों को पूरा करने में सहायक होते हैं। भारत अब भी कृषि प्रधान देश है। देश की आय का बहुत बड़ा भाग कृषि उत्पादों से ही प्राप्त होता है। लेकिन कृषि के क्षेत्र की कई समस्याएं भी हैं। किसानों की हालत संतोषजनक नहीं है। कृषि के लिए कर्ज के जाल में फंसने के कारण किसानों की आत्महत्या तक के कई मामले प्रकाश में आते रहते हैं। छोटे किसानों और खेतिहर मजदूरों को भुखमरी तक का सामना करना पड़ता है। उन्हें उपज का उचित मूल्य नहीं मिल पाता। अनाज के सामूहिक भंडारण की पर्याप्त व्यवस्था नहीं है। हमारे देश की खेती का मूल आधार मानसून है। मानसून पर टिकी खेती के कारण कहीं अतिवृष्टि का संकट आता है तो कहीं अनावृष्टि का। बाढ़ और सूखे की चपेट में खेती का बुरा हाल रहता है। मानसून की भविष्यवाणी प्राचीन काल से ही की जाती है। घाघ और भड्डरी जैसे किसान कवियों के देसी फार्मूले से लेकर मौसम विभाग की भविष्यवाणियों तक पर किसान भरोसा करते हैं। लेकिन मौसम विभाग की भविष्यवाणियों की असफलता दर काफी ऊंची है। मौसम विभाग दूसरे विभागों के साथ तालमेल कर बेहतर परिणाम दे सकता है। इस विषय पर प्रकाशित एक फीचर का अंश देखें–

''1988 में जब से मौसम विभाग की भविष्यवाणियों का प्रचलन बढ़ा है, तब से इसकी असफलता की दर भी काफी बढ़ी है। अभी तक असफलता की यह दर 65 फीसदी तक है। हालांकि मौसम विभाग काफी कठिनाई से ''पावर रिग्रेशन' के मानकों के आधार पर कम या ज्यादा सटीक भविष्यवाणी करने का दावा ठोक सकता है क्योंकि इस 'पावर रिग्रेशन'के ही सांख्यिकीय उपकरणों से वह लैस है। लेकिन सन् 2002 के सूखे के दौरान गलत भविष्यवाणियों की वजह से मौसम विभाग की काफी आलोचना हुई थी। आलोचना की वजह रही मौसम विभाग की लचर वैज्ञानिक व्यवस्था और आंकड़े इकट्ठे करने की पद्धति। मानसून की भविष्यवाणी पर हाल ही में संपन्न एक कांफ्रेंस में अमेरिका के जाने–माने मौसम वैज्ञानिक जगदीश शुक्ला ने यह सवाल उठाया कि भारतीय मौसम विभाग भारतीय सांख्यिकी संस्थान की सहायता क्यों नहीं लेता जबकि पूरी दुनिया में ऐसा ही हो रहा है। वाकई यह विचारणीय सवाल है।''

(हिन्दुस्तान, 11 जुलाई 2005)

उद्योग से संबंधित फीचर भी आर्थिक फीचर के अंतर्गत आते हैं। उद्योग–व्यवसाय संबंधी समस्याओं, देश की औद्योगिक प्रगति, विकासशील और विकसित देशों से औद्योगिक संबंध, सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र के उद्योग की समस्याएं, विनिवेश के मुद्दे, कुटीर और लघु उद्योगों की समस्याएं आदि विभिन्न विषयों को इसके अंतर्गत लिया जा सकता है।

कृषि और उद्योग का लक्ष्य उत्पादन बढ़ाने से भी अधिक कुछ होता है। उद्योग को यह देखना होता है कि वह किस प्रकार देश की आवश्यकताओं और साथ ही अन्तरराष्ट्रीय तकनीक के अनुरूप है। विश्व अर्थव्यवस्था के साथ जुड़ जाने के बाद उद्योग का लक्ष्य पहले की तुलना में काफी विशाल हो गया है। उद्योग की दुनिया में कारपोरेट संस्कृति की शुरूआत हो गई है। परम्परागत उद्योग अब अपने ढर्रे को बदल

रहे हैं और विश्व में प्रचलित मानकों को अपना रहे हैं। ये मानक एकाउटिंग के हों या श्रम शक्ति प्रबंधन के; सभी मॉडल विकसित देशों के अनुरूप चल रहे हैं। यहां हम यह जांच सकते हैं कि ये मानक भारतीय परिवेश में कितने सटीक बैठते हैं। इन विषयों पर बहुत से आर्थिक फीचर लिखे जा सकते हैं। विनिवेश और निजीकरण के मुद्दे पर भेल के मामले में सरकार और उसे समर्थन देने वाले वामपंथी दलों के बीच तनातनी हो गयी। वामपंथी मोर्चा नहीं चाहता कि भेल का और विनिवेश हो। इस विषय पर एक फीचर के अंश पर नजर डालें–

''भेल की 33 फीसद हिस्सा पूंजी बेचे जाने का अनुभव बिल्कुल साफ कर देता है कि इस तरह का विनिवेश सिर्फ एक हिस्से तक सीमित नहीं रहता। गौरतलब है कि अब तक बेचे गए भेल के कुल 33 परसेंट शेयरों में से 22.74 फीसद विदेशी संस्थागत निवेशकों के हाथों में पहुंच चुके हैं। दूसरी ओर मजदूरों के हाथों सिर्फ 0.12 फीसद शेयर बचे हैं और भारतीय छोटे निवेशकों के हाथों में सिर्फ 0.89 फीसद। याद रहे कि 26 फीसद शेयर हाथ में आने पर विदेशी संस्थागत निवेशक भेल के बोर्ड में अपने प्रतिनिधि बैठाने और इस तरह कंपनी के निर्णयों को प्रभावित करने की स्थिति में होंगे। इस क्रम में भेल के अंतर्राष्ट्रीय प्रतिद्वद्वियों को भी इस कंपनी की सभी अदंरूनी आर्थिक जानकारियाँ मिल रही होंगी। नवरत्न कंपनियों के मामले में यह पहलू खास तौर पर प्रासंगिक है।''

(नवभारत टाइम्स, 8 जुलाई, 2005)

8.4.2 वाणिज्य व्यापार संबंधी फीचर

अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण पक्ष वाणिज्य और व्यापार है। वस्तुओं और सेवाओं का क्रय–विक्रय व्यापार है और वाणिज्य के अंतर्गत खरीद–बिक्री, विनिमय, लेन–देन आदि सभी पक्ष आ जाते हैं। बाजार व्यवस्था, शेयर बाजार, बैकिंग, वस्तुओं का क्रय–विक्रय और विनिमय, वित्तीय ऋणों का लेन–देन, कीमतों का उतार–चढ़ाव आदि सभी पक्ष वाणिज्य–व्यापार के अंतर्गत आएंगे। आज बैकिंग व्यवस्था काफी मजबूत हो गई है। वेतन से लेकर बिजनेस के सभी बड़े विनिमय बैकों के माध्यम से होते हैं। तकनीक ने बैकिंग क्षेत्र को और भी मजबूत कर दिया है। बिना बैंक गए इंटरनेट, एटीएम, मोबाइल आदि के जरिए बैकिंग का कार्य सफलता से किया जाने लगा है। शेयर बाजार में खरीदारी के लिए अब जाने की जरूरत नहीं। सभी कुछ इंटरनेट के जरिए कम्प्यूटर स्क्रीन पर उपलब्ध है। माउस के क्लिक से आप इधर शेयर खरीदते हैं और उधर आपके खाते से निर्दिष्ट रकम चली जाती है और शेयर आपके डिमैट खाते में जमा हो जाता। जाहिर है, जब इस क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति हुई है तो इससे जुड़े मसले भी खूब उठेंगे वे सभी मसले आपके फीचर के विषय बन सकते हैं। शेयर बाजार की तेजी अर्थव्यवस्था में मजबूती का आईना भी होता है। आइए, एक नजर डालें इसी विषय पर प्रकाशित एक फीचर के अंश पर–

''शेयर बाजार अब तक सारे रिकार्ड तोड़ कर सात हजार से भी ऊपर चला गया है। बाजार के लोगों का कहना है कि यह कितना ऊपर जाएगा, अभी किसी को पता नहीं है क्योंकि मार्केट में तो आग सी लगी है। वैसे मुझे तो अचानक बाजार बढ़ने की कोई वजह मालूम नहीं पड़ रही है, लेकिन लोग कह रहे हैं कि अंबानी भाइयों में समझौता हो जाने की वजह से बाजार इतना बढ़ रहा है। ऐसे में लोगों की जानकारी के लिए यह बता देना चाहता हूं कि जब यह झगड़ा अपने चरम पर था तब भी शेयर बाजार ने सात हजार के सूचकांक को छुआ था। इस बार यह दो सौ प्वाइंट ऊपर गया है।

इसका मतलब है कि अर्थव्यस्था में जो मजबूती आ रही है तथा भारत में निवेश की बढ़ती संभावनाओं के कारण शेयर बाजार में जबरदस्त पूंजी लग रही है उसी के चलते सूचकांक ऊपर बढ़ता जा रहा है।''

(दैनिक जागरण, 25 जुलाई, 2005)

भारत के आर्थिक क्षेत्र में उदारवादी नीतियों के शुरू होने और संचार तकनीक के विकास के चलते विश्व अर्थव्यवस्था से जुड़ने के कारण कई नए–नए आर्थिक विस्तार सामने आए हैं। इस नए बिजनेस में बीपीओ (बिजनेस प्रोसेस आउटसोर्सिंग), कॉल सेन्टर के जरिए बिजनेस को बढ़ावा देने जैसी चीजें सामने आई हैं। कॉल सेन्टर, बीपीओ का अपना अलग गणित है। ये सभी कार्य या बिजनेस आर्थिक फीचर के लिए बढ़िया विषय हो सकते हैं। पेट्रोलियम, गैस आदि की मांग और आपूर्ति के बीच का समन्वय और विरोधाभास भी आर्थिक फीचर के विषय हो सकते हैं। नई अर्थव्यवस्था में संगठित रिटेलिंग की शुरुआत हुई है। मार्केटिंग के लोग इसे शुभ लक्षण मानते हैं। हालांकि परम्परागत सोच यह बताती है कि इसके प्रचलन से आम छोटा व्यापारी और दुकानदार समाप्त हो जाएगा। इस विषय पर एक फीचर का अंश देखें –

''देश में मध्यम आय वर्ग की संख्या बढ़ाने में खुदरा व्यापार की अच्छी भूमिका रही है। आखिरी राष्ट्रीय आय में 15 प्रतिशत योगदान व्यापार का है मुख्यतः खुदरा व्यापार का। इतने बड़े क्षेत्र में बड़ी कंपनियाँ इस आम आदमी के क्षेत्र में आकर, उसे वहां से खदेड़ कर एक दीर्घकालिक नजरिए से स्वयं अपने पैरों पर सामूहिक स्तर पर, कुल्हाड़ी मार रही हैं। खुदरा क्षेत्र की राष्ट्रीय आय तेजी से बढ़ी है परंतु रोजगार की बढ़त के साथ। बड़ी कपनियों के तत्वावधान में आय में बढ़त होगी पर रोजगार घटेगा ———————————— मध्यम आय वर्ग को इन बड़े, आधुनिक भंडारों में खरीदारी की भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। उन्हें रोजगार के अवसरों की तंगी भुगतनी पड़ेगी। साथ ही शेयर बाजार और बैंकों में मध्यम आय वर्ग की बचत बटोर कर बड़े व्यवसायी स्वयं मध्यम वर्ग के ही व्यावसायिक अवसर घटाएंगे।''

(हिन्दुस्तान, 10 जुलाई 2005)

8.4.3 बजट संबंधी फीचर

बजट क्या है? सरकार हर साल देश का बजट पेश करती है। बजट का सामान्य अर्थ है– आमदनी और खर्च का ब्यौरा। इसके अंतर्गत बीते वित्त वर्ष के आय–व्यय का ब्यौरा प्रस्तुत किया जाता है और आगामी वित्त वर्ष के आय के प्रावधानों और व्यय के अनुमानों का विवरण संसद में पेश किया जाता है। हमारे देश में हर वर्ष फरवरी माह के अंत में रेल बजट और आम बजट पेश किए जाते हैं। इस बजट से देश के सभी लोगों का गहरा संबंध होता है। रेल बजट में रेल भाड़ा और माल भाड़े में परिवर्तन की जानकारी दी जाती है। साथ ही यह भी बताया जाता है कि कौन–कौन सी नई रेलगाड़ियां चलेंगी, कौन से नए रूट बनेंगे, माल भाड़े का क्या स्वरूप होगा, आदि। आम बजट में नए कर प्रस्ताव आते हैं। आम बजट में जनता के लिए आयकर में छूट आदि की बातें महत्वपूर्ण होती हैं तो व्यावसायिक वर्ग के लिए उत्पाद कर आदि की। इन सभी के तालमेल से यह पता चल पाता है कि कौन–सी वस्तुएं सस्ती होंगी और कौन–सी महंगी। बजट आने से पहले समाज के विभिन्न वर्ग उद्योगपति, व्यवसायी, नौकरी–पेशा लोग, मजदूर–किसान आदि अपने–अपने ढंग से बजट को प्रभावित करने की कोशिश करते हैं। विभिन्न उद्योग चैम्बरों के प्रतिनिधि वित्त मंत्री से मिलकर अपनी

मांगें उनके समक्ष रखते हैं। व्यवसायियों और उद्योग विशेष के प्रतिनिधिमंडल भी वित्तमंत्री से मिलकर अपनी समस्याएं रखते हैं और अपनी सुविधा के लिए कर ढांचे में परिवर्तन की मांग करते हैं। मजदूरों–किसानों की मांग उनके संगठनों के द्वारा पेश की जाती हैं। उनके इस प्रयत्न में फीचर लेख काफी मददगार हो सकते हैं। बजट से पहले अर्थशास्त्रियों की राय भी फीचर का विषय बन सकती हैं। बजट आने के बाद उस पर समाज के विभिन्न वर्गों की राय, प्रतिक्रिया, विशेषज्ञों और अर्थशास्त्रियों के विचारों को भी फीचर लेखक प्रस्तुत कर सकता है। इन फीचरों के माध्यम से अधिक से अधिक लोगों की राय को समाज और सरकार के सामने पेश किया जा सकता है।

8.4.4 अन्य आर्थिक फीचर

आर्थिक फीचर के विषय बहुत व्यापक हैं। इन विषयों को सिर्फ कुछ प्रकारों में नहीं बांटा जा सकता है। आर्थिक विषय कई तरह के हो सकते हैं। आदिवासियों, उपेक्षित वर्गों आदि के लिए शुरू की गई योजनाएं, उनके उत्थान की वर्तमान स्थिति, बेरोजगारी, गरीबी, जनसंख्या वृद्धि आदि सभी विषयों के आर्थिक पक्षों को फीचर में दिया जा सकता है। आर्थिक और तकनीकी संपन्नता को दिखाने वाले आर्थिक फीचर भी लिखे जा सकते हैं। उदाहरण के रूप में यहां एक फीचर का अंश देखें कि कैसे बाजारों के मुकाबले गांवों में एटीएम हैं और वे अपना लेन–देन इसी के माध्यम से करते हैं।

''शायद बड़े शहरों में रहने वाले लोगों में से अधिकांश को यह गलतफहमी होगी कि सभी बैंक एटीएम सुविधा देने के लिए उन्हें ही तरजीह देते हैं। क्योंकि समृद्धि और तकनीकी ज्ञान के मामले में वे भारत के ग्रामीण या कस्बाई लोगों से कहीं आगे हैं। अपनी आंखें खोलने के लिए उन्हें तमिलनाडु के ग्रामीण इलाके में बसे महज 25 हजार किसानों की आबादी वाले नेवलीकुप्पम जिले में जरूर जाना चाहिए। यहां के गन्ना उत्पादक किसानों में से कोई भी नकद भुगतान स्वीकार नहीं करता। इसी वजह से इस क्षेत्र में बने एटीएम और उनके उपभोक्ताओं की तादाद किसी भी बड़े शहर के पॉश इलाकों की तुलना में कहीं ज्यादा हैं। यही नहीं, इस छोटे से इलाके में 23 बैंकों की शाखाओं का इंटरनेट बैंकिंग में जुड़ा जाल भी बिछा हुआ है। इसी के मद्देनजर सड़कों के किनारे कियोस्क भी बनाए गए हैं, जिनकी सहायता से यहां के लोग अपना बैंक बैंलेस जानने या मनी ट्रांसफर जैसी अत्याधुनिक इंटरनेट बैंकिंग सुविधाओं का धड़ल्ले से इस्तेमाल करते हैं।''

(नवभारत टाइम्स, 16 दिसंबर, 2004)

बोध प्रश्न 1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1) आर्थिक फीचर से क्या आप समझते हैं? इसका महत्व बताइए।

.....

.....

.....

.....

2) आर्थिक विकास से संबंधित फीचर के अंतर्गत किन–किन विषयों को शामिल किया जा सकता है? स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

3) उदारवादी अर्थव्यवस्था और तकनीक के युग में नए रोजगार के अवसरों पर प्रकाश डालिए।

.....

.....

.....

.....

.....

4) बजट किस तरह से आम जीवन को प्रभावित करता है?

.....

.....

.....

.....

.....

8.5 विषय का चयन

आर्थिक फीचर लेखन एक विशिष्ट विधा है। इस क्षेत्र में लेखन का कार्य उसी को करना चाहिए जिसकी इस विषय में रूचि हो और विषय की समझ भी हो। आर्थिक फीचर का कार्य काफी उत्तरदायित्व से भरा है। विषय की समझ के बगैर आर्थिक फीचर सटीक नहीं हो सकता है। इस क्षेत्र के विषय का चयन भी सूझबूझ के साथ होना चाहिए। विषय की प्रासंगिकता और महत्व के बारे में सोचना भी जरूरी है। विषय को कितना सारगर्भित रखा जाए, यह इस बात पर निर्भर है कि फीचर किस तरह की पत्रिका या समाचार पत्र में प्रकाशित होगा और उसका पाठक वर्ग कौन है। आइए, इन सब पक्षों पर विचार करें ।

8.5.1 रुचि और विशेषज्ञता

आर्थिक फीचर के लिए सबसे पहली जरूरत है लेखक का आर्थिक ज्ञान और विषय की समझ। अर्थशास्त्र की जानकारी रखने वाले लेखक के लिए इस विषय पर लिख पाना ज्यादा आसान होगा। आर्थिक फीचर में अर्थशास्त्र, वाणिज्य, व्यवसाय प्रबंधन, सांख्यिकी, बाजार आदि विषयों की बुनियादी जानकारी जरूरी है। इसके ज्ञान के बगैर आर्थिक क्षेत्र की जटिलताओं को नहीं समझा जा सकता। आर्थिक विषयों के लेखन में कुछ खास पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग किया जाता है। ऐसे पारिभाषिक शब्दों की

सही समझ के बगैर प्रयास करना संभव नहीं होगा। आर्थिक लेखन में जटिल पारिभाषिक शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए। इसकी बजाय ऐसी भाषा का इस्तेमाल करना चाहिए जिससे पाठक आसानी से आपकी बात समझ सके। कुछ आम पारिभाषिक शब्द जैसे शेयर सूचकांक, सेंसेक्स, आयकर अधिनियम की खास धाराएं, आउटसोर्सिंग, बचत योजनाएं, पब्लिक इश्यू, विनिवेश आदि का प्रयोग धड़ल्ले से किया जाता है। लेकिन इन शब्दों का प्रयोग वही लेखक कर सकते हैं जो इनके अर्थ ठीक से समझते हों।

8.5.2 प्रकाशन की प्रकृति

समाचार पत्रों की प्रकृति के अनुसार आर्थिक फीचर का स्वरूप भी तय होता है। दैनिक समाचार पत्र के व्यापक पाठक वर्ग को ध्यान में रखकर विषय का चयन किया जाता है और उसकी प्रस्तुति भी उसी के अनुरूप की जाती है। आर्थिक पत्रिका के लेखन में विषय की गहराई का खास ध्यान रखा जाता है। कुछ पत्रिकाओं में आर्थिक मुद्दों के लिए पृष्ठ सुरक्षित रहते हैं। इन पृष्ठों पर लेख, फीचर, रिपोर्ताज, विश्लेषण, सलाह आदि प्रकाशित होते हैं। आर्थिक क्षेत्र में लेखन की स्थिति में लगातार परिवर्तन हो रहा है। आम जनता में इसके महत्व को देखते हुए सभी पत्र–पत्रिकाओं में इसे अब अधिक स्थान दिया जा रहा है। तकनीकी विकास और निवेश के नित नए विकल्प आने से आम जनता की रुचि आर्थिक रपटों के प्रति बढ़ी है। इसलिए अब इस क्षेत्र में फीचर के अवसर भी लगातार बढ़ रहे हैं।

8.5.3 विषय की प्रासंगिकता

आर्थिक फीचर में विषय के चयन का बहुत महत्व है। विषय सामयिक होगा, तभी वह पाठकों को आकर्षित करेगा। विषय का चयन बहुत सोच, समझ कर करना चाहिए। विषय ऐसे हों जो समाचार पत्रों में चर्चा में हों। ऐसे विषयों को आम पाठक के साथ जोड़कर प्रस्तुत किया जाना चाहिए। यहां कुछ उदाहरण सामने रखना उचित होगाः शेयर बाजार में जब लगातार तेजी रहती है तो सेबी कई तरह के ऐसे निर्देश जारी करती है जिसमें निवेशकों को सतर्क रहने को कहा जाता है। बाजार की तेजी में कुछ धूर्त कंपनियां और ऑपरेटर भोले–भाले निवेशकों को मूर्ख बनाने की कोशिश करते हैं। ऐसी स्थिति में निवेशकों को चौकन्ना रखने के बारे में आर्थिक फीचर सटीक हो सकता है। दूसरे उदाहरण में हम देख सकते हैं कि आज किस तरह से खुदरा कारोबार (रिटेलिंग) को संगठित क्षेत्र में लाया जा रहा है। इसका असर परंपरागत कारोबारों पर क्या होगा? रोजगार के अवसर पर क्या प्रभाव पड़ेगा? ऐसे विषयों पर फीचर लिखे जा सकते हैं। जरूरी नहीं है कि घटना के बाद ही आर्थिक फीचर लिखे जाएं। जैसा कि आपने पहले पढ़ा, बजट आने से पहले बजट से की जा रही उम्मीदों पर आर्थिक फीचर लिखे जा सकते हैं। इसी प्रकार बाढ़–सूखे से होने वाली आर्थिक क्षति और उससे बचाव की जरूरत पर भी फीचर संभव हैं। दो देशों के बीच आर्थिक संबंधों पर तब फीचर लिखे जा सकते हैं जब दोनों देशों के प्रमुखों की कोई बैठक होने वाली हो। मानसून शुरू होने के बाद देश की आर्थिक स्थिति का आकलन और इसका बाजार, विशेष रूप से शेयर बाजार पर प्रभाव का आकलन भी किया सकता हैं।

8.6 सामग्री का संकलन

विषय के चयन के बाद आपको आवश्यक सामग्री का चयन करना होगा। विषय पर पहले किए गए अध्ययन, आंकड़े, अन्य तथ्यों का संकलन, विशेषज्ञों की राय आदि को एकत्र कर आप उनके आधार पर फीचर तैयार कर सकते हैं। आइए, सामग्री के संकलन पर विचार करें।

8.6.1 विषय पर शोध और अध्ययन

एक अच्छे फीचर लेखक को हमेशा जागरूक रहना चाहिए। निरंतर इस क्षेत्र के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करते रहना चाहिए और जरूरी तथ्यों और आंकड़ों को एक डायरी में नोट करना चाहिए। इससे फीचर लिखने में मदद मिलेगी। जिस विषय पर फीचर लिखना है उसकी गहरी जानकारी के लिए पुस्तकालय में संदर्भ ग्रंथ, प्रकाशित सामग्री की फाइल आदि को देखना चाहिए। सभी पक्षों के पर्याप्त अध्ययन के पश्चात् फीचर लिखना चाहिए ताकि कोई महत्वपूर्ण पहलू छूट न जाए।

8.6.2 तथ्यों का संकलन

आर्थिक फीचर में आंकड़ों का बहुत महत्व होता है। आंकड़ों का विश्लेषण सुरूचिपूर्ण ढंग से करना चाहिए। जिससे पाठक आसानी से समझ सकें। आंकड़ों का संकलन सरकारी और गैर–सरकारी स्रोतों से किया जा सकता है। उदाहरण के रूप में, अगर देश में काला धन और इस पर लगाम जैसे विषय पर फीचर लिखना है तो सबसे पहले काले धन की व्याख्या करनी होगी। इसके स्रोत क्या है और यह कैसे बनता है? काले धन का आतंकवाद और ड्रग से क्या संबंध है। इस विषय पर सरकारी और गैर–सरकारी संगठनों के अध्ययनों और रिपोर्टों को देखना जरूरी है। सभी पक्षों के अध्ययन के बाद इस पर अच्छा फीचर लिखा जा सकता है।

8.6.3 साक्षात्कार

आर्थिक फीचर में साक्षात्कार का बड़ा महत्व है। विशेषज्ञों से बातचीत के बाद फीचर का स्तर बढ़ जाता है। फीचर के विषय के हिसाब से अर्थशास्त्रियों, विशेषज्ञों, संबद्ध सरकारी अधिकारियों, राजनेताओं, उपभोक्ताओं आदि विभिन्न संबद्ध लोगों से बातचीत करनी चाहिए। साक्षात्कार करने से पहले विषय को पढ़–समझ कर एक प्रश्नावली बना लेनी चाहिए। साक्षात्कार मिलकर, फोन से या ई–मेल के जरिए भी लिया जा सकता है। विशेषज्ञ जो राय समाचार पत्र, टी. वी और रेडियो में देते हैं, उसे भी फीचर में उद्धृत किया जा सकता है।

8.6.4 अन्य सामग्री

आर्थिक फीचर को रोचक बनाने के लिए इसमें संबद्ध रेखाचित्र, तालिका, कार्टून, फोटो आदि का प्रयोग करना चाहिए। आर्थिक फीचर के विषय प्रायः शुष्क होते हैं इसलिए इनका प्रयोग यहां उपयुक्त होगा। आजकल हिंदी और अंग्रेजी के अखबारों में छपने वाले आर्थिक फीचरों में इस तरह के रेखाचित्र, फोटो आदि का प्रयोग बहुतायत से किया जा रहा है।

8.7 सामग्री का संयोजन और संपादन

अभी हमने चर्चा की कि आर्थिक फीचर लिखने के पहले किस तरह से सामग्री जुटाएं। सामग्री जुटाने के बाद उसे ध्यान से पढ़ कर देखें कि कौन सी सामग्री फीचर से सम्बद्ध है। उस सामग्री को एक जगह रखें। फिर देखें कि कोई और जरूरी, पक्ष छूट तो नहीं रहा। अगर ऐसा लगता है तो उसकी जानकारी को भी जुटाएं। आंकड़े, विशेषज्ञों से बातचीत आदि को एक जगह रखें। फिर अपने फीचर को तथ्यों और प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत करें।

बोध प्रश्न 2

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1) क्या कोई भी फीचर लेखक आर्थिक फीचर लेखक बन सकता है? आर्थिक फीचर के लेखन में किन–किन योजनाओं का होना आवश्यक है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) आर्थिक फीचर के लिए विषय का चयन करते हुए किन–किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

.....

.....

.....

.....

.....

3) आर्थिक फीचर में आकड़ों, विशेषज्ञों की राय के महत्व पर प्रकाश डालिए।

.....

.....

.....

.....

.....

8.8 लेखन की प्रस्तुति

जब आर्थिक फीचर लेखन की तैयारी पूरी हो जाए तो अपनी सामग्री का ठीक से अध्ययन कर लें। इसका आकार तय करें। आकार कई बार समाचार पत्र में इसके लिए नियत स्थान के अनुसार तय किया जाता है। ऐसे में उसी आकार के अनुरूप

अपने फीचर को इस तरह से लिखें कि कोई भी महत्वपूर्ण भाग छूट न जाए। आर्थिक फीचर के मूल रूप से तीन भाग होते हैंः आरंभ, मध्य और अंत।

8.8.1 आरंभ

आरंभ में आर्थिक फीचर की विषय वस्तु क्या है और यह किसके लिए है, यह स्पष्ट किया जाता है। आरंभ में विषय वस्तु की ओर संकेत कर सकते हैं। पाठक वर्ग को ध्यान में रखते हुए इसकी शुरूआत रोचक ढंग से करनी चाहिए। जरूरी नहीं हैं कि सभी आर्थिक फीचर समस्या–प्रधान ही हों। विकास के मुद्दों से जुड़े फीचर की शुरूआत काफी रोचक और तुलनात्मक ढंग से की जा सकती है। जैसे, पहले स्थितियाँ ऐसी थीं जो अब बदल कर ऐसी हो गई हैं। यहां बैंकिंग आदि के क्षेत्र में आए परिवर्तनों को उदाहरण के रूप में ले सकते हैं।

8.8.2 मध्य

फीचर के मध्य भाग में मुख्य सामग्री दी जाती है। यहां विषय वस्तु को बड़े ही क्रमवार और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करना चाहिए। इस भाग में आंकड़े, विशेषज्ञों की राय आदि का उल्लेख उचित है। आरंभ के बाद मध्य तक पहुंचते–पहुंचते यह हो जाना चाहिए कि लेखक ने अपने फीचर की विषय वस्तु के अनुरूप अपने तर्क प्रस्तुत कर दिए हैं।

8.8.3 अंत और शीर्षक

फीचर के अंतिम भाग में विषय वस्तु का निष्कर्ष या समाधान दिया जाता है। कई बार पाठकों को किन्हीं खास स्थितियों से सावधान रहने का संकेत दिया जाता है। उदाहरण के लिए, शेयर बाजार पर ऐसे समय में आप फीचर लिखें जब वह रिकार्ड ऊंचाई पर हो तो अपने पाठकों को जरूर सावधान करें कि ऐसी तेजी के माहौल में वे निवेश सोच–समझ कर करें। इसलिए कि अप्रत्याशित तेजी में ही छोटे निवेशक फंसते हैं। फीचर का शीर्षक ऐसा हो जिससे फीचर की विषय वस्तु का न सिर्फ भाव स्पष्ट हो जाए, बल्कि वह आकर्षक भी लगे।

8.9 भाषा और शैली

आर्थिक फीचर की भाषा सरल होनी चाहिए। साहित्यिक पांडित्य से बचना चाहिए। आर्थिक फीचर में आर्थिक क्षेत्रों के बहुत से विशिष्ट शब्द आते हैं। कोशिश यह होनी चाहिए कि उन शब्दों के भावों को सरल भाषा में लिखा जाए, जिसे आम पाठक भी आसानी से समझ सकें। शैली का चयन भी सुरूचिपूर्ण हो। उसमें प्रवाह होना चाहिए, जिससे विषय अपने आप सरल ढंग से बढ़ता चला जाए। इसका अर्थ यह नहीं कि आप आर्थिक शब्दावली का प्रयोग बिल्कुल नहीं करें। आर्थिक जगत के आम शब्द जैसे पूंजी बाजार, शेयर, डिबेंचर, इक्विटी, आवक, शुद्ध लाभ, कारोबार जैसे शब्दों का सही प्रयोग तभी संभव है जब लेखक इनके अर्थ को बखूबी जानता हो। इसी प्रकार थोक मूल्य सूचकांक, सेंसेक्स, विनिवेश, गरीबी रेखा, प्रति व्यक्ति आय, मुद्रा अवमूल्यन, विदेशी मुद्रा विनिमय दर आदि शब्दों को समझे बिना इनका प्रयोग सटीक नहीं हो सकता। शैली को रोचक बनाने के लिए विषय वस्तु को आम आदमी के दैनिक अनुभव से जोड़ना चाहिए जिससे फीचर आकर्षक बन सके और उसकी पठनीयता बढ़ सके।

बोध प्रश्न–3

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1) आर्थिक फीचर के लेखन से पहले किस प्रकार सामग्री एकत्रित की जाती है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) आर्थिक फीचर का शीर्षक तय करते समय किन–किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

.....

.....

.....

.....

.....

3) आर्थिक फीचर की भाषा और शैली का क्या महत्व है?

.....

.....

.....

.....

.....

8.10 सारांश

- इस इकाई को पढ़ने के बाद आप आर्थिक फीचर की उपयोगिता से भली–भांति परिचित हो गए होंगे। प्रत्येक देश की प्रगति और समृद्धि अर्थव्यवस्था पर भी निर्भर करती है। यदि आप आर्थिक फीचर के लेखन के क्षेत्र में आना चाहते हैं तो आपको इस क्षेत्र का पर्याप्त ज्ञान हासिल करना होगा। यह जानना होगा कि आर्थिक क्षेत्र के अंतर्गत कौन–कौन से विषय आते हैं और फीचर के लिए किन विषयों का चयन प्रासंगिक और महत्वपूर्ण होगा।

- आर्थिक फीचर के क्षेत्र को मुख्य रूप से तीन क्षेत्रों में विभाजित कर सकते हैं। आर्थिक विकास से संबंधित फीचर, वाणिज्य और व्यापार संबंधी फीचर और बजट संबंधी फीचर। आर्थिक विवाद के दो मुख्य क्षेत्र हैं– कृषि और उद्योग। उद्योग में सेवा क्षेत्र का महत्व बहुत बढ़ गया है। इसके अतिरिक्त भी आप समाज के कमजोर वर्गों और आर्थिक उत्थान जैसे विषयों पर फीचर तैयार कर सकते हैं।

उत्पादन, वितरण और विनिमय के विभिन्न क्षेत्रों को आर्थिक फीचर का विषय बनाया जा सकता है।

- विषय तय करने के बाद उसके लिए सामग्री का संकलन करें। आर्थिक आंकड़ों का संकलन निरंतर करते रहें और अवसर के अनुरूप इनका प्रयोग करें। सरकारी दस्तावेजों, शोध पत्रों, सर्वेक्षणों, रिपोर्टों का अध्ययन करें। विशेषज्ञों की राय लें। विषय से संबद्ध फोटो, कार्टून और तालिकाएं फीचर में जान डालती हैं।

- सामग्री के अध्ययन के बाद फीचर की रूपरेखा तय करें, फिर लिखना शुरू करें। उद्देश्य स्पष्ट हो तो फीचर अपनी दिशा से नहीं भटकेगा। तथ्यों और आंकड़ों से अपनी बात को स्पष्ट करें। क्रमबद्ध और तार्किक ढंग से अपनी बात को आगे बढ़ाएं। निष्कर्ष, समस्या का समाधान और समस्या के प्रति सचेत करने की बात फीचर के अंत में हो। फीचर का शीर्षक विषय को इंगित करने के साथ आकर्षक होना चाहिए।

- आर्थिक फीचर में विशेष पारिभाषिक शब्दावली का ज्ञान आवश्यक है। फीचर की भाषा सरल और पाठक वर्ग के अनुकूल होनी चाहिए। शैली नयी और आकर्षक होनी चाहिए। उम्मीद है कि इस इकाई को पढ़ने से आपको आर्थिक फीचर लेखन में मदद मिलेगी।

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1) महंगाई के युग में मध्यम वर्ग के घरेलू बजट की उपयोगिता पर लगभग 100 लाइनों में टिप्पणी लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) गांवों में तेजी से तकनीकी सुविधाएं बढ़ रही हैं। क्या इस विषय को आर्थिक फीचर के अंतर्गत शामिल किया जा सकता है? कारण बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) पेट्रोलियम की बढ़ती कीमत पर फीचर लिखने के लिए आप क्या–क्या तैयारी करेंगे? उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

4) उक्त विषय के लेखन के लिए एक रूपरेखा तैयार कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

5) मुद्रास्फीति और महंगाई पर लगभग 250 शब्दों में फीचर लिखिए। इस फीचर के लिए आप थोक मूल्य सूचकांक में वृद्धि, मूलभूत जरूरी चीजों के बाजार भाव और आम लोगों की तकलीफों को आधार बनाइए।

.....

.....

.....

.....

.....

8.11 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) अर्थव्यवस्था से जुड़े विषयों से संबंधित लेख आर्थिक फीचर कहलाते हैं। आर्थिक फीचर लिखकर आप समाज और राष्ट्र की सेवा कर सकते हैं। अर्थव्यवस्था पर समाज की प्रगति निर्भर करती है। अर्थव्यवस्था से संबंधित विभिन्न समस्याओं और पहलुओं को फीचर का विषय बनाकर आप समाज को जागरूक और सरकार को सक्रिय कर सकते हैं।

2) आर्थिक विकास के मुख्य दो क्षेत्र हैं–कृषि एवं उद्योग। उद्योग के अंतर्गत सेवा क्षेत्र का महत्व अब बहुत बढ़ गया है। कृषि हमारी खाद्यान्न की आवश्यकताओं को पूरा करती है तो उद्योग जीवन की अन्य भौतिक आवश्यकताओं को।

3) उदारवादी अर्थव्यवस्था में रोजगार के नए अवसर आए हैं तकनीक के इस युग में बीपीओ अर्थात् 'बिजनेस प्रोसेस आउटसोर्सिंग' के क्षेत्र में रोजगार का बहुत बड़ा विश्व बाजार हमारे लिए खुल गया है।

4) बजट का अर्थ है आय–व्यय का ब्यौरा। प्रत्येक देश, राज्य और संस्थान में बीते वर्ष के आय व्यय का विवरण और आगामी वर्ष के आय व्यय की योजनाएं प्रस्तुत की जाती हैं। इन्हें ही बजट कहा जाता है।

बोध प्रश्न 2

1) कोई भी फीचर लेखक आर्थिक फीचर लेखक नहीं बन सकता। इसके लिए विषय का पर्याप्त ज्ञान आवश्यक है।

2) देखें, विषय का चयन से संबंधित भाग।

3) आर्थिक फीचर में आंकड़ों का बड़ा महत्व होता है। आंकड़ों के पैमाने से आर्थिक प्रगति, ठहराव या गिरावट का पता लगता है। आंकड़ों के तुलनात्मक अध्ययन से हम समस्या की गहराई जान सकते हैं। आंकड़ों से ही सही निष्कर्ष और समाधान प्रस्तुत किए जा सकते हैं। विशेषज्ञों की राय से आर्थिक दशा का विश्लेषणात्मक ज्ञान होता है।

बोध प्रश्न 3

1) इसके लिए सामग्री संकलन से सम्बन्धित भाग देखें।

2) विषय से संबद्ध हो, समस्या का संकेत या समाधान हो, छोटा परंतु रोचक हो।

3) फीचर की भाषा सरल और सहज होनी चाहिए और इसमें साहित्यिक पांडित्य नहीं होना चाहिए।

अभ्यास

1) महंगाई की समस्या सबके लिए गंभीर है परन्तु मध्य वर्ग के लिए कुछ खास गंभीर है। अपने अनुभव से देखें कि मध्य वर्ग की गृहणियां किस तरह से अपना बजट बनाती हैं। महंगाई पर प्रकाशित होने वाले लेखों को भी पढ़ सकते हैं।

2) तकनीकी विकास से गांव सीधे रूप से पूरे विश्व से जुड़ गए है। टी.वी. इंटरनेट के माध्यम से वे निवेश के नए अवसर जान रहे हैं। इस विषय पर लेखों को पढ़ें और अपने आसपास देखकर आत्मसात करें।

3) और 4) का उत्तर स्वयं लिखिए।

5) मुद्रास्फीति अर्थात मुद्रा की खरीद शक्ति में ह्रास। आसान शब्दों में इसे महंगाई का बढ़ना समझें। यह देखें कि अभी प्रति व्यक्ति आय और मुद्रास्फीति की दर क्या है? इन सभी के तुलनात्मक अध्ययन से इस पर अच्छा फीचर लिखें और शीर्षक भी दें।

इकाई 9 विज्ञान, पर्यावरण और स्वास्थ्य संबंधी फीचर : विषय का चयन और प्रस्तुति

इकाई की रूपरेखा

9.0 उद्देश्य

9.1 प्रस्तावना

9.2 विज्ञान फीचर से अभिप्राय

9.3 विज्ञान फीचर : विषय का चयन, लेखन और प्रस्तुति

- 9.3.1 विज्ञान के विविध क्षेत्रों से संबंधित
- 9.3.2 विज्ञान की सामाजिक उपयोगिता से संबंधित
- 9.3.3 वैज्ञानिक दृष्टिकोण से संबंधित

9.4 पर्यावरण से संबंधित फीचर : विषय का चयन, लेखन और प्रस्तुति

- 9.4.1 पर्यावरण प्रदूषण
- 9.4.2 पारिस्थितिकी संतुलन
- 9.4.3 पर्यावरण जागरूकता संबंधी फीचर

9.5 स्वास्थ्य से संबंधित फीचर : विषय का चयन, लेखन और प्रस्तुति

9.6 भाषा–शैली

9.7 सारांश

9.8 बोध प्रश्नों/अभ्याओं के उत्तर

9.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- विज्ञान फीचर का अर्थ और महत्त्व समझ सकेंगी/सकेंगे;
- पर्यावरण फीचर की जरूरत और उसके लेखन के तरीके पर टिप्पणी कर सकेंगी/सकेंगे;
- वैज्ञानिक उपलब्धियों का पर्यावरण पर प्रभाव और प्रदूषण की बढ़ती समस्या पर प्रकाश डाल सकेंगी/सकेंगे;
- चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में फीचर लेखन की संभावनाओं पर प्रकाश डाल सकेंगी/सकेंगे;
- विज्ञान, पर्यावरण और चिकित्सा से जुड़े विषयों का चयन और उन पर लेखन का तरीका जान सकेंगी/सकेंगे और
- इन विषयों पर फीचर लेखन की भाषा और शैली सीख सकेंगी/सकेंगे।

9.1 प्रस्तावना

आज विज्ञान का युग है। समाज का शायद ही ऐसा कोई क्षेत्र है जिसमें विज्ञान ने अपनी पहुंच नहीं बनाई है। भौतिकी, रसायन, जीव, वनस्पति और चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में तो रोज नए–नए प्रयोग हो ही रहे हैं। दैनिक जीवन से जुड़ी सुविधाओं, भूगर्भ, अंतरिक्ष, रक्षा, पर्यावरण, परिवहन, संचार आदि क्षेत्रों में भी लगातार नए शोध हो रहे हैं। इस तरह विज्ञान का दायरा काफी व्यापक हुआ है। इसके अध्ययन के लिए कई नयी शाखा–प्रशाखाओं का विकास हुआ है।

मगर विज्ञान के विकास के साथ मानव जीवन में जितनी सुविधाएं और सहूलियतें बढ़ी हैं, और एक दूसरे के साथ संपर्क और विचारों के आदान–प्रदान में आसानी हुई है वहीं इसके कई कुछ प्रतिकूल प्रभाव भी चिंता बन कर उभरे हैं। वाहनों, औद्योगिक इकाइयों और घरेलू उपकरणों से निकलने वाली रासायनिक गैसों ने हमारे आसपास का वातावरण प्रदूषित किया है। इससे दुनिया का तापमान बढ़ा है। मौसम का मिजाज गड़बड़ हुआ है। सूखा या अतिवर्षा जैसी समस्याएं पैदा होने से फसलों और वनस्पतियों का अस्तित्व खतरे में पड़ा है। कई पौधों और वन्य जीवों की प्रजातियां या तो नष्ट हो गयी हैं या दुर्लभ बन कर रह गई हैं। इससे पारिस्थितिकी संतुलन तेजी से बिगड़ा है। प्रदूषित हवा के कारण फेफड़े, त्वचा, सांस संबंधी अनेक नयी बीमारियां पैदा हुई हैं। रासायनिक कचरे के खेतों में पहुंचने, अनाज और सब्जियों में रासायनिक तत्त्वों के घुल–मिल जाने के कारण दिमागी बुखार और कैंसर जैसी जानलेवा बीमारियों के खतरे बढ़े हैं। आए दिन नयी बीमारियों के लक्षण उभरते देखे जाते हैं। इसलिए विज्ञान के विकास के साथ–साथ पर्यावरण और अपने आसपास के वातावरण को सुरक्षित बनाए रखने की चुनौती भी हमारे सामने उपस्थित हुई है।

विज्ञान और प्रकृति के बिगड़ते रिश्तों के मानव जीवन पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों से निपटने के लिए चिकित्सा विज्ञान निरंतर प्रयास कर रहा है। असाध्य और महामारी फैलाने वाले रोगों को जड़ से समाप्त करने के लिए टीके और दवाइयों की खोज हो रही है। कई खोजें की जा चुकी हैं। शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में इलाज की सूक्ष्मतर पद्धतियों का विकास हुआ है। इस सारे वैज्ञानिक विकास और उपलब्धियों को नजरअंदाज करना संचार माध्यमों के लिए आसान नहीं रह गया है। हर पत्र–पत्रिका यहां तक कि इलेक्ट्रॉनिक संचार माध्यम भी विज्ञान, पर्यावरण और चिकित्सा से जुड़ी समस्याओं, खोजों और उपलब्धियों पर अपने विशेष फीचर पृष्ठ और कार्यक्रम प्रकाशित–प्रसारित करने लगे हैं। इन क्षेत्रों पर आधारित स्वतंत्र पत्रिकाएं प्रकाशित होने लगी हैं। कंप्यूटर, ऑटोमोबाइल, उद्योग, संचार, भूगोल (जियोग्राफी), भू–भौतिकी (जियोफिजिक्स)और जैव–भौतिकी (बायोफिजिक्स), जैव–तकनीक (बायो–टेक्नोलॉजी) आदि पर पत्रिकाओं का प्रकाशन काफी व्यापक ढंग से हो रहा है। विज्ञान और तकनीक के मेल से भी कई नये क्षेत्र खुले हैं।

ऐसे में विज्ञान, पर्यावरण और चिकित्सा के क्षेत्र से जुड़े फीचर लेखन की संभावनाएं तेजी से विकसित हुई हैं। इस पाठ में हम इन क्षेत्रों के विषयों के चयन और उन पर लेखन के तरीके के बारे में अलग–अलग और विस्तार से चर्चा करेंगे।

9.2 विज्ञान फीचर से अभिप्राय

जैसा कि आप जानते हैं, पिछले कुछ दशकों में विज्ञान के क्षेत्र में तेजी से विकास और विस्तार हुआ है। आमतौर पर माना जाता है कि तकनीकी और मशीनी विकास ही मुख्य वैज्ञानिक उपलब्धियां हैं लेकिन यह एकांगी सोच है। यह ठीक है कि विज्ञान ने समाज के हर क्षेत्र में विकास के नए अवसर और स्रोत उपलब्ध कराए हैं और आर्थिक विकास में तो इसका महत्वपूर्ण योगदान है ही। आज घरेलू उपयोग के अनेक ऐसे उपकरणों का आविष्कार हो चुका है जिनसे दिन भर व्यस्त रहने वालों के लिए काफी सुविधाएं उपलब्ध हुई हैं। रसोई घर से लेकर दफ्तर और परिवहन आदि की भी अनेक सुविधाएं उपलब्ध हैं। आरामदेह गाड़ियों के नए–नए मॉडल बाजार में आ रहे हैं। सड़क, हवाई और समुद्री यात्राओं–माल ढुलाई में सुविधाजनक विस्तार हुआ है। घर बैठे दुनिया भर की जानकारियां प्राप्त करने और भेजने की सुविधाएं उपलब्ध हुई हैं। उपग्रहों के जरिए सूचना तकनीक के क्षेत्र में तेजी से विकास हो रहे हैं। समुद्र तल और अंतरिक्ष में विकास के स्रोतों की तलाश जारी है। अंतरिक्ष में दूसरे ग्रहों की स्थितियों, उनके प्राकृतिक परिवेश और वहां जीवन संभावना की जानकारी हासिल करने के प्रयास चल रहे हैं।

कंप्यूटर और मोबाइल फोनों ने संचार के क्षेत्र में क्रांति ला दी है। शिक्षा के क्षेत्र में संचार तकनीक के जरिए नए–नए प्रयोग हो रहे हैं। कृषि और औद्योगिक उत्पादन बढ़ाने के लिए नई–नई मशीनों के आविष्कार हो रहे हैं। व्यापार और बैंकिंग के क्षेत्र में इलेक्ट्रॉनिक मशीनों ने काफी सहूलियत ला दी है। बाजारों में खरीद–फरोख्त की पारंपरिक पद्धतियों में बदलाव आया है। इंटरनेट के जरिए आदेश लिए और दिए जाने लगे हैं। व्यावसायिक मोलभाव किए जाने लगे हैं और इसी के जरिए भुगतान होने लगे हैं। राजनायिक के मामले में एक देश को दूसरे देश से संपर्क बनाए रखने में सहूलियत हुई है। अब आदमी की जगह रोबोट से भी काम लिया जाने लगा है। मशीनों में इच्छित वस्तु का खाका भर देने भर से वह उसका उत्पादन करने लगती है। इस तरह मानव श्रम की काफी बचत हुई है। इन तमाम आविष्कारों, उपलब्धियों के बारे में जानकारी उपलब्ध करना तो संचार माध्यमों का उद्देश्य होता ही है, इसके अलावा सामाजिक विकास में विज्ञान की भूमिका को रेखांकित करना भी उनका मकसद है।

समाज के ग्रामीण और पिछड़े इलाकों में काफी बड़ी तादाद ऐसे लोगों की है जो आज भी आधुनिक वैज्ञानिक उपलब्धियों से वंचित हैं और प्राचीन मान्यताओं, झाड़–फूंक, टोने–टोटकों, गंडा–तावीज, परंपरागत पद्धतियों पर विश्वास करते हैं। आज भी बच्चों की बलि, महिलाओं को चुड़ैल घोषित कर जान से मार डालने, सती परीक्षा के नाम पर खौलते तेल में उनका हाथ डलवाने, कथित भूत–प्रेत या दुष्ट आत्माओं के चक्कर से निजात पाने की कोशिश में ठग–तांत्रिकों के शोषण का शिकार होने की घटनाएं अक्सर सामने आती रहती हैं। विज्ञान इन भ्रमों और अंधविश्वासों को तोड़ कर लोगों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण पैदा करने, चीजों को तर्कों पर जांचने–परखने की प्रवृत्ति विकसित करने का भी काम करता है। इसलिए संचार माध्यम सामाजिक उत्थान में विज्ञान की भूमिका को रेखांकित करने का भी दायित्व निभाते हैं।

पत्र–पत्रिकाओं के लिए विज्ञान से जुड़े विषयों पर फीचर लिखते समय इस बात का ध्यान रखना जरूरी है कि हमारा ध्यान सिर्फ वैज्ञानिक शोधों और उपलब्धियों पर केंद्रित होकर न रह जाए। विज्ञान फीचर लेखन का मकसद उन तथ्यों को भी

उजागर करना होना चाहिए जिनसे लोगों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास होता हो। आमतौर पर लोग वैज्ञानिक उपलब्धियों का इस्तेमाल अपने जीवन में तो करते हैं, लेकिन बहुत सारे मामलों में तर्कों का सहारा लेने की बजाय रूढ़ मान्यताओं पर भरोसा कर लेते हैं। दूसरे, जरूरी नहीं कि हर वैज्ञानिक उपलब्धि का सामाजिक और मानवीय दृष्टि से सही इस्तेमाल ही होता हो। उसके मानव जीवन पर कुछ दुष्प्रभाव भी हो सकते हैं।

देखा गया है कि औद्योगिक इकाइयां प्रदूषण मानकों का पालन करने के मामले में लापरवाही बरतती हैं या जानबूझ कर उन्हें नजरअंदाज करती हैं। जिन इकाइयों से जहरीली गैसें और हानिकारक पानी निकलता है उनके लिए जल शोधक संयंत्र लगाना आवश्यक होता है ताकि नालों के जरिए जब यह पानी रिहायशी इलाकों से होकर गुजरे तो उससे निकलने वाली हानिकारक गैसें लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव न डालें। लेकिन अनेक औद्योगिक इकाइयां ऐसा नहीं करतीं। इसी प्रकार पिछले दिनों कोक और पेपसी जैसे शीतल पेयों में कीटनाशक मिले होने के तथ्य उजागर हुए तो देश के विभिन्न हिस्सों में बड़े आंदोलन शुरू हुए। जांच के बाद यह भी पाया गया कि इन्हें बनाने वाली औद्योगिक इकाइयां जिन इलाकों में लगी हैं वहां भू–जल का इस कदर दोहन होता है कि जल–स्तर काफी नीचे चला गया है। इन इकाइयों से निकलने वाले गंदे पानी के असपास के इलाकों में फैलते रहने से वहां की खेती योग्य जमीन लगातार बंजर होती ही है। इन दुष्प्रभावों का विवेचन भी विज्ञान फीचर का मकसद होना चाहिए।

9.3 विज्ञान फीचर : विषय का चयन, लेखन और प्रस्तुति

जैसा कि ऊपर हमने कहा हैं, विज्ञान का क्षेत्र पिछले कुछ दशकों में काफी व्यापक हुआ है। समाज का शायद ही कोई ऐसा पहलू है जिसमें विज्ञान की पहुंच संभव नहीं हुई है। इसलिए आज विज्ञान से संबंधित फीचर लिखने के लिए यह जरूरी हो गया है कि क्षेत्र विशेष का चुनाव पहले से कर लिया जाए। विज्ञान में रुचि रखने मात्र से विज्ञान पर फीचर लिखना संभव नहीं है। जब तक क्षेत्र विशेष में रुचि न हो, उसका गहराई से अध्ययन न हो, उसके बारे में नयी से नयी जानकारी न हो, तब तक उसके बारे में फीचर लेखन गंभीर नहीं हो पाएगा। जरूरी नहीं कि भौतिकी की पढ़ाई कर लेने या उसके कुछ सिद्धांतों के बारे में जान लेने मात्र से कोई व्यक्ति इस योग्य हो जाए कि वह गाड़ियों (ऑटोमोबाइल) के तकनीकी पक्षों की बारीकी से पड़ताल कर सके। इसी तरह जरूरी नहीं कि जीव विज्ञान की पढ़ाई कर लेने मात्र से व्यक्ति क्लोनिंग या वृंत कोशिका (स्टेम सेल) को लेकर किए जा रहे अध्ययन के बारे में सूक्ष्मता से विश्लेषण कर सके। इसलिए विज्ञान फीचर लिखते समय विषय की गहराई से जानकारी होना पहली शर्त है। विज्ञान के विविध क्षेत्रों में से उसी क्षेत्र का चुनाव किया जाना चाहिए जिसमें आपकी जानकारी अधिक हो या जिसके बारे में सामग्री जुटा कर अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करने की क्षमता हो। विज्ञान फीचर मुख्य रूप से तीन क्षेत्रों से संबंधित होते हैं–

1) विज्ञान के विविध क्षेत्रों से संबंधित

2) विज्ञान की सामाजिक उपयोगिता से संबंधित और

3) वैज्ञानिक दृष्टिकोण से संबंधित

9.3.1 विज्ञान के विविध क्षेत्रों से संबंधित

इस प्रकार का फीचर लेखन मुख्य रूप से वैज्ञानिक शोधों, अनुसंधानों और उपलब्धियों के बारे में किया जाता है। आज विज्ञान ने समाज के हर क्षेत्र में अपनी पहुंच बनाई है चाहे उद्योग जगत हो, कृषि, शिक्षा, परिवहन, अंतरिक्ष अनुसंधान का क्षेत्र हो या भूगर्भ अध्ययन या सूचना क्रांति का घरेलू कार्यों में काम आने वाले उपकरणों के निर्माण और उन्हें आसान और सुविधाजनक बनाने के लिए निरंतर प्रयास चल रहे हैं। हर कंपनी अपने उत्पादों में रोज नई–नई सुविधाएं और दूसरी कंपनी के उत्पादों से बेहतर बनाने की होड़ में लगी है। दैनिक उपयोग की हर वस्तु को आरामदेह, आसान और संचालित बनाने के लिए निरंतर शोध और प्रयास हो रहे हैं। विज्ञान फीचर का एक यह भी क्षेत्र हो सकता है कि पहले से आविष्कृत वस्तुओं में सुधार और उनकी क्षमता बढ़ाने की दिशा में जो प्रयास चल रहे हैं उनकी जानकारी और विश्लेषण उपलब्ध कराया जाए।

इसके अलावा विज्ञान फीचर का एक प्रमुख उद्देश्य यह तो होता ही है कि उसके जरिए लोगों को नये वैज्ञानिक शोधों, अनुसंधानों और उपलब्धियों के बारे में जानकारी उपलब्ध कराई जाए। इनमें किसी नए उपकरण की खोज, नए क्षेत्र में चल रहे अनुसंधान या किसी समस्या को सुलझाने की दिशा में हुई वैज्ञानिक खोजों की जानकारी दी जा सकती है। अगर एक नई तरह की गाड़ी बाजार में आने वाली है, कंप्यूटरों में नई सुविधा उपलब्ध कराई गई है, कोई नया सॉफ्टवेयर विकसित किया गया है या कृषि या शिक्षा के क्षेत्र में कोई नया तकनीकी प्रयोग हो रहा है तो उसकी जानकारी लोगों तक पहुँचना जरूरी है। अमेरिकी अंतरिक्ष अनुसंधान एजेंसी नासा और दूसरे देशों के अंतरिक्ष अनुसंधान केंद्र लगातार अंतरिक्ष के अध्ययन में लगे हुए हैं। दूसरे ग्रहों की पर्यावरणिक स्थितियों और वहां पर जीवन की खोज के लिए निरंतर अनुसंधान चल रहे हैं। एक कक्षा में उपग्रह स्थापित कर दूसरे ग्रहों के बारे में जानकारी हासिल करने के प्रयास हो रहे हैं। उपग्रहों से दूसरे ग्रहों के बारे में लगातार जानकारियां हासिल की जा रही हैं। इसी तरह परमाणु ऊर्जा, भूगर्भ भौतिकी, जैव तकनीक और जीवनोपयोगी पदार्थो को लेकर अनुसंधान हो रहे हैं। इन सबकी रोचक जानकारी उपलब्ध कराना विज्ञान का विषय हो सकता है। एक उदाहरण देखें–

''टर्बोचार्जर एक तरह के फोर्स्ड इंडक्शन सिस्टम हैं, जो इंजन में आने वाली हवा को कंप्रेस करते हैं। हवा को कंप्रेस करने का यह फायदा होता है कि इससे सिलिंडर में ज्यादा हवा जा पाती है, जिससे आपकी गाड़ी दूर तक चलती है। कुल मिलाकर यह कहना वाजिब होगा कि टर्बोचार्ज्ड इंजन आम इंजन के मुकाबले ज्यादा पॉवर पैदा करता है। इससे इंजन की वजन सहने की क्षमता में काफी सुधार होता है। इसके लिए टर्बोचार्जर से निकलने वाली हवा के जरिए टर्बाइन को घुमाते हैं। जिससे एयरपंप घूमता है। टर्बोचार्जर की टर्बाइन एक मिनट में एक लाख चक्कर लगाती है। ज्यादातर कारों के इंजनों के मुकाबले यह तीस गुना ज्यादा तेज होती है।''

(क्या है टर्बो, दैनिक जागरण, 29 जून 2005)

विज्ञान के विविध क्षेत्रों से विषयों का चुनाव करते समय यह तय कर लेना जरूरी होता है कि आप किस पर लिखना चाहते हैं। विज्ञान फीचर के लिए विषयों का चुनाव प्रायः निम्नलिखित क्षेत्रों से किया जा सकता है–

भौतिकी	किसी मशीन उपकरण रक्षा सामग्री आदि की जानकारी
रसायन	जीवनोपयोगी, विकास संबंधी, औद्योगिक उपयोग के रसायनों और ऊर्जा साधनों से संबंधित जानकारी।
जीव विज्ञान	जीव प्रजातियों की खोज या उनके संरक्षण या जीव इंजीनियरी के लिए चल रहे प्रयासों की जानकारी
वनस्पति विज्ञान	वानस्पतिक प्रजातियों, सब्जियों, फलों, अनाज आदि की नई प्रजातियों को लेकर हुए अनुसंधानों या वनस्पतियों की लुप्त होती प्रजातियों के बारे में।
भूगर्भ	पृथ्वी के भीतर पाए जाने वाले तत्वों ऊर्जा स्रोतों, भूकंप, ज्वालामुखी, पर्यावरण आदि को लेकर हुए नए शोधों के बारे में
अंतरिक्ष	अंतरिक्ष के दूसरे ग्रहों के बारे में जानकारी जुटाने या उपग्रहों की स्थापना आदि को लेकर हो रहे प्रयास
सूचना तकनीक	संचार माध्यमों में नई तकनीकों को लेकर हुए शोध और अनुसंधान
परिवहन व्यवस्था	नई गाड़ियों और परिवहन व्यवस्था को लेकर हो रहे नए वैज्ञानिक प्रयोग
कृषि	खेती के काम आने वाले नए उपकरणों, खाद, कीटनाशकों आदि के बारे में शोध और विकास की जानकारी
शिक्षा	शिक्षा के क्षेत्र में नए वैज्ञानिक अनुसंधान और प्रयोग, जैसे एडुसेट

9.3.2 विज्ञान की सामाजिक उपयोगिता से संबंधित

इस प्रकार के फीचर में वैज्ञानिक उपलब्धियों का विश्लेषण सामाजिक और मानवीय हितों को ध्यान में रख कर किया जाता है। इस बात से तो लगभग सभी अवगत हो चुके हैं कि कल–कारखानों की संख्या बढ़ने से उनसे निकलने वाली कार्बन डाइ ऑक्साइड और दूसरी जहरीली गैसों से पर्यावरण प्रदूषण बढ़ रहा है। वैश्विक तापमान बढ़ने और मौसम का मिजाज गड़बड़ाने से अतिवर्षा या अवर्षा जैसी समस्याएं उत्पन्न हो गई हैं। खेती योग्य जमीन बंजर हो रही है। पर्यावरणिक संतुलन गड़बड़ा रहा है। इसके चलते कई वन्य– वानस्पतिक प्रजातियां संकट में हैं। वायु प्रदूषण के कारण फेफड़ों, त्वचा और सांस संबंधी अनेक बीमारियां पैदा हो रही हैं। इसके अलावा औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाला गंदा पानी नदियों में मिल कर पीने के पानी के स्रोतों को प्रदूषित कर रहा। भू–जल के बेतहाशा दोहन के कारण पेयजल का संकट गहराता जा रहा है।

फैक्ट्रियों, कारखानों से निकलने वाली गैसों और कचरे का भी आसपास रहने वाले लोगों की सेहत पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। इन समस्याओं को केंद्र में रख कर विश्व स्वास्थ्य संगठन अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग और दूसरे अनेक गैरसरकारी संगठनों अध्ययन समय–समय पर आते रहते हैं। अभी हाल में आई विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के मुताबिक, कल–कारखानों के आसपास के वातावरण में बढ़ते प्रदूषण के कारण वहां पैदा होने वाले बच्चों की मृत्युदर सबसे अधिक है। यही नहीं, सड़कों पर वाहनों की बढ़ती संख्या के कारण महानगरों में लोगों में सांस की बीमारियां और चिड़चिड़ापन, तनाव जैसी परेशानियां पैदा हो रही हैं। यातायात

नियंत्रित करने वाले पुलिसकर्मियों पर भी इसका दुष्प्रभाव देखा जा रहा है। भोपाल गैस त्रासदी को औद्योगिक इकाइयों के सबसे बड़े दुष्परिणाम के रूप में देखा जा सकता है। रक्षा उपकरणों में परमाणु और रासायनिक हथियारों की बढ़ती होड़ के कारण समूची मानव जाति के अस्तित्व का खतरा पैदा हो गया है।

इसलिए वैज्ञानिक उपलब्धियों का जहां सकारात्मक असर मानव जीवन में दिखाई दे रहा है, वहीं इसके कई नकारात्मक प्रभाव भी तेजी से उजागर हो रहे हैं। सामाजिक हितों को ध्यान में रख कर लिखे जाने वाले विज्ञान फीचर का लक्ष्य इसके दोनों पहलुओं पर संतुलित रूप से विश्लेषण होना चाहिए। एक उदाहरण देखें–

''इंटरनेट पर पढ़–देख कर वे लोग अपने लिए किसी भी बीमारी का वहम पाल सकते हैं। ऐसे ज्यादातर लोग किसी न किसी चीज के प्रति ऑब्सेस्ड होते हैं। जैसे कि उन्हें सिर–दर्द की शिकायत हुई और उन्होंने इंटरनेट पर तमाम साइट्स छानना शुरू कर दिया। ऐसे में उन्हें जो जानकारियां मिलेंगी उनसे कोई मदद मिलना तो दूर, उलटे उनकी समस्या जटिल हो जाती है। वे मतिभ्रम के शिकार हो सकते हैं। भ्रम की यह स्थिति उनका सुख–चैन छीन सकती है।''

(इंटरनेट प्रिंटआउट सिंड्रोम, राष्ट्रीय सहारा, 2 जून 2005)

9.3.3 वैज्ञानिक दृष्टिकोण से संबंधित

जैसा कि कहा जा चुका है तमाम वैज्ञानिक खोजों और उपकरणों के प्रचलन में आ जाने के बावजूद हमारे समाज का काफी बड़ा तबका अंधविश्वासों और पारंपरिक उपचार पद्धतियों आदि पर विश्वास करता है। कई सरकारी और गैरसरकारी संस्थाएं इसके उन्मूलन के काम में जुटी हैं, फिर भी बच्चों की बलि, स्त्रियों को चुड़ैल घोषित कर मार डालने, उन पर चारित्रिक लांछन लगा कर सती परीक्षा लेने जैसी घटनाएं अक्सर सामने आती हैं। बच्चों के न होने पर अनेक महिलाएं तांत्रिकों के चंगुल में फंस कर शोषण की शिकार होती हैं।

इस तरह के अंधविश्वासों का बुरा नतीजा यह निकलता है कि अनेक लोग रोगों का सही इलाज न करा पाने के कारण असमय मृत्यु के शिकार हो जाते हैं। तपेदिक जैसी बीमारी से भी, जिसका अब पूरी तरह इलाज संभव है, लोग पारंपरिक उपचार और झाड़–फूंक पर भरोसा करने के कारण मौत के मुंह में भी जाते हैं। यही हाल पोलियो का है। देखा गया है कि पोलियो अभियान में लोगों द्वारा सक्रिय भूमिका न निभा पाने के कारण भी अनेक बच्चे विकलांगता के शिकार हैं। सरकार का लक्ष्य था कि 2004 के अंत तक इस समस्या से पूरी तरह निजात पा लिया जाएगा, लेकिन लोगों की लापरवाही, वैज्ञानिक उपलब्धियों पर भरोसा न करने के कारण पोलियो की दवा पिलाने के लिए खासा अनुत्साह देखा गया। इसलिए इस कार्यक्रम को दो बार छह–छह महीने के लिए आगे बढ़ाना पड़ा। विज्ञान फीचर लेखन का एक मकसद लोगों में वैज्ञानिक दृष्टि पैदा करना भी होता है इसलिए सामाजिक विकृतियों को दूर करने के उद्देश्य से वैज्ञानिक तर्कों और सच्चाइयों को उजागर करने की कोशिश होनी चाहिए।

बोध प्रश्न–1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1) विज्ञान फीचर का क्या उद्देश्य होना चाहिए?

.....

.....

.....

.....

.....

2) विज्ञान फीचर किन–किन पक्षों को लेकर लिखे जा सकते हैं और उनका मकसद क्या होना चाहिए?

.....

.....

.....

.....

.....

3) विज्ञान फीचर के लिए विषय का चुनाव करते समय किन बातों का ध्यान रखना जरूरी होता है?

.....

.....

.....

.....

.....

9.4 पर्यावरण से संबंधित फीचर : विषय चयन, लेखन और प्रस्तुति

वैज्ञानिक शोधों, अनुसंधानों और उपलब्धियों के चलते जहां दैनिक जीवन में अनेक सुविधाएं प्राप्त हुई हैं वहीं औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाले रासायनिक धुएं, कचरे, गंदे पानी और शोर के कारण वायु, ध्वनि और भू–प्रदूषण काफी तेजी से बढ़ा है। औद्योगिक इकाइयों के आसपास के इलाकों में रहने वाले लोगों को फेफड़ों, सांस और त्वचा संबंधी अनेक समस्याएं पैदा हुई हैं। पर्यावरण प्रदूषण के कई कारण हैं, जिनमें एक कारण बढ़ती जनसंख्या भी है। जनसंख्या बढ़ने से लोगों के रहने के लिए घर, भोजन के लिए खाद्य उत्पादन और दूसरी सुविधाओं की आवश्यकता भी लगातार बढ़ी है। इसके चलते लगातार जंगल कट रहे हैं। अनेक वनस्पतियां, पेड़–पौधे और वन्य जीवों का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है। हमारा पारिस्थितिकी संतुलन गड़बड़ा रहा है। कंकरीट के मकानों और सड़कों का विस्तार हो रहा है। धरती की सतह का

काफी बड़ा हिस्सा कंकरीट से ढक रहा है जिससे वर्षा जल का अधिकांश हिस्सा जमीन के भीतर जाने की बजाय बह कर व्यर्थ चला जाता है। औद्योगिक इकाइयां और वाहनों की संख्या लगातार बढ़ रही है। इससे पर्यावरण प्रदूषण बढ़ रहा है। वातावरण में अनेक रासायनिक गैसों के घुलने से प्राकृतिक गैसें नष्ट हो रही हैं जिसका प्रभाव हमारे मौसम पर पड़ रहा है। इससे वैश्विक तापमान बढ़ रहा है सूर्य की घातक किरणों को थामने वाली ओजोन की परत क्षरित हो रही है। इसके अलावा कृषि उत्पादन को बढ़ाने के उद्देश्य से खाद को लेकर नए–नए प्रयोग हो रहे हैं। लेकिन इसका परिणाम यह हुआ है कि उत्पादन में तो जरूर कुछ बढ़ोतरी हुई है मगर जमीन की उर्वरा शक्ति पर बुरा प्रभाव पड़ा है।

इन समस्याओं और परेशानियों को देखते हुए पर्यावरण प्रदूषण को रोकने और पारिस्थितिकी संतुलन को कायम करने के लिए पिछले कुछ समय से लगातार प्रयास हो रहे हैं। दुनिया के ज्यादातर देशों ने एकजुट होकर पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के लिए एक साझा समझौते पर हस्ताक्षर किये हैं और अगले कुछ सालों में इसमें कमी लाने का संकल्प लिया है। इससे संबंधित कानून बनाए गए हैं और इनका पालन न करने वाली औद्योगिक इकाइयों को दंडित करने का प्रावधान भी है। मगर अब भी अधिकांश लोग पर्यावरण प्रदूषण को दूर करने और पारिस्थितिकी संतुलन बनाए रखने को लेकर पर्याप्त जागरूक नहीं हो पाए हैं। इसके लिए सरकारी स्तर पर तो जनजागरूकता अभियान चलाए ही जा रहे हैं। कई स्वयंसेवी और नागरिक संगठन इस दिशा में सराहनीय काम कर रहे हैं। पंचायतें और स्थानीय निकाय भी इसमें काफी मददगार साबित हो रही हैं।

पर्यावरण संबंधी फीचर लेखन के मुख्य रूप से तीन क्षेत्रों से विषय चुने जा सकते हैं :

1) पर्यावरण प्रदूषण सम्बन्धी फीचर
2) पारिस्थितिकी संतुलन सम्बन्धी फीचर
3) पर्यावरण जागरूकता संबंधी

9.4.1 पर्यावरण प्रदूषण

इस प्रकार के फीचर लेखन में मुख्य रूप से औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाले धुएं, गैसों, कचरे, गंदे पानी और घरेलू कचरे से उत्पन्न होने वाली स्वास्थ्य और आसपास के वातावरण संबंधी समस्याओं के बारे में जानकारी प्रदान की जाती है। जैसा कि आप जानते हैं, तेजी से हो रहे औद्योगिक और शहरी विकास में प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन बढ़ा है। पेड़ों–पर्वतो की कटाई में तेजी आई है। नदियों में औद्योगिक कचरा बढ़ता जा रहा है जिससे उनमें गाद भरती जा रही है और उनकी जल संग्रहण क्षमता लगातार कम हुई है। इसका नतीजा यह हुआ है कि बरसात के समय में बाढ़ से अक्सर तबाही देखी जाती है और इसके उलट साल भर पेय जल का संकट बना रहता है। गुजरात, महाराष्ट्र और बिहार में आई बाढ़ इसके ताजा उदाहरण हैं। भू–जल का दोहन लगातार बढ़ने से नलकूपों से पानी निकालना मुश्किल होता जा रहा है। पानी के प्राकृतिक स्रोत सूखते जा रहे हैं।

इतना ही नहीं, औद्योगिक कचरा गिरने से नदियों के पानी में आवश्यक घुलनशीलता नष्ट होती जा रही है जिससे वह न सिर्फ पीने योग्य नहीं रह गया है बल्कि उसमें पलने वाले जीवों का जीवन भी खतरे में है। जब यही पानी समुद्र में जाकर मिलता है तो उसके जीव–जंतुओं पर भी इसका प्रतिकूल असर पड़ता है। वैसे अब यह कानून

बन चुका है कि हर औद्योगिक इकाई को जल शोधक यंत्र लगाना अनिवार्य है। बिना शोधन औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाले पानी को नदियों में गिराने की इजाजत नहीं दी जा सकती, लेकिन काफी बड़ी संख्या में औद्योगिक इकाइयां इस नियम का पालन नहीं करतीं। जो कल–कारखाने अवैध रूप से चलाए जा रहे हैं, इसमें उनके सहयोग की तो उम्मीद ही नहीं की जा सकती। यहां तक कि सरकार ने घरेलू मल को भी नदियों में गिरने से रोकने के लिए कई उपाय करने के दावे किए थे। गंगा कार्य योजना पर करोड़ों रुपए अब तक खर्च किए जा चुके हैं, मगर न तो नदियों की गाद कम हुई है और न ही उनकी गंदगी।

प्रदूषण न सिर्फ नदियों तक सीमित है, बल्कि यह वायु और हमारे आसपास के वातावरण में शोर के रूप में भी तेजी से बढ़ रहा है। फैक्टरियों से निकलने वाले धुएं और जहरीली गैसों के वातावरण में मिलने से जहां कार्बन डाइ ऑक्साइड की मात्रा बढ़ रही है और जरूरी ऑक्सीजन की मात्रा कम हो रही है वहीं हमारे सांस लेने के लिए हवा में जरूरी गैसों की मात्रा कम हो रही है। इससे मनुष्य में फेफड़े और चर्म संबंधी रोग बढ़ रहे हैं और पारिस्थितिकी संतुलन भी गड़बड़ा रहा है। वायु प्रदूषण से तपेदिक जैसे रोगों की शिकायतें आम हो गई हैं, फैक्टरियों के आसपास के इलाकों में शिशु और मातृ मृत्यु दर बढ़ी है।

उदारीकरण के इस दौर में उद्योग–धंधों को बढ़ावा देने की कोशिश में वाहनों की संख्या में भी उत्तरोत्तर बढ़ोतरी हुई है। यह निजी और सार्वजनिक दोनों वाहनों के स्तर पर देखी गई है। माल ढुलाई के अलावा परिवहन की बढ़ती परेशानियों के मद्देनजर रोज नए वाहन सड़कों पर उतर रहे हैं। राजधानी दिल्ली के एक आंकड़े के मुताबिक यहां की सड़कों पर हर साल करीब दो लाख नए वाहन उतरते हैं। इससे यातायात की रफ्तार तो धीमी हुई ही है, इनसे निकलने वाले धुएं और शोर से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ रहा है। सर्वोच्च न्यायालय के आदेश पर कुछ साल पहले दिल्ली सरकार ने बसों और ट्रकों में डीजल के स्थान पर प्राकृतिक गैस का इस्तेमाल अनिवार्य कर दिया था। इसी तरह निजी चौपहिया और दुपहिया वाहनों में सीसा रहित पेट्रोल का इस्तेमाल जरूरी कर दिया गया था। पंद्रह साल से अधिक पुराने वाहनों को सड़कों से हटा दिया गया था। इससे शहर के प्रदूषण में काफी कमी दर्ज हुई थी, मगर वाहनों की निरंतर बढ़ती तादाद के कारण इस स्तर को बनाए रखना आसान नहीं रह गया है। वाहनों और फैक्टरियों की संख्या बढ़ने से सड़कों और रिहाइशी इलाकों में शोर का वातावरण बना रहता है। इससे लोगों में तनाव और चिड़चिड़ेपन की शिकायतें बढ़ रही हैं। यातायात पुलिसकर्मियों में यह शिकायत अधिक देखी गई है। उनमें से कइयों में हर साल मानसिक विक्षिप्तता की शिकायतें भी दर्ज होती हैं।

औद्योगिक इकाइयों और वाहनों से निकलने वाले धुएं, गैसों और कचरे के अलावा घरेलू कचरा भी पर्यावरण प्रदूषण का एक बहुत बड़ा कारक है। खाद्य सामग्री को देर तक सुरक्षित रखने के मकसद से वस्तुओं को प्लास्टिक की थैलियों में बंद करके बेचने का प्रचलन बढ़ा है। इसके अलावा लोग पहले बाजार से सामान लाने के लिए कपड़े या जूट के थैलों का इस्तेमाल करते थे, मगर अब वह प्रचलन धीरे–धीरे खत्म हो गया है और लोगों में प्लास्टिक के थैलों के इस्तेमाल का फैशन बढ़ा है। बाजार में दुकानदार खुद प्लास्टिक की थैलियों में सामान भर कर दे देते हैं। इससे लोगों के थैले लेकर बाजार जाने की आदत छूट सी गई है। लेकिन अब यह तथ्य हमारे सामने आ चुका है कि प्लास्टिक एक अगलनशील जैविक है, जो जमीन में बरसों पड़े रह

कर भी नहीं गलता। इससे न सिर्फ जमीन की उर्वरा शक्ति नष्ट होती है, बल्कि वायु प्रदूषण भी बढ़ता है। भूजल में इसके रसायन मिल कर उसे भी प्रदूषित करते हैं। इसके अलावा घरों से निकलने वाले कचरे में, सब्जियों के छिलके या बचे हुए खाद्य पदार्थ चूंकि गलनशील जैविक होने के कारण आसानी से गल जाते हैं, मगर प्लास्टिक और कांच से बनी अनेक वस्तुएं जो इस्तेमाल के बाद फेंक दी जाती हैं, जमीन में पड़े रह कर भी नहीं गलतीं।

इसी तरह अस्पतालों से रोज भारी मात्रा में अगलनशील पदार्थ निकलते हैं। दवाइयों की प्लास्टिक की बोतलें–शीशियां, सुइयां और खून की थैलियां आदि इसी कोटि में आती हैं। तमाम सरकारी प्रयासों को बावजूद अस्पतालों से निकलने वाले कचरे का सही तरीके से निपटान नहीं हो पाता। इसका दुष्प्रभाव यह पड़ता है कि इससे न सिर्फ वायु और भू–प्रदूषण बढ़ता है बल्कि अनेक तरह की संक्रामक और असंक्रामक बीमारियां भी पैदा होती हैं। प्लास्टिक की वस्तुओं के इस्तेमाल को रोकने के लिए सरकारी और अनेक गैर सरकारी संस्थाएं लोगों में जागरूकता पैदा करने की कोशिश कर रही हैं। अगलन पदार्थों के सही तरीके से निपटान की विधियां अमल में ला रही हैं, लेकिन इसमें अपेक्षित सफलता मिलती नजर नहीं आती।

जीन अभियांत्रिकी भी पर्यावरण प्रदूषण को बढ़ाने में काफी बड़ी भूमिका निभा रही है। अधिक अन्न उपजाने के आंदोलन के तहत खाद और बीजों पर जो शोध की प्रक्रिया शुरू हुई थी उससे निस्संदेह कृषि उपज को बढ़ावा मिला है, लेकिन जीन से बीज विकसित करने की इधर जो प्रक्रिया शुरू हुई है उसने कृषि योग्य भूमि की उर्वरा शक्ति को लगातार कमजोर किया है। एक जलवायु में पैदा होने वाले अनाज के बीज दूसरी जलवायु जाकर नई तरह की परेशानियां पैदा करते हैं। कम समय में अधिक फसल उगाने की होड़ में बीजों की शक्ति तो नष्ट हुई ही है, इनके स्वाद पर भी प्रतिकूल असर पड़ा है। गोबर और पौधों से तैयार की जाने वाली कंपोस्ट खाद की जगह रासायनिक खादों के प्रचलन से भी भूमि का उपजाऊपन नष्ट हो रहा है। यही नहीं, इन उर्वरकों और कीटनाशक रसायनों के अधिकाधिक इस्तेमाल से अनाज और फल–सब्जियों में रोग पैदा करने वाले तत्त्व पाए जाने लगे हैं। इन्हीं परेशानियों को ध्यान में रखते हुए हालांकि पिछले कुछ समय से जैविक खेती पर बल दिया जाने लगा है, लेकिन खेती में मशीनों के इस्तेमाल का प्रचलन बढ़ने से किसानों के पास पशुधन की खासी कमी हुई है। इसलिए उनसे प्राप्त होने वाला गोबर और खाद बहुत कम मात्रा में उपलब्ध हो पाते हैं। जिस जमीन की उर्वरा शक्ति रासायनिक खादों की वजह से छिन चुकी है उसे वापस लौटाना काफी समय साध्य प्रक्रिया है। किसान फिर से जैविक खेती की तरफ लौट पाएं इसके लिए बड़े पैमाने पर कोशिश करने की जरूरत है।

इस तरह पर्यावरण प्रदूषण हमारे जीवन में हर स्तर पर अपनी जगह बना चुका है। पर्यावरण प्रदूषण संबंधी फीचर लिखते समय इसके सभी पहलुओं का बारीकी से अध्ययन करना जरूरी है। इसके लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण और विश्लेषण क्षमता की जरूरत है। इसलिए पर्यावरण प्रदूषण पर फीचर लिखते समय लेखक को अलग–अलग क्षेत्रों और उनमें होने वाली परेशानियों की पहचान आवश्यक है। अगर कोई औद्योगिक प्रदूषण के बारे में लिखना चाहता है तो जरूरी नहीं कि उसका अध्ययन कृषि क्षेत्र में फैल रहे प्रदूषण पर फीचर लिखते समय भी काम आए। इसलिए इसमें भी अलग–अलग क्षेत्रों के हिसाब से विशेषज्ञता की जरूरत महसूस की जाने लगी है। अनेक स्वयंसेवी संगठन इन समस्याओं पर काम कर रहे हैं और परेशानियों

का अध्ययन–विश्लेषण कर समाधान निकालने के प्रयास में जुटे हैं। पर्यावरण प्रदूषण संबंधी फीचर लिखते समय इन संस्थाओं के अध्ययन विश्लेषण काफी सहायक सिद्ध हो सकते हैं। उदाहरण के *लिए –*

''अयोध्या आने वाले हजारों श्रद्धालु जिस सरयू (घाघरा) को पावन सलिला समझ कर हर रोज डुबकी लगाते हैं, उसका जल पीने को कौन कहे, नहाने के लायकभी नहीं है। .....नदी के तटवर्ती इलाकों में बसे शहरों का हजारों टन जैविक एवं औद्योगिक अवशिष्ट बिना किसी शोधन संयंत्र से गुजारे प्रतिदिन सीधे प्रवाहित कर दिया जाता है जिसका परिणाम यह हुआ है कि जल का पीएच मान बीओडी तथा सीओडी का स्तर, घुलित ऑक्सीजन की मात्रा, जल की कठोरता तथा पारदर्शिता मानक के अनुरूप नहीं रह गई है।...जल में घुलित फॉस्फोरस नाइट्रेट्स की मात्रा भी मानक से कई गुना अधिक है जो नदी में स्नान करने वालों की त्वचा के लिए हानिकारक है। प्रदूषित जल कई तरह के संक्रामक रोगों का भी संवाहक बन गया है।''

(यहां भी खतरे की घंटीः राजेंद्रप्रसाद पांडेय– सहारा समय, 11 जून 2005)

9.4.2 पारिस्थितिकी संतुलन

पारिस्थितिकी संतुलन बिगड़ने का भी एक बड़ा कारण बढ़ता पर्यावरण प्रदूषण है। औद्योगिक इकाइयों, वाहनों और रासायनिक कचरे के कारण जहां वनस्पतियों के विकास पर प्रतिकूल असर पड़ता है वहीं इससे कई वनस्पतियों का अस्तित्व समाप्त हो रहा है। बढ़ते प्रदूषण के कारण मौसम का मिजाज गड़बड़ा रहा है। कहीं अधिक वर्षा होती है तो कहीं सूखा पड़ा रहता है। वायुमंडल में रासायनिक जहरीली गैसों की मात्रा बढ़ने से कई प्राकृतिक गैसें नष्ट हो रही हैं। इससे ग्रीन हाउस गैसों की मात्रा निरंतर घट रही है। ओजोन परत में छेद होने और तेजाबी वर्षा के खतरे बढ़ गए हैं।

आप जानते ही हैं कि प्रकृति का हर प्राणी हर वनस्पति एक दूसरे पर निर्भर हैं। इनमें से एक प्रजाति के भी नष्ट होने से पूरा जीवन और ऋतु चक्र प्रभावित होता है। पिछले कुछ दशकों में तेजी से शहरीकरण के कारण जंगल कट रहे हैं, पहाड़ तोड़े जा रहे हैं इससे वन्यजीवों की कई प्रजातियां नष्ट हो गई हैं, कई दुर्लभ प्रजाति की श्रेणी में आ गई हैं और जो बचे हैं उनका अस्तित्व खतरे में है। कीड़े–मकोड़ों और पशु–पक्षियों का हमारे जीवन में महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। खेती में केंचुए और इसके कीड़े जमीन को ऊर्वर बनाए रखने में मदद करते हैं। गिद्ध और कौए जैसे पक्षी मृत पशुओं को खाकर वातावरण को साफ रखते हैं, लेकिन अब इनकी प्रजाति नष्ट हो रही है। पहले गिद्ध और कौए सहज ही दीख जाया करते थे, अब वे कहीं–कहीं दिखते हैं। गिद्ध तो लुप्त होती प्रजाति के अंतर्गत आ गया है। इसी तरह कई प्रकार के पक्षी नष्ट हो रहे हैं। इसकी वजह बिगड़ता पारिस्थितिकी संतुलन है। दूसरे रासायनिक कीटनाशकों और उर्वरकों के कारण भी कई कीड़े–मकोड़े नष्ट हो चुके हैं। इसी तरह कई औषधीय वनस्पतियां नष्ट हो गई हैं। कई पेड़–पौधों के लिए अनुकूल वातावरण नहीं रह गया है। कृषि पर इसका प्रभाव पड़ रहा है। पेड़ों और पहाड़ों के कटने से भूस्खलन के खतरे बढ़े हैं।

हालांकि सरकारी और गैरसरकारी संस्थाएं वन्य जीव संरक्षण की दिशा में सराहनीय कार्य कर रही हैं, लेकिन दिनों–दिन बढ़ती जरूरतों के लिहाज से लकड़ी, पत्थर और खनिजों के तस्कर चोरी–छिपे जंगलों–पहाड़ों को नष्ट करने पर तुले हुए हैं। सजावटी वस्तुओं के निर्माण, अंधविश्वासी लोगों और कुछ औषधि निर्माताओं की मांग पर शेर,

चीते, तेंदुए, हिरन जैसे दुर्लभ वन्य जीवों का शिकार कर रहे हैं। यही कारण है कि कई अभ्यारण्यों से शेर और चीते बिल्कुल गायब हो चुके हैं। इसके लिए पर्यटकों को लुभाने के मकसद से वन क्षेत्र में बनाए जा रहे होटल और अतिथि गृह भी काफी हद तक जिम्मेदार हैं। केंद्र सरकार की पहल पर अम्यारण्यों को अधिक सुरक्षित बनाए जाने की दिशा में काफी कारगर कदम उठाए जा रहे हैं। पारिस्थितिकी संबंधी फीचर लिखने के लिए इन तमाम बातों की जानकारी जरूरी है।

9.4.3 पर्यावरण जागरुकता संबंधी फीचर

पर्यावरण संबंधी जागरूकता पैदा करने की दिशा में कई सरकारी और गैरसरकारी संगठन काफी समय से प्रयासरत हैं, विद्यालयों में पर्यावरण शिक्षा पर जोर दिया जा रहा है लेकिन इसका अपेक्षित परिणाम नजर नहीं आ रहा। जैसा कि हमने ऊपर कहा है, दुनिया के अधिकांश देश पर्यावरण प्रदूषण को कम करने और पारिस्थितिकी संतुलन कायम करने के मकसद से एकजुट होकर प्रयास कर रहे हैं। औद्योगिक विकास के साथ–साथ उन तकनीकी पक्षों पर भी ध्यान दिया जा रहा है जिससे पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभाव को रोका जा सके। लेकिन पर्यावरण के प्रति जब तक जमीनी स्तर पर जागरूकता पैदा नहीं होती, साधारण जनता में इसके प्रति सजगता का भाव पैदा नहीं होता, इस समस्या से निपटना आसान नहीं होगा। पर्यावरण संबंधी फीचर लिखने वालों की यह बड़ी जिम्मेदारी बनती है कि वे समस्याओं को उठाते हुए उनके प्रति लोगों में सजगता पैदा करें। कई बार सिर्फ समस्याओं को सामने रख देने भर से लोगों में उसके प्रति जागरूकता नहीं आ पाती इसलिए उसके उपायों पर भी प्रकाश डालना जरूरी हो जाता है। पर्यावरण और पारिस्थितिकी के संबंध में फीचर लिखने वालों की यह जिम्मेदारी बनती है कि वे इस दिशा में दुनिया भर में चल रहे प्रयासों के बारे में भी जानकारी उपलब्ध कराएं।

बोध प्रश्न–2

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1) पर्यावरण प्रदूषण बढ़ने के क्या दुष्प्रभाव सामने आए हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) पारिस्थितिकी संतुलन बिगड़ने के कारण हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ रहा है?

.....

.....

.....

.....

.....

3) पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करने में फीचर के जरिए क्या मदद की जा सकती है?

.....

.....

.....

.....

.....

9.5 स्वास्थ्य संबंधी फीचर : विषय का चयन, लेखन और प्रस्तुति

पिछले पचास साल का इतिहास देखें तो विज्ञान ने अगर किसी क्षेत्र में सबसे अधिक सकारात्मक उपलब्धियां हासिल की हैं तो वह है चिकित्सा विज्ञान। अनेक बीमारियों के कारणों के बारे में जानकारी न होने, उनके उपचार की पद्धतियों और दवाओं की खोज न होने के कारण अक्सर महामारी से हजारों लोग मौत के मुंह में समा जाते थे। चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में निरंतर शोधों के कारण अनेक रोगों पर विजय प्राप्त की जा चुकी है। गंदगी के कारण हमारे देश में चेचक, कालाजार, तपेदिक आदि संक्रामक रोगों के कारण लोग मरते थे। अब इनके टीके उपलब्ध हो जाने के कारण बच्चे के पैदा होने के साथ ही पोलियो, टिटनेस, डिप्थीरिया, चेचक या पानी के कारण होने वाली हेपेटाइटिस यानि पीलिया आदि के टीके लगा कर जीवन भर के लिए इन रोगों से मुक्ति पा ली जाती है। चेचक अब लगभग समाप्त है। तपेदिक का आसानी से इलाज संभव है।

चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में निरंतर शोधों से जहां रोगों के इलाज में सुविधा हुई है वहीं लोगों की अज्ञानता के कारण जो बीमारियां फैलती थीं उन पर भी काफी हद तक रोक लगी है। पहले बच्चा पैदा होने पर अस्पताल की दाई की मदद लेने की बजाय लोग गांव की अप्रशिक्षित दाई से नाल कटवा लिया करते थे जिससे जच्चा–बच्चा दोनों को टिटनेस का खतरा होता था। इसी तरह अनेक प्रकार के अंधविश्वासों के कारण लोग इलाज करवाने की बजाय झाड़–फूंक, गंडा–तावीज, तंत्र–मंत्र आदि पर अधिक भरोसा करते थे। चिकित्सा विज्ञान के शोधों और स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रमों के कारण लोगों में स्वच्छता, पोषण, नियमित जांच आदि के प्रति काफी सजगता आई है। कस्बों में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों के खुल जाने से ग्रामीण लोग झाड़–फूंक, टोने–टोटके और पारंपरिक उपचार पद्धतियों की बजाय चिकित्सा व्यवस्था पर भरोसा करने लगे हैं।

मगर अब भी इस दिशा में पूरी तरह सफलता नहीं मिल पाई है। बढ़ती आबादी के अनुरूप सभी के लिए सार्वजनिक स्वास्थ्य सुविधाएं मुहैया कराना एक कड़ी चुनौती है। वर्ष 2005 में केंद्र सरकार के राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन की शुरुआत से सभी गावों में स्वास्थ्य सुविधाएं पहुंचने और खासकर महिलाओं और बच्चों की देखभाल में खासी उम्मीद जगी है। दूरदराज के इलाकों में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों के न होने से जहां लोगों में स्वास्थ्य के प्रति अपेक्षित जागरूकता नहीं आ पा रही थी वहीं उनमें पारंपरिक उपचार पद्धतियों पर भरोसा और अंधविश्वासों को दूर कर पाना मुश्किल हो रहा था। ग्रामीण महिलाओं में व्यक्तिगत स्वच्छता, पोषाहार के प्रति लापरवाही और

बच्चों को पालने में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अभाव कई बीमारियों का कारण बन रहा था। इससे असमय मृत्यु की दर में भी काफी बढ़ोतरी देखी गई। लेकिन स्वास्थ्य केंद्रों में भी जरूरी दवाइयों और जांच–उपचार आदि में काम आने वाले जरूरी उपकरणों का अभाव लोगों में सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं के प्रति अविश्वास का कारण बन रहे हैं। इन कमियों को दूर करने के लिए केंद्र और राज्य सरकारें हर संभव कोशिश कर रही हैं।

हालांकि औद्योगिक इकाइयों, वाहनों, कृषि में हो रहे रासायनिक खाद–कीटनाशकों और बीजों के प्रयोग से कई नई बीमारियों का जन्म हुआ है, लेकिन चिकित्सा विज्ञानियों ने इन रोगों के उपचार के लिए जिस तरह तत्परता दिखाई है उससे काफी उम्मीदें जगी हैं। पिछले दिनों कुछ महानगरों में गंदे इलाकों में उगने वाली सब्जियों और फलों में पाए जाने वाले कीटाणुओं से दिमागी बुखार के प्रकोप की खबरें खूब छाई रहीं, लेकिन चिकित्सकों ने बहुत कम समय में उसका निदान तलाश लिया। केंद्र सरकार ने वर्ष 2005 में संक्रामक और असंक्रामक रोगों के कारणों पर नजर रखने, उनके इलाज और टीकों पर शोध के लिए अलग से आयोग गठित करने को मंजूरी दी। इससे आने वाले दिनों में कई रोगों के पैदा होने से पहले उनके रोकथाम के उपाय करने में सुविधा होगी।

हालांकि अब भी कैंसर और एड्स जैसे जानलेवा रोगों का अचूक इलाज तलाश पाना चिकित्सा विज्ञानियों के लिए चुनौती बना हुआ है, मगर दुनिया भर में जिस तरह इसके लिए प्रयास चल रहे हैं और इनसे बचने के उपायों पर जनजागरूकता अभियान चलाए जा रहे हैं उससे चिकित्सा विज्ञान में भरोसा बढ़ा है। हृदय रोग के मामले में पहले जहां बाइपास सर्जरी एकमात्र इलाज था, पर अब उसकी जगह हृदय प्रत्यारोपण और वृंत कोशिका (स्टेम सेल) के जरिए मृत कोशिकाओं को पुनर्जीवित की पद्धति तलाश कर ली गई है। वृंत कोशिका के प्रत्यारोपण से कई रोगों पर भी फिर से विजय प्राप्त की जा सकती है। यह प्रक्रिया भारत में भी कई लोगों पर आजमाई जा चुकी है।

बदलते खानपान और तनावभरी जिंदगी के कारण भी स्वास्थ्य संबंधी कई तरह की अनियमितताएं (डिसॉर्डर्स) सहज ही पैदा हो रहे हैं। नए रोग पैदा हो रहे हैं। इनमें से कुछ तो पारिस्थितिकी असंतुलन के कारण और कई मनुष्य की लापरवाही के कारण हो रहे हैं। मनुष्य की लापरवाही से पैदा होने वाले रोगों से बचने का सबसे आसान तरीका सजगता है। इसके लिए सरकारी और गैर–सरकारी संस्थाएं लगातार जागरूकता अभियान चला रही हैं। अगर उनके उपायों पर ध्यान दें तो कई रोगों और स्वास्थ्य संबंधी अनियमितताओं से बचा जा सकता है।

इस प्रकार स्वास्थ्य संबंधी फीचर लिखने वाले की जिम्मेदारी बनती है कि वह रोगों के बारे में तो जानकारी रखे ही, उन उपायों, शोधों और उपचार पद्धतियों की भी जानकारी रखे जो लगातार हमारे सामने आ रही हैं। स्वास्थ्य संबंधी फीचर के लिए विषय का चुनाव करते समय इसके क्षेत्रों का निर्धारण पहले कर लेना जरूरी होता है। इसमें रोगों की पहचान, उनके उपचार और रोकथाम के नए तरीकों और शोधों के बारे में जानकारी देना तो जरूरी है ही, लोगों में रोगों के बारे में आगाह करने, उनसे बचने के उपायों और स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता पैदा करने की भी जरूरत है। हमारे देश में आज भी हर साल हजारों माताएं और बच्चे खानपान का ध्यान न रखने, गर्भावस्था के दौरान नियमित जांच न कराने और जरूरी एहतियात न बरतने के कारण असमय मृत्यु

को प्राप्त हो जाते हैं। सामान्य बीमारियों में भी टोने–टोटके और झाड़–फूंक पर अधिक विश्वास करने की वजह से लोग असाध्य रोगों के शिकार हो जाते हैं। इन सबके बारे में लोगों को जागरूक करना स्वास्थ्य संबंधी फीचर लिखने वाले की बड़ी जिम्मेदारी है। एक उदाहरण देखें –

''भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद के 2001 में करवाए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार देश भर में तेरह साल की उम्र के बच्चों में से 12.8 प्रतिशत व्यवहार संबंधी किसी न किसी समस्या से ग्रस्त थे। मनोचिकित्सकों का कहना है कि आज स्कूल जाने वाले हर सौ बच्चों में से चौदह ऐसे हैं जिन्हें मनोचिकित्सक के पास जाने की जरूरत है। बढ़ते अकादमिक दबाव, मशीनीकरण, पुराने मूल्यों से मोहभंग और मानसिक दबाव बढ़ने का परिणाम यह हुआ है कि आज बच्चों की पूरी पीढ़ी भ्रम तथा जटिलताओं के पेच में उलझी दिखती है। इन समस्याओं के मूल में बच्चों के लालन–पालन का तरीका है। बहुत ज्यादा उपेक्षा या बहुत ज्यादा सुविधाएं उपलब्ध करवाना बच्चों के लिए खतरनाक है।''

(अवसाद में मासूम नेहा शर्मा– सहारा समय, 13 अगस्त 2005)

बोध प्रश्न 3

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1) स्वास्थ्य संबंधी अनियमितताओं के मुख्य रूप से क्या कारण रहे हैं? इनसे किस प्रकार निपटा जा सकता है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) स्वास्थ्य संबंधी फीचर लेखन के लिए विषय का चुनाव करते समय किन बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है?

.....

.....

.....

.....

.....

9.6 भाषा–शैली

विज्ञान, पर्यावरण और चिकित्सा संबंधी फीचर लेखन चूंकि तकनीकी विषयों पर आधारित है इसलिए इसमें साहित्यिक लेखन की तरह कल्पना, मुहावरेदारी और लालित्य की गुंजाइश कम रहती है। तकनीकी शब्दावली का प्रयोग अधिक होता है। इसमें कल्पना के स्थान पर तथ्य महत्त्वपूर्ण होते हैं इसलिए जिस भी विषय को लिखने

के लिए चुनें, उसका विस्तार और गंभीरता से अध्ययन करें। उस पर भरपूर सामग्री जुटाएं। इन क्षेत्रों में दुनिया भर में रोज नए प्रयोग हो रहे हैं, खोजें हो रही हैं। इन सबके बारे में अब पत्र–पत्रिकाएं खासी सजग दिखाई देती हैं। उनसे आंकड़े तो उपलब्ध होंगे ही, इंटरनेट पर भी काफी सामग्री उपलब्ध होती है। जिन क्षेत्रों के बारे में आप जानकारी उपलब्ध कराना चाहते हैं उनसे संबंधित वेबसाइटों की जानकारी रखें और अगर नहीं भी है तो किसी वेबसाइट के सर्च इंजन में जाकर अपने विषय के बारे में जानकारी मांगें। वहां से संबंधित विभिन्न वेबसाइटों के पते उपलब्ध हो जाएंगे। उन पर जाकर जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

इसके अलावा सरकारी, गैरसरकारी संस्थाओं द्वारा किए गए अध्ययनों के निष्कर्ष और आंकड़ों को भी जुटाया जाना चाहिए। जहां जरूरत हो वहां संबंधित क्षेत्र के विशेषज्ञों से संपर्क करके उनका साक्षात्कार लिया जा सकता है और संबंधित विषय पर विस्तृत जानकारी प्राप्त की जा सकती है। संभव हो तो संबंधित विषय के स्रोत तक पहुंचने की भी कोशिश की जानी चाहिए। जैसे, अगर आप फैक्टरियों से निकलने वाले गंदे पानी के दुष्प्रभाव के बारे में फीचर लिख रहे हैं तो किसी औद्योगिक इलाके का दौरा कर सकते हैं और वहां की जल निकासी व्यवस्था खुद देख कर औद्योगिक इलाकों में रहने और काम करने वाले लोगों से बातचीत कर सकते हैं। पीड़ित व्यक्तियों के अनुभव भी ले सकते हैं। इस क्षेत्र के विशेषज्ञों की राय ले सकते हैं और अगर कोई संस्था काम कर रही है तो उससे संबंधित आंकड़े उपलब्ध कर सकते हैं। यह सब तभी संभव है जब आपकी उस क्षेत्र विशेष में गहरी रुचि हो।

विज्ञान, पर्यावरण और चिकित्सा से संबंधित विषयों पर फीचर लिखते समय भाषा में तकनीकी शब्दों के इस्तेमाल से परहेज नहीं किया जा सकता लेकिन उन शब्दों की विस्तार से व्याख्या की भी जरूरत होती है ताकि सामान्य पाठक उसके बारे में आसानी से समझ सके। चूंकि वैज्ञानिक शब्दावली अधिकांश अंग्रेजी में होती है और ज्यादातर के लिए ठीक–ठीक हिंदी शब्द न तो गढ़े जा सकते हैं और न ही वे सामान्य लोगों की बातचीत में या प्रचलन में आ पाए हैं इसलिए उनकी व्याख्या जरूरी होती है। जैसे, मनोविज्ञान की एक शब्दावली है 'अटेंशन डेफिसिट हाइपरएक्टिविटी डिसॉर्डर एडीएचएडी'। इसे हिंदी में कहा जा सकता है कि किसी काम में ध्यान न केंद्रित कर पाने की समस्या। इससे सामान्य पाठक भी इस समस्या के बारे में आसानी से समझ सकता है। एड्स जैसे रोगों के बारे में लगातार प्रचार होते रहने के कारण अब लोग इसके पूरे नाम को जानने की बजाय संक्षिप्त नाम से ही जानने लगे हैं। इसलिए ऐसी शब्दावली का जस का तस प्रयोग किया जा सकता है, लेकिन जिन नामों के बारे में लोग अभी जान नहीं पाए हैं उनकी व्याख्या जरूरी होती है।

विज्ञान, पर्यावरण और चिकित्सा संबंधी विषयों की प्रस्तुति में भाषा को बहुत मुहावरेदार या कलात्मक बनाने की आवश्यकता नहीं होती, लेकिन इस बात का ध्यान रखना होता है कि आप जो बातें कहना चाहते हैं उसे बोलचाल की भाषा में सहजता से प्रस्तुत कर सकें चूंकि फीचर का कोई एक निर्धारित ढांचा नहीं होता इसलिए बातों को सरस–सरल तरीके से प्रस्तुत करने के लिए उसमें कविताओं, लोकोक्तियों, किसी पौराणिक कथा, साक्षात्कार, अनुभव आदि का सहारा लिया जा सकता है। यह भी ध्यान रखने की जरूरत होती है कि आंकड़ों और शोधों का इतना भंडार न जमा कर लिया जाए कि लेख नीरस और उबाऊ हो जाए। इसलिए जरूरत भर के आंकड़े और शोधों का ही हवाला दिया जाना चाहिए। मुख्य रूप से ध्यान इस बात पर होना चाहिए कि आप जो कहना चाहते हैं वह ठीक ढंग से प्रस्तुत हो सके। बाजारों में

वाहनों की बढ़ती भीड़ और उन्हें पार्क करने के लिए जगह की कमी पर लिखे गये एक फीचर का अंश देखें –

''महानगरों में धड़ाधड़ शॉपिंग मॉल बन रहे हैं, लेकिन इन्हें बनाने वाले व्यवसायी शायद ही सोचते हों कि शॉपिंग करने वाले गाड़ियों से आएंगे। उनके लिए पार्किंग की समुचित व्यवस्था भी होनी चाहिए। पर उनका कोई कुसूर नहीं दिखता। दरअसल शहरों में जमीन का इस हद तक अतिक्रमण हो चुका है कि मॉल के लिए बमुश्किल जमीन मिल पाती है। ऐसे में पार्किंग के लिए सोचे भी तो कैसे?''

(फिर भी आंखों में सपनाः कावस कपाड़िया– सहारा समय, 13 अगस्त 2005)

आपने देखा कि लेखक ने कितनी सहजता से इसमें अपनी बात को रख दिया है।

बोध प्रश्न 4

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1) विज्ञान, पर्यावरण और स्वास्थ्य संबंधी फीचर की भाषा कैसी होनी चाहिए?

.....

.....

.....

.....

.....

2) विज्ञान, पर्यावरण और स्वास्थ्य संबंधी फीचर की प्रस्तुति में किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है?

.....

.....

.....

.....

.....

9.7 सारांश

- समाज का शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र है जहां विज्ञान ने अपनी पहुंच नहीं बनाई है। इस तरह हर समाचार पत्र और पत्रिका के लिए वैज्ञानिक उपलब्धियों, खोजों और शोधों को नजरअंदाज करना असंभव हो गया है।
- विज्ञान अब महज एक विषय नहीं है, बल्कि इसकी अनेक शाखाएं हो गई हैं। कंप्यूटर, वाहन, घरेलू उपकरण, कृषि उपकरण, औद्योगिक विकास आदि से संबंधित अलग–अलग शोध हो रहे हैं और ये विज्ञान के स्वतंत्र क्षेत्रों के रूप में विकसित हो चुके हैं।

- हालांकि तमाम वैज्ञानिक उपलब्धियों के बावजूद समाज का एक काफी बड़ा तबका आज भी झाड़–फूंक, गंडे–तावीज, टोने–टोटके और पारंपरिक उपचार पद्धतियों में विश्वास करता है। उसमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण पैदा करने के लिए व्यापक प्रयासों की जरूरत है।

- विज्ञान संबंधी फीचर लिखते समय क्षेत्र विशेष का चुनाव जरूरी है यह कार्य न सिर्फ नए उपकरणों के बारे में जानकारी उपलब्ध कराने से पूरा हो जाता है, बल्कि इसके दुष्प्रभावों का भी समुचित विश्लेषण जरूरी होता है। साथ ही लोगों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण पैदा करने के उद्देश्य से विषयों का चुनाव कर फीचर लिखे जाने चाहिए।

- वैज्ञानिक उपलब्धियों से जहां आम आदमी के जीवन में काफी सहूलियतें आई हैं, जीवन स्तर में सुधार हुआ है वहीं पर्यावरण पर इसका बुरा असर भी हुआ है। औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाले धुएं, जहरीली गैसों और रासायनिक कचरे के कारण पर्यावरण काफी तेजी से प्रदूषित हुआ है। नदियों का पानी पीने योग्य नहीं रह गया है। इनमें पलने वाले जीवों का अस्तित्व संकट में पड़ गया है।

- वनस्पतियों और कृषि उपज पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। पारिस्थितीकी संतुलन गड़बडा जाने की वजह से ऋतु चक्र प्रभावित हुआ है और सैकड़ों वनस्पतियों और वन्य जीवों का जीवन संकट में पड़ गया है।

- पर्यावरण से संबंधित फीचर लिखने के लिए विषय का चुनाव करते समय पर्यावरण प्रदूषण के प्रभावों के अलावा पारिस्थितिकी संतुलन से संबंधित समस्याओं को उठाया जा सकता है। इसके अलावा लोगों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से भी विषयों का चुनाव किया जा सकता है।

- वैज्ञानिक उपलब्धियों में सबसे महत्त्वपूर्ण चिकित्सा के क्षेत्र में कामयाबी देखी गई है। पहले रोगों के कारणों की पहचान न हो पाने के कारण लोग महामारी का शिकार हो जाते थे पर अब ऐसे कई रोगों पर काफी हद तक काबू पा लिया गया है। हालांकि वातावरण में आ रहे बदलाव और खानपान, रहन–सहन संबंधी अनियमितताओं के कारण नए रोग भी तेजी से उभर रहे हैं लेकिन चिकित्सा विज्ञानियों की सजगता के कारण उन पर काबू पाना मुश्किल नहीं रह गया है।

- कई रोगों को जड़ से खत्म कर दिया गया है और कइयों को समाप्त करने के प्रयास चल रहे हैं।

- स्वास्थ्य संबंधी फीचर लेखन के लिए विषय का चुनाव करते समय चिकित्सा के क्षेत्र में हो रहे शोधों की जानकारी उपलब्ध कराने के साथ–साथ लोगों को जागरूक बनाने से संबंधित विषयों का चुनाव भी जरूरी है।

- विज्ञान, पर्यावरण और स्वास्थ्य संबंधी फीचर की प्रस्तुति में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली के प्रयोग से परहेज नहीं किया जा सकता लेकिन जहां जरूरत हो, उसकी व्याख्या भी जरूरी होती है ताकि आम पाठक आसानी से समझ सकें। प्रस्तुति के लिए संबंधित क्षेत्र का गहन अध्ययन और उससे संबंधित जानकारियां उपलब्ध कराना जरूरी होता है। मगर इसके लिए बोलचाल की भाषा का इस्तेमाल होना चाहिए। आंकड़ों और शोधों का ऐसा भंडार नहीं जमा करना चाहिए कि फीचर नीरस और उबाऊ हो जाए।

अभ्यास

1) विज्ञान से संबंधित फीचर लिखते समय विषय के चुनाव में किस तरह की सावधानियां बरतनी जरूरी होती हैं?

.....

.....

.....

.....

2) पर्यावरण प्रदूषण पर फीचर लिखने से पहले किस तरह की तैयारी जरूरी है?

.....

.....

.....

.....

.....

3) पारिस्थितिकी संतुलन बिगड़ने के कुछ मुख्य कारणों पर विस्तार से प्रकाश डालें?

.....

.....

.....

.....

4) स्वास्थ्य संबंधी फीचर लेखन के जरिए जनजागरूकता पैदा करने में किस तरह मदद की जा सकती है?

.....

.....

.....

.....

5) फीचर लेखन की भाषा और शैली कैसी होनी चाहिए?

.....

.....

.....

.....

9.8 बोध प्रश्नों /अभ्यासों के उत्तर

इकाइयों के गहन अध्ययन के पश्चात स्वयं उत्तर लिखने का प्रयास करें।

इकाई 10 खेलकूद में फीचर : विषय का चयन और प्रस्तुति

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य

10.1 प्रस्तावना

10.2 खेल–फीचर का अभिप्राय

10.3 खेल–फीचर के प्रकार

- 10.3.1 खेल आधारित
- 10.3.2 खिलाड़ी आधारित
- 10.3.3 प्रतियोगिता आधारित
- 10.3.4 अन्य खेल फीचर

10.4 विषय का चयन

- 10.4.1 रुचि और विशेषज्ञता
- 10.4.2 प्रकाशन की प्रकृति
- 10.4.3 विषय की प्रासंगिकता

10.5 सामग्री का संकलन

- 10.5.1 विषय पर शोध
- 10.5.2 तथ्यों का संकलन
- 10.5.3 फोटो
- 10.5.4 साक्षात्कार
- 10.5.5 अन्य स्रोत

10.6 सामग्री का संयोजन और संपादन

10.7 फीचर का लेखन

- 10.7.1 आरंभ
- 10.7.2 मध्य
- 10.7.3 अंत और शीर्षक
- 10.7.4 भाषा और शैली

10.8 शब्दावली

10.9 सारांश

10.10 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

10.0 उद्देश्य

सृजनात्मक लेखन में फीचर एक ऐसी आकर्षक विधा है, जिसे अब लेखन के हर क्षेत्र में प्रयोग में लाया जा रहा है। भारत में खेल पत्रकारिता का इतिहास बहुत पुराना नही है किंतु 'फीचर विधा' ने इसे भी आकर्षक और प्रभावी बना दिया है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- खेल फीचर का क्या अभिप्राय है, यह बता सकेंगी/सकेंगे;
- उसके प्रकारों का उल्लेख कर सकेंगी/सकेंगे;
- खेल फीचर लिखने के लिए विषय का चयन कर सकेंगी/सकेंगे;
- फीचर से संबधित सामग्री का संकलन कर सकेंगी/सकेंगे;
- सामग्री का उचित प्रयोग, संयोजन और संपादन कर सकेंगी/सकेंगे; और
- खेल फीचर में अपना कौशल बढ़ा सकेंगी/सकेंगे।

10.1 प्रस्तावना

यह कोई बहुत पुरानी बात नहीं है कि अपने देश के खेलों से जुड़े युवाओं को बहुत अच्छी दृष्टि से नहीं देखा जाता था। खेल केवल राजाओं और नवाबों या कुछ विशेष क्लबों की देख–रेख में ही होते थे। व्यवस्थित रूप से न सरकार की ओर से खिलाड़ियों को कोई प्रोत्साहन था और न ही घरों में माता–पिता की ओर से। माता पिता की दृष्टि में खेलों से जुड़ने में समय की बर्बादी के साथ–साथ शिक्षा पर भी असर पड़ता था। लेकिन अब स्थिति बदली है। अब घरों से लेकर शहर और देश में खिलाड़ियों को सम्मान से देखा जाता है। क्रिकेट और टेनिस के खिलड़ियों को फिल्मी सितारों जैसी लोकप्रियता मिल रही है। सरकार की ओर से भी प्रोत्साहन मिल रहा है और अर्थ प्राप्ति के द्वार भी खुले हैं।

खेलकूद के प्रति इस बदलते हुए माहौल से खेल–पत्रकारिता को भी नया जीवन प्राप्त हुआ है। आज खेल–परिणामों के अतिरिक्त विस्तृत लेख भी खेल–प्रेमियों की भूख मिटाने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। अतः अब पत्र–पत्रिकाओं में खेल–फीचर को स्थान दिया जा रहा है। फीचर लेखन का वह निखरा हुआ रूप है जिसमें कुल मिलाकर दिलचस्पी के सभी सामान जुटाये जाते हैं।

खेल फीचर लिखने के लिए आपको क्या तैयारियाँ करनी होंगी? अच्छे फीचर लेखन में कौन–से गुण सहायक होंगे? विषय–चयन से लेकर सामग्री संकलन और उसके संपादन तक आपको किन परिस्थितियों से गुजरना होगा, इन सबकी चर्चा इस इकाई में की जा रही है जिसे पढ़कर आप दिलचस्प खेल फीचर लिखने में कामयाब हो सकते हैं।

10.2 खेल–फीचर का अभिप्राय

खेल फीचर से अभिप्राय खेलों पर लिखे जाने वाले फीचर से है किंतु इनके आलेख तैयार करने से पहले खेल फीचर से पूरा परिचय आवश्यक है। फीचर, लेखन की एक आकर्षक शैली है और खेलों के संदर्भ में जहाँ कि आँकड़े महत्वपूर्ण होते हैं और

उनकी भरमार रहती है इस शैली को अपनाना अभ्यास और निपुणता पर अधिक निर्भर है। कहने का तात्पर्य यह कि खेल संबंधी किसी विषय पर सजा–संवार कर लिखे गए आलेख को खेल फीचर कहते हैं। इसमें निम्नलिखित तत्व महत्वपूर्ण हो सकते हैं :

- जानकारी / समाचार
- तथ्य
- तारतम्यता
- सम्बद्धता
- आकर्षक भाषा–शैली

खेल–जगत में तात्कालिक समाचारों का महत्व सबसे अधिक होता है। खेलों के परिणामों को तुरंत जानने की उत्सुकता के कारण ही रेडियो और दूरदर्शन की खेल–सेवाएं आज इतनी लोकप्रिय हो रही हैं। किंतु समाचारों के बाद लेख की महत्ता होती है, कारण है, विस्तारपूर्वक समाचार सहित विवरण और महत्वपूर्ण आँकडों का अधिक ब्यौरा। किंतु लेखों से भी अधिक महत्वपूर्ण, आकर्षक और स्थायी होते हैं 'फीचर' जिनमें लेख की विशेषताएँ तो होती हैं, लेखक की अपनी शैली और जुड़ाव अतिरिक्त गुण होते हैं जो फीचर पढ़ने के लिए हमेशा उकसाते हैं। इसीलिए आज खेल फीचर को दैनिक समाचार–पत्रों से लेकर साप्ताहिक और मासिक या खेल पत्रिकाओं में स्थान दिया जा रहा है।

जहाँ तक खेल की बात है, आज इसका अर्थ केवल किसी दैनिक या किसी स्थान पर खेले गए किसी विशेष खेल से ही नहीं रह गया है वरन् इसका अर्थ अब व्यापक हो गया है। खेल शब्द के दायरे में जो लोग और स्थान जुड़ते हैं, वे हैं :

1) विशेष खेल
2) विशेष खिलाड़ी
3) खेलों की गतिविधियों से जुड़े अन्य लोग, जैसे–कोच, मैनेजर, अम्पायर, खेल कमेंटेटर, खेल समीक्षक आदि।
4) विभिन्न खेलों से जुड़ी प्रतियोगिताएँ, जैसे–रणजी ट्राफी, चैम्पियन्स ट्राफी, डेविस कप, विम्बलडन, एशियाई खेल और ओलम्पिक खेल आदि।

उपर्युक्त सभी विषयों पर खेल फीचर तैयार हो सकते हैं। कुछ अन्य विशेषताएं जो खेल फीचर में होती हैं, वे हैं।

- खेलों की अपनी शब्दावली होती है, जैसे–रन, मेड़–इन, गली, स्लिप, पेनाल्टी, कॉर्नर, पेनाल्टी स्ट्रोक, फ्री हिट आदि।
- विशिष्ट समीक्षात्मक दृष्टिकोण (समाचार को अपने दृष्टिकोण से देखना होता है)
- तुलनात्मक आँकड़े।

10.3 खेल–फीचर के प्रकार

खेलों का संसार बहुत व्यापक है। तरह–तरह के खेल और उनसे जुड़ी सैकड़ों तरह की प्रतियोगिताएं, उनसे जुड़े हजारों खिलाड़ियों, आदि के बारे में जानना आसान काम नहीं है। इसलिए बेहतर यही है कि इस क्षेत्र में लेखन से पहले हम यह तय कर ले

कि हमें किन–किन खेलों के लेखन में सक्रिय होना चाहिए। इसी बात को ध्यान में रखकर हम यहाँ खेल फीचर के विभिन्न प्रकारों पर विचार करेंगे। इसे हम मुख्यतः चार भागों में विभक्त कर सकते हैं :

- खेल–आधारित
- खिलाड़ी–आधारित
- प्रतियोगिता–आधारित
- अन्य खेल फीचर

10.3.1 खेल–आधारित

फीचर के लिए इस प्रकार का चयन बहुत आसान है क्योंकि कई तरह के खेल खेले जाते हैं–कबड्डी, फुटबॉल, टेनिस, हॉकी, क्रिकेट, वालीबॉल, बास्केटबॉल, बिलियर्ड, गोल्फ, शतरंज, कुश्ती, बैडमिंटन आदि किसी भी खेल का चयन किया जा सकता है और उन पर फीचर लिखा जा सकता है। सीधे खेल से संबंधित फीचर होने के कारण इसे खेल–आधारित फीचर कहेंगे। अब खेल–आधारित फीचर लिखने के कौन से तरीके हो सकते है, यह जान लेना जरूरी है। लेखन में आपकी पैनी नजर और खेल संबंधी जानकारी मदद करती है। कुछ क्षेत्र हैं, जिन पर ध्यान केंद्रित किया जा सकता है, जैसे :

- खेल के नियम
- खेल का इतिहास
- खेल से जुड़ी सामग्री
- खेल तकनीक
- अच्छा खेल कैसे खेलें
- खेल की लोकप्रियता

'कितना पैसा है फुटबॉल **में'** शीर्षक से 24 जून, 1990 के साप्ताहिक हिंदुस्तान में जसमिदंर लिखित फीचर की ये आरंभिक पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं –

''इसमें कोई शक नहीं है कि लोकप्रियता के मामले में फुटबॉल विश्व का पहले नम्बर का खेल है। जो कुछ खास कारण इसे विश्व का सबसे लोकप्रिय खेल बनाते हैं, उनमें से एक यह है कि खेलने में यह बेहद सस्ता खेल है। बस समझ लीजिए कि अगर फुटबॉल पास में हो तो भी खेल शुरू हो सकता है, न किसी मंहगे उपकरण की जरूरत और न किसी खास तरह के स्टेडियम की ज़रूरत।''

इन पंक्तियों में फुटबॉल की सहजता और सरलता को फीचर शैली में लिखा गया है।

किसी विशेष मैच या मुकाबले को भी खेल–आधारित फीचर के अंतर्गत रखा जा सकता है। नीचे एक उदाहरण देखें, जिसे मनोज चतुर्वेदी लिखित **'इस जीत का कैसा जश्न'** शीर्षक फीचर से लिया गया है –

''जिंबाब्वे टीम की इस समय जो स्थिति है उसे देखते हुए भारतीय क्रिकेट टीम के 2–0 से टेस्ट सीरीज जीतने को बहुत महत्वपूर्ण नहीं माना जा सकता है। फिर भी जीत तो जीत ही है और इसके श्रेय से भारतीय टीम को वंचित करना उचित नहीं

होगा। वैसे भी भारतीय टीम ने उप महाद्वीप के बाहर 11 साल बाद सीरीज जीती है। पर हर सीरीज के कुछ सकारात्मक और कुछ नकारात्मक पक्ष होते हैं इसके भी हैं।

इस सीरीज का सबसे सकारात्मक पक्ष कोच ग्रेग चैपल का टीम पर पूरा नियंत्रण बनाना है। इससे पहले होता यह था कि टीम के वरिष्ठ खिलाड़ी कोच को भाव नहीं दिया करते थे और यह सिलसिला जॉन राइट के समय से चलता रहा है। कई मौकों पर तो खिलाड़ियों ने कोच को नीचा दिखाने तक का प्रयास किया है। लेकिन ग्रेग चैपल का खुद का कद बहुत ऊंचा है और वे एक पेशेवर की तरह ही काम कर रहे हैं। वे अपनी बात को सख्ती के साथ रख रहे हैं। पर उनके प्रयास तभी अच्छे परिणाम दे सकते हैं, जब बोर्ड की तरफ से उन्हें पूरी छूट मिली रहे। इस स्थिति में 2007 के विश्व कप तक एक मजबूत टीम खड़ी हो सकती है। इस दौरे का सबसे नकारात्मक पक्ष भी ग्रेग चैपल के काम करने की शैली के कारण ही उपजा है। उनका कप्तान सौरव गांगुली को पहले टेस्ट की पूर्व संध्या पर टीम से बाहर बैठने की सलाह देना और फिर गांगुली द्वारा शतक जमाने के बाद इसका रहस्योद्घाटन करने से जबरदस्त विवाद का रूप ले लिया। इस विवाद का टीम के मनोबल पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। बोर्ड के हस्तक्षेप से लगा कि मामला सुलट गया है, पर ग्रेग चैपल द्वारा गांगुली को लेकर बीसीसीआई अध्यक्ष रणबीर सिंह महेंद्रा को भेजे ई–मेल ने आग में घी का काम किया है। उन्होंने लिखा है कि गांगुली शारीरिक और मानसिक तौर पर अंतरराष्ट्रीय मैचों में खेलने लायक नहीं हैं। उन्हें जिस तरह से ट्रेनिंग करने को कहा जाता है, नहीं करते हैं। उन्होंने टीम के अनुशासन को खराब किया और टीम में फूट डाल रहे हैं। वैसे तो बोर्ड अध्यक्ष ने इस ई–मेल की पुष्टि नहीं की है पर यह बात सही है तो इसे टीम के हित में कतई नहीं कहा जा सकता है।''

(सहारा समय, 1 अक्टूबर 2005)

इस फीचर में सभी पक्षों पर उचित ध्यान दिया गया है।

10.3.2 खिलाड़ी आधारित

विभिन्न खेलों से जुड़े खिलाड़ियों को भी आप फीचर का विषय बना सकते हैं। इनमें उस खिलाड़ी से जुड़े विवरण से लेकर उससे जुड़े वाद–विवाद को दर्शाया जा सकता है। जरूरी नहीं कि खिलाड़ी लोकप्रिय और प्रतिष्ठत ही हों। नए और उभरते हुए खिलाड़ियों को भी लिया जा सकता है। **'खेल हलचल'** पत्रिका में प्रकाशित **'उभरते हुए सितारे'** फीचर का यह अंश देखिए –

''बारह वर्ष से कम उम्र के खिलाडियों में रोहित को गेंदबाजी करते हुए जिसने भी देखा है, उसे इंग्लैंड के महान तेज गेंदबाज फ्रेडी टूमेन की याद आना लाजमी है। रोहित तगड़े–ऊंचे कद के हैं और उनकी गति अत्यधिक तेज है। हाल ही में मद्रास में सम्पन्न हुई स्कूल की न्यूट्रीन स्पर्धा में रोहित ने डॉन बास्को स्कूल का नेतृत्व किया था। यही नहीं, मद्रास का नेतृत्व करते हुए रोहित ने संयुक्त जिलों की टीम को पराजित किया था।''

एक अन्य उदाहरण में टेनिस खिलाड़ी **बोरिस बेकर** का जिक्र इस तरह है :

''बेकर शुद्ध रूप से एक आक्रामक खिलाड़ी हैं– प्वाइंट बनाने के बाद और पहले भी। कोई भी प्रतिस्पर्धा हो वे साहसपूर्वक डटे रहते हैं। अंतिम मैच में केविन के विरुद्ध

कोर्ट बदलते हुए करेन से कंधा भिड़ाकर वे चलते थे। भविष्य में बोरिस बेकर लगता है कई गुल खिलाएंगे।''

किसी खिलाड़ी पर फीचर लेखन से पूर्व जो जानकारी और समीक्षात्मक दृष्टि उपयोगी हो सकती है, उनमें मुख्य हैं :

- खेल के प्रति खिलाड़ी का समर्पण
- उसका खेल, उसकी शैली
- उसका पूर्व इतिहास
- उससे भविष्य की आशाएँ
- अन्य खिलाड़ियों से उसकी तुलना
- उसके अन्य शौक और पारिवारिक विवरण
- उसका स्वभाव
- अन्य कोई विशेषता

एक उदाहरण देखें। इसे मनूभाई लिखित **'राष्ट्रीय शतरंज चैम्पियन वर्गीज़ कोशी'** से लिया गया है –

''कोई अजनबी वर्गीज कोशी के कमरे में चला जाए तो किताब में डूबी दाढ़ी वाली उस आकृति को देखकर उसे यही लगेगा कि किसी प्रोफेसर के पास आ गया है। राष्ट्रीय शतरंज चैम्पियन वर्गीज कोशी आज भी एक शोधकर्ता की तरह शतरंज विषयक पुस्तकों का नित्य घंटों अध्ययन करते हैं। अन्य खिलाड़ियों के लिए शतरंज एक पेशा या शौक हो सकता है परंतु कोशी के लिए जीवन है। उनका कहना है कि शतरंज के खिलाड़ी को इस खेल के विकास के लिए कुछ न कुछ योगदान करना चाहिए। स्वयं वर्गीज ने इस पर किस हद तक अमल किया, उसका अंदाज इसी बात से लगाया जा सकता है कि उनके जमशेदपुर आने के बाद यहाँ प्रतिवर्ष सात–आठ शतरंज के टूर्नामेंट होने लगे हैं।''

10.3.3 प्रतियोगिता आधारित

आपके अपने जिले से लेकर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खेल प्रतियोगिताएं आयोजित होती रहती हैं। ओलम्पिक खेल, विश्व कप क्रिकेट, विश्व कप फुटबॉल, विश्व कप हॉकी, विम्बलडन, फ्रेंच ओपन आदि कुछ प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताएं हैं। इनमें से विभिन्न प्रतियोगिताएँ दो–दो और चार–चार वर्षों के अंतराल से आयोजित होती हैं। विभिन्न राष्ट्र इनके आयोजन का दायित्व और जिम्मेदारी संभालते हैं और आयोजनों को इस भव्य पैमाने पर करते हैं कि मेला–सा लगता है। इनके अतिरिक्त हमारे अपने देश में भी खेलों की विभिन्न लोकप्रिय प्रतियोगिताएँ हैं–राष्ट्रीय हॉकी, डूरेंड कप फुटबॉल, रणजी ट्रॉफी (क्रिकेट), दिलीप ट्रॉफी (क्रिकेट), आगा खान कप (हॉकी) आदि। इन प्रतियोगिताओं में बेहतर प्रदर्शन करने पर खिलाड़ियों के राष्ट्रीय टीमों में चुने जाने की संभावना बढ़ जाती है। इनके अतिरिक्त, राज्य और जिला स्तरों पर भी विभिन्न खेलों की प्रतियोगिताएँ आयोजित होती रहती हैं। आप इनमें से किसी प्रतियोगिता पर फीचर लिख सकते हैं। ऐसे फीचर या तो प्रतियोगिता आरंभ होने से पूर्व लिखे जा सकते हैं या प्रतियोगिता के दौरान। आलेख में मुख्य बिंदु होंगे :

- प्रतियोगिता का इतिहास

- पिछले रिकॉर्ड
- होने वाली प्रतियोगिता की तैयारियाँ
- होने वाली प्रतियोगिता में मुकाबलों और संघर्ष की संभावनाएँ आदि।

किसी विशेष प्रतियोगिता की समाप्ति पर भी फीचर तैयार किया जा सकता है, ऐसी स्थिति में आपको जिन बिंदुओं पर ध्यान देना होगा, वे हैं :

- प्रतियोगिता का पैमाना
- कितने खिलाड़ियों और कितनी टीमों ने भाग लिया।
- टीमों और व्यक्तिगत खिलाड़ियों के उल्लेखनीय प्रदर्शन
- रोमाचंक स्थितियाँ और परिणाम
- संपूर्ण प्रतियोगिता में खेल स्तर
- भविष्य में प्रतियोगिता के आयोजन और उसकी संभावनाओं पर विचार।

नीचे दिया गया उदाहरण देखिए जिसमें किसी प्रतियोगिता पर लिखे फीचर की शैली का अंदाजा होता है–

''विम्बलडन के दर्शकों के दुख का अंतिम वर्ष 1967 था। लेकिन आस्ट्रेलिया ने एक बार फिर दिखा दिया कि उनके पास अपार उभरती प्रतिभा सुरक्षित है। सिडनी के तेईस वर्षीय जॉन न्यूकांब विश्व के महान एमेचर खिलाड़ी बनकर सामने आए। शक्तिशाली और सुंदर व्यक्तित्व वाले न्यूकांब ने सुनहरा प्रदर्शन कर पश्चिम जर्मनी के अठाईस वर्षीय विल्हेम बर्गट को 6–3, 6–1, 6–3 से हराकर निराशाजनक फाइनल को जीता। बर्गट फाइनल में अपने को स्थिति के अनुरूप नहीं ढाल पाए। बॉबी विल्सन, बोमज कोच और राजर टेलर तीनों ही खिलाड़ियों को पाँच सेटों में मात देकर फाइनल में पहुँचने वाले बर्गट पहले जर्मन खिलाड़ी बने थे।''

प्रतियोगिता पर लिखे फीचर में तुलनात्मक दृष्टि और समीक्षात्मक पकड़ होना जरूरी।

दसवें राष्ट्रीय महिला खेल कोयंबटूर में आयोजित हुए थे, उन पर लिखे इस उदाहरण से बात और स्पष्ट होगी –

''वॉलीबॉल और बास्केटबॉल के स्वर्ण पदक तमिलनाडु ने हथियाये। हैंडबॉल और हॉकी के खिताब कर्नाटक ने जीते। हैंडबॉल की सुपरलीग में कर्नाटक और महाराष्ट्र के अंक थे। किंतु बेहतर गोल औसत के कारण कर्नाटक की लड़कियाँ स्वर्ण ले उड़ी। हॉकी में कर्नाटक ने बेहतरीन खेल का प्रदर्शन करके स्वर्ण पदक पाया। लीग कम नॉक आउट के आधार पर खेले गए हॉकी मुकाबलों में कर्नाटक ने अंतिम मुकाबले में केरल को 5–1 से हराया।''

10.3.4 अन्य खेल फीचर

खेल, खिलाड़ी और किसी प्रतियोगिता से हटकर भी कई ऐसे विषय हो सकते हैं जो खेल फीचर के अंतर्गत आते हैं। स्पष्ट है कि इनका प्रत्यक्ष न सही, अप्रत्यक्ष रूप से खेलों से संबंध होता है। ऐसे कुछ विषय हो सकते हैं :

- किसी खेल मैदान, स्टेडियम पर आधारित
- किसी खेल कमेंटेटर, खेल पत्रकार पर आधारित

- खेल प्रशिक्षक, खेल अधिकारी पर आधारित
- किसी अम्पायर, रैफरी या निर्णायक पर आधारित
- खेलों से जुड़े दर्शक, श्रोता, पाठक या किसी स्थान विशेष पर आधारित ।

उदाहरण के लिए, दिल्ली जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम पर एक फीचर तैयार किया जा सकता है। क्रिकेट के मैदानों और स्टेडियम को लेकर विभिन्न फीचर लिखे गए जैसे लॉर्डस, लीड्स, फीरोजशाह कोटला, ग्रीन पार्क आदि। क्रिकेट में मैदानों पर 'पिच' बड़ी मेहनत से तैयार की जाती है और खेल का दारोमदार बहुत कुछ 'पिच' की मेहरबानी पर रहता है। अब तक खेलों में पत्रकार या खेल कमेंटेटर के सहयोग को नकारा जाता रहा है जबकि खेल की भव्यता और खेल में चाहे व्यक्तिगत रूप से या सामूहिक रूप से निखार लाने में इन व्यक्तियों का बड़ा योगदान होता है। खेल पत्रकार समीक्षक की पैनी नज़र रखता है। वह खिलाड़ियों को सही समय पर पहचानता है, अपने प्रयासों से प्रोत्साहन देता है। यह नहीं भूलना चाहिए कि सही समय पर खिलाड़ी को मिला प्रोत्साहन ही उनका उचित पुरस्कार होता है। यही कार्य खेल प्रशिक्षक और खेल मैनेजर भी करते हैं। प्रशिक्षक तो खेल से पूर्व और विभिन्न खेलों में खेल के समय भी (जैसे वॉलीबॉल में) तकनीक को समझाने वाला होता है। किंतु हाँ, सबमें सभी को महारत हासिल नहीं हो सकती। इसलिए ऐसे सही नामों का चयन पहले आवश्यक है जिनके पास अपना अनुभव हो। खेल समीक्षक और कमेंटेटर में जसदेव सिंह, नरोत्तम पुरी, खेल प्रशिक्षक में पी.टी. उषा के प्रशिक्षक नॉबियार पर अच्छे फीचर लिखे गए हैं। इसी प्रकार खेलों को सही रूप से संचालित करने में अंपायर, रैफरी और निर्णायकों का बड़ा महत्वपूर्ण योगदान होता है। उदाहरण के लिए, अम्पायर स्वरूप सिंह को तो उनकी सेवाओं के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार पद्मश्री से सम्मानित किया गया। निर्णायकों की जीवनी, उनके अनुभव और उनकी अपनी टिप्पणियों पर भी लिखे जा सकते हैं। जो निश्चित रूप से खेलकूद को बढ़ावा देने में कारगर साबित होंगे।

इसी प्रकार दर्शक या श्रोता या पाठक यदि खेलों में दिलचस्पी न लें, खिलाड़ियों की चर्चा न करें, उन्हें प्रोत्साहन न दें तो खेलों से जुड़ा मनोरंजन एकतरफा होकर रह जाएगा जो नीरस भी होगा। आप स्वयं अनुभव कर सकते हैं एक ऐसा मैदान पर जहाँ बड़े–बड़े खिलाड़ी खेल रहे हों और दर्शक न हों, वहाँ वह खेल कितना सूना लगेगा, फिर चाहे वहाँ बड़े–बड़े रिकॉर्ड ही क्यों न बन रहे हों। दर्शकों के बीच छोटे स्तर के खिलाड़ियों का खेल भी महत्वपूर्ण हो उठता है। फीचर के लिए इनको भी विषय बनाया जा सकता है। उनके अनुभव, उनकी प्रतिक्रियाएं इसका आधार हो सकती हैं। दो खिलाड़ियों के खेल को सामने रखते हुए तुलनात्मक फीचर भी लिखा जा सकता है। उदाहरण के लिए **1 अक्टूबर, 2005 के 'सहारा समय'**में प्रकाशित मनोज चतुर्वेदी के फीचर **'बेहतर कौन, युवराज या कैफ'** को देखा जा सकता है।

''युवराज सिंह और मोहम्मद कैफ दोनों को ही क्षमतावान क्रिकेटर माना जाता है और हो सकता है कि भविष्य में कभी इनमें से कोई भारतीय टीम का नेतृत्त्व करे। लेकिन दोनों ही लगभग पांच साल पहले भारतीय टीम में स्थान बनाने के बाद भी टेस्ट टीम में स्थान पक्का नहीं कर सके हैं, अभी पिछले दिनों बुलवाया टेस्ट और फिर हरारे टेस्ट की टीम में युवराज को शामिल किया गया, तो चर्चा चली कि कैफ टीम में स्थान बनाने के हकदार थे और उनके साथ ज्यादती हो गयी। सच तो यह है कि कोच ग्रेग चैपल और कप्तान सौरव गांगुली के बीच हुए विवाद की वजह से भी इन्हें

खिलाना ही था। यह विवाद तो सुलट चुका है, अभी यह तय नहीं हो सका है कि युवराज और मोहम्मद कैफ में कौन ज्यादा क्षमतावान है और खेलने का सही हकदार कौन था। पर इन दोनों को ही नहीं खिलाने से हो सकता है कि इनका अपनी क्षमता पर से ही विश्वास हट जाए। इस संबंध में कोच ग्रेग चैपल के सहायक इयान फ्रेजर की यह टिप्पणी सटीक लगती है– 'कुछ खिलाड़ी अपनी क्षमता के अनुरूप प्रदर्शन इसलिए नहीं कर पाते हैं, क्योंकि उन्हें सही समय पर मौका नहीं मिल पाता है।

युवराज और मोहम्मद कैफ का स्वभाव भले ही बिल्कुल भिन्न है पर दोनों ही पूरी तरह से समर्पित खिलाड़ी हैं। दोनों ही टीम के सर्वश्रेष्ठ फील्डर है। लेकिन टेस्ट मैचों से कैरियर की शुरूआत करने के बाद भी टेस्ट के बजाय वन डे टीम के खिलाड़ी का ठप्पा उन पर लग चुका है। अगर हरारे टेस्ट को छोड़ दें तो दोनों ने ही अभी तक सात–सात टेस्ट खेले हैं और उनकी बल्लेबाजी उत्कृष्ट नहीं तो ठीक–ठाक जरूर रही है। युवराज ने 34.88 के औसत से 314 रन और कैफ ने 24.50 के औसत से 294 रन बनाए हैं। दोनों के सामने टेस्ट टीम में स्थान पक्का करने के लिए ही विकल्प है कि वन डे मैचों में बेजोड़ प्रदर्शन करके चयनकर्ताओं का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित करें। मोहम्मद कैफ ने तो इस टेस्ट सीरीज से पहले खेली त्रिकोणीय सीरीज में सर्वाधिक रन बनाकर टेस्ट टीम के लिए अपना दावा पक्का किया। वहीं युवराज का प्रदर्शन भी अच्छा रहा। इन प्रदर्शनों से वे टेस्ट टीम में स्थान बनाने में तो सफल हो गये पर अंतिम एकादश में एक ही स्थान खाली होने से कैफ पिछड़ गये।

असल में युवराज सिंह कप्तान सौरव गांगुली की पसंद रहे हैं और मोहम्मद कैफ उप कप्तान राहुल द्रविड़ के चहेते हैं। सौरव युवराज की टेस्ट टीम में जगह बनाने के लिए पाकिस्तान दौरे पर उनसे पारी की शुरूआत भी करा चुके हैं। इस चाहत का ही नतीजा है कि कैफ के बेहतर दावेदार होने पर भी युवराज जिंबाब्वे में टेस्ट में खेल रहे हैं। युवराज और कैफ दोनों ने ही वन डे मैचों में उम्दा प्रदर्शन से खूब वाहवाही लूटी है। युवराज ने 126 मैचों में 31.04 के औसत से 3104 रन बनाए हैं, तो मोहम्मद कैफ ने 97 मैचों में 35.10 के औसत से 2317 रन बनाए हैं। युवराज के नाम चार और कैफ के नाम एक शतक है। पर इस सबके बावजूद दोनों ने ही एक आदि मैचों को छोड़कर अकेले दम मैच जिताने की क्षमता नहीं दिखाई है और किसी भी खिलाड़ी के उत्कृष्ट की श्रेणी में आने के लिए यह क्षमता होना जरूरी है।

युवराज यदि अपनी आलराउंडर के तौर पर धाक बना पाते, तो उनकी जगह बन सकती थी। लेकिन वे अपनी स्पिन गेंदबाजी का प्रभाव कभी नहीं छोड़ पाये। इसलिए आमतौर पर उनसे गेंदबाजी कभी–कभार ही कराई जाती है। उन्होंने यदि अच्छे स्पिनर की छवि बनाई होती, तो एक स्पिनर को बैठाकर उन्हें खिलाया जा सकता था। पर वह इस जिम्मेदारी को उठाने में असफल रहे हैं। 'मोहम्मद कैफ' ने एक बार मुलाकात में कहा था कि मुझे जब भी मौका मिला, तो इतने नीचे भेजा गया कि मेरे पास करने के लिए कुछ बचता ही नहीं था। उन्हें जब–जब ऊपर भेजा गया, अच्छी पारी खेली। लेकिन उच्च क्रम में उन्हें स्थाई तौर पर कभी स्थापित नहीं किया गया है। राहुल द्रविड़ ने पांच साल पहले मोहम्मद कैफ की प्रतिभा को पहचान कर कहा था– 'मोहम्मद कैफ' भविष्य के खिलाड़ी हैं। इससे यह तो साफ है कि इस समय वे देश के सर्वश्रेष्ठ प्रतिभावान खिलाड़ी हैं, इसलिए उन्हें चाहिए कि किसी गुट का होने का अपने ऊपर ठप्पा लगवाने के बजाय अपनी कमियों को दूर करके अपने प्रयासों को जारी रखें।''

दर्शकों की दिलचस्पी और उनके शौक के कारण भी कई स्थान महत्वपूर्ण हो जाते हैं। उदाहरण के लिए, हॉकी में भोपाल और पंजाब, फुटबॉल में कलकत्ता आदि। इसी तरह इटली का नाम भी फुटबॉल के साथ जुड़ा है। एक उदाहरण देखें। 24 जून, 1990 के **साप्ताहिक हिंदुस्तान** में छपे चरणपाल सिंह सोबती के फीचर का शीर्षक है : **'मेजबान इटली का, फुटबॉल इतिहास : जहाँ फुटबॉल एक धर्म है –**

''एक फुटबॉल विशेषज्ञ ने ठीक पहचाना है कि इटली के नक्शे को देखकर किसी पैर या जूते की शक्ल याद आती है। शायद यही कारण है कि यह देश पैर से खेले जाने वाले फुटबॉल के खेल में आज विश्व के कुछ सबसे सफल और जोरदार देशों में से एक है। ब्राजील के अतिरिक्त इटली एकमात्र देश है जो विश्व कप जैसे महत्वपूर्ण टूर्नामेंट को तीन बार जीत चुका है।''

बोध प्रश्न 1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1) खेलकूद से संबंधित फीचर की कुछ प्रमुख विशेषताएं बताइए। उत्तर लगभग पाँच पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) खेल–आधारित फीचर और प्रतियोगिता फीचर में अंतर स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) निम्नलिखित विषयों पर लिखे गए फीचर किस श्रेणी में आएँगे और क्यों?

   क) हॉकी के जादूगर ध्यानचंद

   ख) खेल पत्रकारिता के बदलते तेवर

   ग) डेविस कप में भारत की चुनौती

   घ) शतरंज के दाँवपेंच

10.4 विषय का चयन

खेल फीचर के प्रकार के अंतर्गत हमने खेल फीचर को विभिन्न वर्गों में रखकर देखा आइए, अब लेखन–कार्य में कौन–सा विषय आपके लिए उपयोगी हो सकता है, और

आपको विषय के चयन के समय किन बातों का ध्यान रखना है, उस पर भी चर्चा कर ली जाए। इसके लिए हमें निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान देना होगा –

- रुचि और विशेषज्ञता
- प्रकाशन की प्रकृति
- विषय की प्रासंगिकता

10.4.1 रुचि और विशेषज्ञता

यह बात स्पष्ट है कि खेल फीचर के विषय का चयन करते हुए अपनी रुचि का ध्यान अवश्य रखें। केवल रुचि ही काफी नहीं है, उसमें आपकी अधिक विशेषज्ञता भी उपयोगी रहेगी। उदाहरण के लिए, आप क्रिकेट पर फीचर लिख रहे हैं तो आपको इस खेल की पूरी जानकारी होनी चाहिए, साथ ही आपको रन, रन अप, हेट्रिक, एल. बी.डब्लू., हिट विकेट आदि शब्दों का ज्ञान भी होना चाहिए। खेल और खिलाड़ी संबंधित प्रतियोगिता के बारे में जानकारी महत्वपूर्ण है। फिर क्रिकेट आँकड़ों का खेल है। खेल से संबंधित आँकड़े आपके लिए उपयोगी रहेंगे। इसी प्रकार अन्य खेलों से संबंधित आपकी रुचि और विशेषज्ञता विषय चयन को अधिक आसान बना सकती है रेडियो सुनना, समाचार–पत्र, खेल पत्रिकाओं, खेल पुस्तकों को पढ़ना इसके अतिरिक्त खेल के दौरान आपका खुद मैदान में उपस्थित रहना बहुत आवश्यक है।

10.4.2 प्रकाशन की प्रकृति

यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि फीचर किस पत्र–पत्रिका के लिए लिखा जा रहा है अर्थात् इसे दैनिक समाचार पत्र में प्रकाशित होना है, साप्ताहिक विशेषांक में या किसी खेल पत्रिका में। प्रकाशन की प्रकृति के अनुसार ही विषय का चयन उपयोगी रहता है क्योंकि इसके अनुसार आपके लेखन में भी परिवर्तन आ सकता है। दैनिक समाचार पत्र के लिए जो बातें महत्वपूर्ण होंगी, वे हैं :

- तात्कालिकता
- ताजे से ताजे परिणाम
- संक्षिप्तता।

इसका कारण यह है कि दैनिक समाचार पत्रों में स्थान की कमी होती है और बहुत आवश्यक होने पर ही फीचर के लिए स्थान मिल पाता है। अतः इस प्रकार के फीचर में समसामयिकता और तात्कालिकता को ध्यान में रखना होता है।

साप्ताहिक विशेषांक या अन्य पत्रिकाओं में खेल स्तंभ के लिए अधिक स्थान रहता है। इसलिए विषयों के चयन में जो बातें महत्वपूर्ण इस प्रकार हैं :

- विषय का स्थायी महत्व
- भाषा की चुस्ती और पैनापन
- घटनाक्रम की जानकारी
- संकलित सामग्री का बेहतर उपयोग

10.4.3 विषय की प्रासंगिकता

विषय की प्रासंगिकता से तात्पर्य दरअसल ऊपर बताई गई दोनों बातों से है। दैनिक पत्रों में तात्कालिकता का महत्व अधिक है तो साप्ताहिक और मासिक पत्रिकाओं में स्थायित्व का। इसका प्रभाव विषय के चयन पर पड़ सकता है। उदाहरण के लिए, समाचार पत्र में किसी खेल मैदान या स्टेडियम पर लिखे फीचर को स्थान मिल पाना मुश्किल है। किंतु किसी आकस्मिक दुर्घटना के समय उसी मैदान या स्टेडियम पर लिखे फीचर की महत्ता दैनिक समाचार पत्र के लिए बढ़ जाएगी। इसी प्रकार किसी बड़े और नामी खिलाड़ी की पुण्यतिथि पर लिखे गए फीचर को खेलकूद से संबंधित पत्रिका में अधिक आसानी से स्थान मिल सकता है। आमतौर पर सभी पत्र–पत्रिकाएँ खेलकूद का स्थायी स्तंभ रखती हैं, इसलिए यह जरूरी है कि उस पत्र–पत्रिका के पाठकों को और विषय के महत्व को ध्यान में रखते हुए विषय का चयन करें।

10.5 सामग्री का संकलन

फीचर एक प्रकार से तथ्यों पर आधारित रोचक लेख है। इसमें आप तथ्यों को अपनी सृजनात्मक शक्ति और भाषा से सजा–संवार सकते हैं, आकर्षक बना सकते हैं और यहीं फीचर एक 'आम लेख' से भिन्न हो जाता है। इसके लिए तथ्य जुटाने पड़ते हैं। और उन्हें हर प्रकार से रोचक बनाकर आकर्षक स्वरूप प्रदान किया जाता है। आइए देखें, कौन–सी सामग्री फीचर लेखन में सहायक और उपयोगी हो सकती है।

10.5.1 विषय और शोध

जहाँ तक खेल–परिणामों की बात है, तो वे संचार के सभी माध्यमों अर्थात समाचार पत्र, रेडियो, दूरदर्शन से उपलब्ध हो सकते हैं लेकिन खेल–प्रेमी के लिए मात्र परिणाम ही काफी नहीं होता। पाठक या श्रोता को विषय से संबंधित अनेक जानकारियों की आवश्यकता भी पड़ती है, जिन्हें आपको अपने प्रयासों से एकत्र करना होगा।

उदाहरण के लिए, भारतीय हॉकी टीम के किसी मैच पर फीचर लिखना है जिसमें कप्तान का खेल उल्लेखनीय रहा है और उसने गोल भी किया है। यह समाचार आपको संचार के अन्य माध्यमों से भी मिल सकता है किंतु विस्तृत जानकारी के लिए मैच देखना उपयोगी होगा। मैच देखते समय यह नोट करें कि शाहिद ने खेल की कौन–सी नीति अपनाई है? क्या उसने छोटे–छोटे 'पास का गेम' खेला? क्या डी" के ऊपर गोल के लिए तुरंत प्रयास किए? विपक्षी टीम के खिलाड़ी उसके बेहतर प्रदर्शन को कितना महत्व दे रहे थे? या वह बिना "चेक' किए ही रह गया था? उसने आक्रमण में योजनाएँ भी बनाईं या केवल अच्छे ''पास" का उपयोग ही कर सका? क्या वह अवसर पड़ने पर सुरक्षा के लिए अपनी टीम को सहयोग दे सका? आपका यह सूक्ष्म अवलोकन आपकी रचना में रंग भर देगा। लेकिन कप्तान के खेल पर ही आपकी टिप्पणियाँ काफी नहीं हैं। आपको अन्य जानकारियाँ भी जुटानी पड़ेंगी। कप्तान के इस मैच के गोल के अतिरिक्त उसके अपने व्यक्तिगत कुल गोल कितने हो गए हैं? मैच के परिणाम से भारतीय टीम की स्थिति कितनी मजबूत हुई है? इस खेल के बाद भारतीय टीम से जुड़ी आशाओं का उल्लेख भी किया जा सकता। है। मैच के फोटो मिल सकें और विशेष रूप से कप्तान के गोल करते समय का, तो फीचर और आकर्षक बन सकता है।

इन सभी बातों के लिए प्रयास करने होते हैं। उदाहरण के लिए, क्रिकेट में खिलाड़ियों के बनाए रनों का रिकॉर्ड आसानी से उपलब्ध हो जाता है और आँकड़े विभिन्न माध्यमों द्वारा सभी पिछले रिकार्डों के साथ भी उपलब्ध रहते हैं जबकि हॉकी में खिलाड़ी के व्यक्तिगत गोलों का रिकॉर्ड रखने का प्रचलन नहीं है। आपको या तो यह रिकॉर्ड स्वयं रखना होगा या जो संस्थाएँ मैच आयोजित करा रही हों, उनसे संपर्क करना होगा। इस प्रकार, कुछ सुझाव आपके शोध के लिए उपयोगी हो सकते हैं :

- अपने पसंदीदा खेलों पर लेखन कार्य करें।
- खेलों में अपनी जानकारी, उनकी पूर्व और भविष्य की प्रतियोगिताओं की जानकारी रखें।
- खिलाड़ियों के खेल प्रदर्शन पर अपने पठन और दीगर स्रोतों द्वारा पैनी नजर रखें।
- हो सके तो स्वयं खेल देखने का प्रयास करें।
- दर्शकों की प्रतिक्रियाएँ अवश्य नोट करते रहें।

10.5.2 तथ्यों का संकलन

तथ्यों के संकलन के लिए हमें संचार माध्यमों की सहायता लेनी पड़ेगी। रेडियो और दूरदर्शन पर समाचारों के अतिरिक्त विभिन्न समीक्षाएँ, टिप्पणियाँ, भेटवार्ताएँ और नियमित खेल कार्यक्रम भी प्रसारित होते रहते हैं। इन सभी कार्यक्रमों को नियमित रूप से सुनते–देखते रहना चाहिए। उनसे प्राप्त जानकारी को किसी डायरी वगैरह में रखने की आदत डालें। दैनिक/साप्ताहिक/मासिक पत्र–पत्रिकाओं को भी संभाल कर रखें। तथ्यों को शामिल करने से आलेख में जान आ जाती है और यह सुरक्षित रखने की तुलनात्मक दृष्टि अधिक कारगर होता है।

पुरानी पत्र–पत्रिकाएँ भी आपको पुस्तकालय से, मित्रों और मिलने वालों से प्राप्त हो सकती हैं। इनमें तथ्य तिथियों और अन्य विवरणों के साथ मिल जाते हैं। पुराने खिलाड़ियों और खेल प्रेमियों से बातचीत भी यदि आप रिकार्ड करके रख सकें तो वह समय पर उपयोगी हो सकती है।

10.5.3 फोटो

फोटो संकलन की आदत डालना भी आपके लिए जरूरी है। फीचर में फोटो अहम भूमिका निभाते हैं। इसका अनुभव आप किसी भी दिन के समाचार–पत्र को उठा कर देख सकते हैं। आदमी बिना पढ़े भी फोटो और उनके शीर्षक की ओर तुरंत ध्यान देता है। फिर कुछ 'खास क्षणों' के फोटो हमेशा–हमेशा के लिए यादगार बन जाते हैं। जैसे किसी दौड़ाक का 'दौड़' जीतते ही लिया गया फोटो। ऐसे अवसर पर हो सकता है आप भी उस दौड़ाक के साथ बात करते हुए अपना फोटो खिचंवा सकते हैं। उसका एक स्थायी महत्व होता है। किसी प्रसिद्ध व्यक्ति से बातचीत के समय का फोटो भी आप फीचर के साथ दे सकते हैं। पुरानी पत्र–पत्रिकाओं से भी फोटो संकलित किए जा सकते हैं और उचित अवसर पर उनका उपयोग किया जा सकता है। पटौदी और सोबर्स माने हुए क्रिकेट कप्तान रहे हैं। इनके बीच एक मैच के लिए'टॉस' करता फोटो जिसमें दोनों कप्तान अपने देश के कोट पहने हुए बीच मैदान में ऊपर उछाले हुए सिक्के को देख रहे हैं, आज भी रोमांच पैदा करता है। इसी तरह बिशन सिंह बेदी, वेंकटराघवन और चंद्रशेखर की तिकड़ी स्पिन गेंदबाजी में प्रख्यात

रही। उनकी उस जमाने की गेंदबाजी के ऐक्शन फोटो आज भी युवाओं में जोश और उत्साह भर सकते हैं। ध्यानचंद के हॉकी खेलते हुए फोटो आज भी प्रेरणादायी बन सकते हैं। अतः

- फोटो संकलन की आदत डालें।
- उचित अवसरों के फोटो या उचित अवसरों पर फोटो प्राप्त करने की कोशिश करें।
- किसी बड़े खिलाड़ी या व्यक्ति से बातचीत के दौरान फोटो खिंचवायें।
- खेल भावना और टीम भावना को दर्शाने वाले फोटो प्राप्त करने की चेष्टा करें।
- फोटो के लिए पुराने समाचार पत्र और पुरानी पत्रिकाओं का भी संकलन करें।

10.5.4 साक्षात्कार

साक्षात्कार अपने आप में एक अलग विधा है किंतु खेल फीचर के लिए इसका दायित्व और अधिक हो जाता है। साक्षात्कार करते समय कुछ बातों का खास ध्यान रखना होता है। जैसे, किसी खिलाड़ी से साक्षात्कार करते समय आप उसके खेल के अलावा उसकी शिक्षा, पारिवारिक स्थिति, उसके अन्य शौक की जानकारी भी ले सकते हैं। साक्षात्कार के दौरान उत्तर देते समय खिलाड़ी के हावभाव का उल्लेख कर सकते हैं,

जैसे–उन्होंने 'मुस्कुराकर जवाब दिया', 'उसने लंबी सांस ली', 'उसने अपनी यादों को सजाया आदि। बातचीत करते समय आप आसपास के वातावरण पर भी नज़र रख सकते हैं। ड्राइंग रूम में कौन–कौन सी तस्वीरें थीं, क्या विशेष सामान था। आपकी बातचीत के दौरान यदि कोई अन्य सदस्य भी साथ था तो टिप्पणियाँ, या उसकी दिलचस्पी का उल्लेख आप कर सकते हैं। इससे आपके फीचर में जो जीवंतता आएगी, वह लेखन की एक उपलब्धि होगी।

10.5.5 अन्य स्रोत

सामग्री संकलन के अन्य स्रोत भी हैं जो फीचर के लिए उपयोगी होते हैं। अतः संपर्क में रहना हमेशा लाभप्रद है। दैनिक समाचार, साप्ताहिक, मासिक पत्र, को पढ़ते रहने के अतिरिक्त रेडियो और दूरदर्शन के समाचार और खेल कार्य सुनते–देखते रहना भी जरूरी है। खेल फीचर में आँकड़े और तालिकाएँ महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसकी खास वजह है :

- तालिकाएँ कम स्थान में अधिक जानकारी देती हैं।
- इनसे एक दृष्टि में जानकारी मिल सकती हैं।
- तुलनात्मक दृष्टि से सामने आती है।
- लेखन को आकर्षक भी बनाती हैं।

10.6 सामग्री का संयोजन और संपादन

कहते हैं, मेजबान की कला अच्छे स्वादिष्ट खानों में कम, उसके परोसने की कला में अधिक है। यही बात फीचर लेखन पर भी लागू होती है। फीचर लिखते समय

संकलित सामग्री को हम किस प्रकार संजोते हैं, यह एक कला है। सभी कुछ बेतरतीब लिख देना ही काफी नहीं है।

सामग्री संकलन के बाद हमें फीचर के बुनियादी तत्वों को ध्यान में रखना होगा। क्या फीचर से संबंधित सभी तथ्य प्राप्त हो गए हैं? उससे जुड़ी जानकारियाँ जो दी जा सकती थीं, वे सभी उपलब्ध हैं? जिन तथ्यों को उजागर करना हो उनका अध्ययन करें। फीचर लिखने से पूर्व आप सभी सामग्री का ध्यान से अध्ययन कीजिए। गैर ज़रूरी सामग्री अलग कीजिए। विषय और उद्देश्य के अनुरूप लेखन के लिए एक रूपरेखा बनाइए और फिर उसी के अनुसार अपना लेखन शुरू कीजिए।

बोध प्रश्न –2

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1) खेलों पर फीचर लिखने के लिए किन बातों को अपनाना जरूरी है। किन्हीं चार बातों का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) तालिकाओं के किन्हीं दो लाभों का उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

3) फोटो के चयन के समय किन बातों का ध्यान रखना होता है? कोई तीन बातें बताइए।

.....

.....

.....

.....

4) खेल फीचर के विषय चयन में कुछ बातें जरूरी होती हैं–सही पर (√) का निशान और गलत पर (x) का निशान लगाइए।

क) विषय में स्वयं की रुचि होना जरूरी नहीं ।

ख) प्रकाशन की प्रकृति महत्वपूर्ण है।

ग) विषय प्रांसगिक होना चाहिए।

घ) खेल में विशेषज्ञता हो, यह आवश्यक नहीं।

5) खेल फीचर के तथ्यों का संकलन के लिए कौन–कौन से स्रोत हो सकते हैं।

.....

.....

.....

.....

.....

10.7 फीचर का लेखन

फीचर को मुख्यतः तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है–आरंभ, मध्य और अंत। अर्थात आपके पास जो सामग्री है, उसे तीन भागों में फैलाना होगा। उसे किस तरह संयोजित किया जाएगा, क्या सावधानियाँ रखनी होगी, आइए इसकी चर्चा कर ली जाए ताकि लेखन की कला स्पष्ट हो सके।

10.7.1 आरंभ

आरंभ फीचर का वह महत्वपूर्ण भाग है जिसे पाठक सबसे पहले पढ़ता है और निश्चय करता है कि उस फीचर को पूरा पढ़ना चाहिए या नहीं। लेखों के आकर्षक शीर्षक और आरंभ पाठक को पढ़ने के लिए बाध्य कर देते हैं। कुछ उदाहरणों से आपको स्पष्ट हो जाएगा। **'छोटी–सी बॉल की लम्बी दास्तां'** फीचर का आरंभ देखें –

''विश्व के सबसे पुराने खेलों में से एक है, फुटबॉल का खेल। सीधे से नियम, इस खेल में न के बराबर उपकरणों का इस्तेमाल और थोड़े ही समय में खत्म हो जाने वाले इस मैच के कारण यह खेल लगातार लोकप्रियता पाता रहा। इस खेल की शुरूआत के बारे में इतिहासकारों का नजरिया अलग–अलग है। इतना तय है कि फुटबॉल सबसे पहले इग्लैंड से शुरू हुआ था और 1963 में इस खेल की औपचारिक सैनटेनटों का जश्न बड़े जोर शोर से मनाया गया था। 26 अक्तूबर 1863 को इंग्लैंड में फुटबॉल एसोसिएशन का गठन हुआ था। इस एसोसिएशन ने ही इस खेल को दुनिया भर में लोकप्रिय करने का बीड़ा उठाया।''

उपर्युक्त फीचर के अंश में फुटबॉल के ऐतिहासिक आरंभ के साथ आलेख में पूरी रोचकता लाने का सफल प्रयास किया गया है। कुछ जिज्ञासा और प्रश्न भी दिमाग में स्वतः उठ खड़े होते हैं जो अपने रोमांच के साथ पाठक में आगे की कहानी जानने के लिए उत्सुकता पैदा करते हैं। दरअसल आरंभ को आकर्षक बनाने के लिए कोई भी पद्धति अपनाई जा सकती है, लेकिन तरीका वही होगा जिससे पाठक को आलेख की ओर आकृष्ट किया जा सके।

आरंभ लिखने के लिए कई तरीके हो सकते हैं। आप किसी खिलाड़ी के वक्तव्य से आरंभ कर सकते हैं। विवरणात्मक ढंग से भी आरंभ किया जा सकता है। चाहें तो आप साक्षात्कार के किसी हिस्से से भी आरंभ कर सकते हैं। आरंभ में विषय का संकेत, उसका बोध और आपकी सृजनशीलता का आभास पाठक को होना चाहिए। तभी फीचर का सफल आरंभ तैयार हो सकेगा। आपकी सुविधा के लिए आरंभ के दो उदाहरण हम और दे रहे हैं। **साप्ताहिक हिंदुस्तान** (24 जून, 1990) में प्रकाशित **चौदहवां विश्व कप : अखाड़ा दो दर्जन** दिग्गजों का (लेखक चरण पाल सिह

सोबती) एक से एक उदाहरण देखिए जिसमें विश्व कप चैम्पियनशिप में भविष्य की संभावनाओं से जुड़े सवालों की झड़ी लगाकर पाठकों में लेख के प्रति उत्सुकता और जिज्ञासा पैदा कर दी है।

''विश्व कप के 52 मैचों के बाद फुटबाल चैंम्पियन के नाम का पता लगेगा। क्या अर्जेंटीना फिर से विश्व कप चैंम्पियन होगा? क्या विश्व कप विजेता फिर से उन्हीं टीमों में से कोई एक होगा जो अब तक विश्व कप जीत चुकी हैं? क्या इस बार विश्व कप को कोई नया विजेता मिलेगा? जीत की एक जोरदार दावेदार टीम ब्राजील के कोच सेबस्टियाओ लैजरोनी का कहना है, 'यह विश्व कप के इतिहास का सबसे संतुलित विश्व कप है। इस बार एक–दो नहीं, कई टीमें जीत की दावेदार हैं।

इसी तरह से हर विश्व कप से कोई न कोई एक हीरो खिलाड़ी सामने आता रहा है–1982 में पालो रोसी और 1986 में डिएगो मेराडोना। इस बार कौन हीरो होगा? क्या फिर से मेराडोना? या हालैंड के रड गालिट और वैन बैस्टन? या ऐसा कोई खिलाड़ी जिसके बारे में अभी कुछ ज्यादा सुना ही नहीं गया? अब तक खेले जा चुके मैच क्या इस बारे में कुछ इशारा कर रहे हैं?

*एक अन्य उदाहरण देखिए जो **'सपने में सानिया'** शीर्षक फीचर से लिया गया है।*

''एक साल पहले तक जो लड़कियां डांस फ्लोर पर थिरकते हुए पाई गई थीं, उनके कदम आज टेनिस कोर्ट की ओर बढ़ने लगे हैं। जो लड़कियाँ ऐश्वर्य राय बनने का सपना संजोया करती थीं, उनमें सानिया मिर्जा बनने की होड़ मची है। टेनिस की सनसनी सानिया का जादू शहर के टीनएजर्स के सिर में चढ़कर बोल रहा है। वे पूरी तरह सानिया के रंग में डूबी नजर आ रही हैं। स्कूल से लेकर कॉलेज तक की छात्राओं पर टेनिस का बुखार चढ़ चुका है। कॉलेज की जिन छात्राओं में बैटिंग मैस्ट्रो सचिन तेंदुलकर के खेल की चर्चा होती थी, वे आज सानिया का नाम लेते नहीं अघातीं। होस्टल के कमरों की जिन दीवारों पर अन्ना कुर्निकोवा, मारिया शारापोवा या बेकहम के पोस्टर हुआ करते थे, वहां आज सानिया की तस्वीरें टंग चुकी हैं।''

(यशवंत सिंह, सहारा समय, 1 अक्तूबर, 2005)

10.7.2 मध्य

फीचर का वह भाग है जो उसे विस्तार देता है। यह भाग महत्वपूर्ण है। किसी पेड़ की जड़ें उसे मजबूती प्रदान करती हैं और ऊपरी हिस्से की उपयोगिता पत्ते और फल–फूल की वजह से होती है लेकिन पेड़ को सीधा खड़ा तो मध्य भाग यानी उसका तना ही रखता है। फीचर का मध्य भाग भी यही कुछ भूमिका निभाता है। इसे बहुत अधिक विस्तार नहीं देना होता, हाँ, विवरण अधूरा न लगे इसका ध्यान रखना चाहिए। भाषा सरल और शैली आकर्षक हो। आँकड़े और तथ्य देने जरूरी हैं। किंतु आँकड़ों की भरमार से इसे बोझिल नहीं होने देना चाहिए। ।

सही विस्तार देते समय विषय की प्रासंगिकता, उपयोगिता और सामयिकता का ध्यान रखें। विस्तृत फीचर को पत्र–पत्रिका में स्थान मिलना मुश्किल होता है और बहुत छोटा फीचर अगर कुछ जिज्ञासाएँ छोड़ता है तो भी बात नहीं बनती। उदाहरण के लिए एक नए उभरते खिलाड़ी पर जो फीचर तैयार होगा उसे निश्चित ही विश्व कप फुटबॉल या ओलम्पिक पर लिखे फीचर से कम महत्ता मिलेगी। किंतु परिस्थितियाँ विपरीत भी हो सकती हैं। यदि जूनियर खिलाड़ियों की कोई महत्वपूर्ण प्रतियोगिता

चल रही है, जहाँ उनका चयन राष्ट्रीय टीम या अंतरर्राष्ट्रीय स्तर के महत्वपूर्ण मुकाबलों के लिए होना है और विश्व कप फुटबॉल या ओलम्पिक में अभी लगभग एक वर्ष बाकी है तब जूनियर खिलाड़ी या उनकी प्रतियोगिता पर लिखे फीचर की अधिक उपयोगिता होगी। अर्थात इसका कोई विशेष नियम नहीं है पर जैसा कि हमने कहा, समय का तकाजा और विषय की प्रासंगिकता स्वयं इसका निर्धारण करते हैं। यही बात भाषा, संतुलित आँकड़ों और सामग्री की आकर्षक प्रस्तुति पर भी लागू होती है। नीचे हम दो फीचरों के मध्य भाग के अंश दे रहे हैं। आपको भाषा और सामग्री के जमाव का अंदाज हो सकेगा। सुरेश कौशिक लिखित **'खेलों का खेल है फुटबॉल'** से एक उदाहरण जो 3 जून, 1990 के **'जनसत्ता'** में प्रकाशित हुआ था।

''फुटबॉल की कहानी इतनी अनोखी है कि खेल के हर पहलू को गहराई से समझने को प्रेरित करती है। उस खेल को, जो लोगों के लिए तो उद्योग बन गया है जबकि अनगिनत लोगों के लिए मजहब। और जहाँ इस कप का आयोजन होता है, वहाँ का वातावरण फुटबॉलमय हो जाता है। नाचने–गाने के माहौल से गलियों की रौनक बढ़ जाती है। झंडे, बैनर, कारों के हॉर्न, समुद्री जहाजों के साइरन का शोर, रंग–बिरंगी छटा और मस्ती में लोग अपने को भूल जाते हैं। मरे हुए दिल जीवंत हो उठते हैं। खेल उतार–चढ़ाव और रोमांच को कई बर्दाश्त भी नहीं कर पाते हैं और उनके दिल की धड़कन जवाब दे जाती है।

कौशल के अलग नजारों में सबसे ज्यादा फायदे में रहते हैं गोल बनाने वाले खिलाड़ी। यद्यपि टीम की जीत में हर खिलाड़ी का अपना योगदान रहता है लेकिन गोल करने वाले को ज्यादा प्रसिद्धि मिलती है। गोल करने पर ही तो टीम जीतेगी। और इसी में तो मज़ा है और जब फुटबॉल की बात चलती है तो यह सवाल एकाएक उठता है कि फुटबॉल इतिहास का महान खिलाड़ी कौन है? इसमें पेले को सबसे ऊपर रखा जाता है। वैसे फुटबॉल पंडितों का नज़रिया थोड़ा अलग भी है। गेम को नियंत्रण करने की क्षमता से कुछ, डी स्टीफनों को बढ़िया आल राउंड खिलाड़ी मानते हैं, कुछ का कहना है चरम पर जार्ज बेस्ट के मुकाबले दूसरा कोई नहीं। अलग–अलग राय में पुस्कास, डीन, गालाचार, बेकनबाउर और मैराडोना के नाम आ सकते हैं। लेकिन यह बहस खत्म नहीं होगी जब तक फुटबॉल रहेगी।''

जनसत्ता में ही **21 अगस्त 2005** को सुरेश कौशिक द्वारा लिखित फीचर 'अजूबा वार्न का' के मध्य का एक सुन्दर उदाहरण देखिए –

''बहरहाल उपलब्धियां और विवाद वार्न के करियर की शुरूआत से ही जुड़े हैं। 1992 में श्रीलंका दौरे पर उनके दामन पर पहला दाग लगा था। तब उन्होंने अपने साथी मार्क वॉ के साथ भारतीय सट्टेबाज को जानकारियां उपलब्ध करवाने के लिए पैसे लिए थे। पता चलने पर बाद में आस्ट्रेलियाई क्रिकेट अधिकारियों ने उन पर जुर्माना ठोका था। फिर चार साल बाद आईसीसी ने वार्न पर जुर्माना लगाया। वजह यह थी कि उन्होंने श्रीलंका टीम के अर्जुन राणातुंगा के खिलाफ टिप्पणी कर दी थी। बाद में वे कुछ दूसरे मामलों से भी जुड़े, पर हर बार वे मुश्किल से निकलते रहे। खासियत यह रही कि इन घटनाओं का असर उन्होंने अपनी गेंदबाजी पर नहीं होने दिया। अपनी लय को उन्होंने बिगड़ने नहीं दिया। इसलिए खेल में वापस लौटने पर उनको कभी मुश्किल नहीं आई।

वार्न की यह खूबी उन्हें विश्व का महानतम गेंदबाज बनाती है। उनमें अकेले दस मैच का परिणाम पलटने की क्षमता है। स्पिनर के रूप में उनकी गेंदबाजी जहां नपी–तुली

है, वहीं उसमें पैनापन और विविधता भी है। उनकी यही खासियत उन्हें दूसरे गेंदबाजों से अलग करती है।

वनडे हो या टेस्ट क्रिकेट, शेन वार्न दोनों ही शैलियों में बेजोड़ रहे हैं। महत्वपूर्ण मौकों पर विकेट लेकर उन्होंने मैच का परिणाम आस्ट्रेलिया के पक्ष में किया है। वे सही मायनों में मैच विनर रहे हैं। खासतौर से वन डे मैचों में, जहां गेंदबाजों को ताबड़तोड़ अंदाज में कूटने के लिए बल्लेबाज तैयार रहते हैं। लेकिन उन्होंने अपनी सूझबूझ और चतुराईपूर्ण गेंदबाजी से वनडे में भी स्पिनर की भूमिका को अहमियत दिलाई।'

तस्वीरें फीचर को जीवंत और आकर्षक बनाती है। मध्य भाग को संतुलित और प्रभावी बनाने में तालिकाएं भी महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाती हैं।

10.7.3 अंत एवं शीर्षक

'अंत' फीचर का तीसरा और अंतिम भाग है। फीचर का किस प्रकार समापन किया जाए कि उसका असर हमेशा के लिए बना रहे? यद्यपि कुछ फीचर विषय की दृष्टि से बहुत स्थायी नहीं होते हैं, फिर भी उसके 'अंत' में दी गई आपकी टिप्पणी, निष्कर्ष उसे प्रभावी बनाए रखते हैं और यही फीचर की सफलता है।

3 जून, 1990 के **'जनसत्ता'** में विश्व कप फुटबॉल को केंद्रित कर सुरेश कौशिक ने **'खेलों का खेल है फुटबॉल'** शीषर्क फीचर का अंत इस प्रकार किया है –

''यों मज़बूत दावा पाँच टीमों–अर्जेंटीना, यूरोपीय चैंपियन नीदरलैंड, मेजबान ब्राज़ील और पश्चिमी जर्मनी का है लेकिन बेल्जियम, यूगोस्लाविया, स्पेन और इंग्लैंड भी सफलता के साथ जुट सकती हैं। लेकिन निर्णायक भूमिका माराडोना, एडगुलिट, मारको वान बेस्टेन जैसे सुपर स्टार खिलाड़ी निभाएंगे। कोई नया सितारा भी आश्चर्यजनक प्रदर्शन से अपनी टीम को नई ऊंचाइयों पर ले जा सकता है। सभी पुरानी चर्चाएँ और यादें एक इतिहास बनकर रह जायेंगी। जब 8 जून को इटली में 24 टीमों में विश्व चैंपियन बनने की जंग शुरू होगी, विश्व की फुटबॉल शक्तियाँ उन उभरते हुए देशों की टीमों से खेंलेंगी जो नई पहचान बनाने की कोशिश में रहेंगी और जब एक महीने वह फुटबॉल मेला समाप्त होगा तो शायद लातिन अमेरिका या यूरोप की ही किसी टीम को विश्व चैंपियन का सेहरा बंधेगा।''

उपर्युक्त उदाहरण से एक बात और स्पष्ट है कि अंत में निष्कर्ष निकालने के लिए और अपना अनुमान बनाने के लिए समीक्षात्मक दृष्टि समृद्ध होनी चाहिए।

अक्सर खेल फीचर में अंत को इतना महत्व नहीं देते हैं और विवरण के साथ ही फीचर को भी खत्म करते हैं।

कुल मिलाकर फीचर में अंत को भी महत्व दिया जाना चाहिए पर फीचर का अंत कोई न कोई निष्कर्ष, अनुमान या संदेश लिए हुए हो तो बेहतर है। अंत में **'अपराजित चैंपियन का रहस्य'** शीर्षक से 8 फरवरी, 1986 की **'खेल हलचल'** में छपे फीचर का यह उदाहरण देखें जिसमें खिलाड़ी के शीर्ष स्थान पर पहुंचकर हटने से मिलने वाली इज्जत का संदेश छुपा हुआ है।

''दो वर्ष बाद ही हर्ब ने रोम ओलम्पिक में 1500 मीटर की दौड़ रिकार्ड समय में जीत ली और यही दौड़ उसकी अंतिम दौड़ सिद्ध हुई। अब वे शादी कर चुके थे और पिता

बन चुके थे। उनकी जिम्मेदारियाँ भी अब बढ़ चुकी थीं। हर्ब स्टेडियमों की चकाचौंध भूलकर उच्च अध्ययन के लिए कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी चले गए। उन्हें इस बात का संतोष था कि अपराजित रहकर ही उन्होंने निवृत्ति की घोषणा की। ऐसे कम ही खिलाड़ी होते हैं जो कैरियर के शीर्ष पर होते हुए निवृत्ति की घोषणा कर देते हैं। मगर हर्ब इलियट एक अलग किस्म का था।''

खेल फीचर का शीर्षक भी आकर्षक होना चाहिए। उनमें विषय का संकेत और फीचर के केन्द्रीय भाव का उल्लेख भी होना चाहिए।

10.7.4 भाषा और शैली

खेल फीचर अपनी भाषा और शैली के कारण अन्य फीचर से भिन्न हो जाता है। रन अप, स्कोर, गोल, पेनाल्टी कॉर्नर, एल.बी.डब्ल्यू, हिट विकेट, लॉबी, स्मैश, हैटट्रिक आदि ऐसी शब्दावली खेलों के लिए प्रयुक्त होती है।

फीचर शैली की विशेषता यह है कि वह सादगीपूर्ण हो, समझ में आने लायक हो, किंतु यथार्थ को मनोरंजक ढंग से प्रस्तुत कर सके। सही शैली पाठकों में विश्वास उत्पन्न करती है जो एक बड़ी सफलता है। शब्दों का अनुचित चयन, भाषा और शैली दोनों को बिगाड़ता है। एक उदाहरण देखें –

''वहीं भारत–पाकिस्तान श्रृंखला में 'पेनाल्टी कार्नर जल्लाद' के रूप में प्रतिष्ठित रोहिंदर पाल इस स्पर्धा में बौने साबित हुए। उक्त उदाहरण में शब्द 'जल्लाद' और 'बौने' अनुपयुक्त लगते हैं और दोनों में तालमेल का भी अभाव है। ऐसे अवसर पर केवल 'पेनल्टी कार्नर–विशेषज्ञ' लिखना उचित था। 'बौने' की जगह 'नाकाम' लिखना बेहतर रहता।''

कभी–कभी आम बोलचाल में जो शब्द खेलों से जुड़े नहीं दिखते थे वे भी खेल फीचर के लिए कहीं उपयुक्त बन जाते हैं और इन शब्दों के मायने कुछ के कुछ हो जाते हैं। उदाहरण के लिए –

''भारतीय हॉकी की दुर्दशा से है जो काफी घायल अवस्था में है।''

इसमें घायल का तात्पर्य हॉकी की दुर्दशा से है, किंतु इस उदाहरण में दुर्दशा से कहीं अधिक 'घायल' शब्द उपयुक्त लगता है।

एक अन्य उदाहरण में भाषा की जटिलता देखें –

''कई वर्ष बाद इस वर्ष यह कहा जा सकता है कि तीनों प्रमुख टीमों की ताकत कम अधिक एक समान है।''

यहाँ 'ताकत कम अधिक एक समान' कहने से कोई भी अर्थ स्पष्ट नहीं होता।

खेल फीचर में तकनीकी शब्दावली का सावधानीपूर्वक इस्तेमाल करें। विभिन्न खेलों के अपने तकनीकी शब्द होते हैं। खेल के तकनीकी पक्ष की सही जानकारी के बिना आप इन शब्दों का उपयुक्त ढंग से इस्तेमाल नहीं कर सकेंगे। इसके लिए जरूरी है कि आप खेलों को ध्यानपूर्वक देखें और उनके इस पक्ष पर विशेष ध्यान दें। इसीलिए खेल फीचर में भाषा और शैली पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है।

बोध प्रश्न 3

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1) फीचर को आरंभ करने के तीन तरीके बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) फीचर के मध्य भाग को विस्तार देने के लिए किन बातों पर ध्यान देना जरूरी है?

.....

.....

.....

.....

.....

10.8 शब्दावली

रन: क्रिकेट के दो विकेट के बीच 22 गज की दूरी का फासला जिसे दौड़कर पूरा करने पर एक रन बनता है। मैच के अंत में रनों के आधार पर ही हार–जीत का निर्णय होता है।

एमेच्यर: अव्यवसायी, शौकीन।

लीग कम नॉक आउट : लीग पद्धति में हर टीम एक–दूसरे से मैच खेलती है। नॉकआउट पद्धति में हारने वाली टीम प्रतियोगिता से बाहर होती जाती है।

पिच: क्रिकेट खेलने की पट्टी।

हेट्रिक : लगातार तीन बार।

एल.बी.डब्ल्यू : पगबाधा, क्रिकेट में यदि विकेट पर जाती हुई गेंद पैरों से लगे तो खिलाड़ी एल.बी.डब्ल्यू. आउट दिया जाता है।

हिट : शॉट ।

पास : गेंद आगे बढ़ाना।

डी : हॉकी में मैदान का विशेष क्षेत्र जहाँ से गोल किया जाता है।

सैनेटेनरीचूरी : 100 वर्ष।

लॉन्ग शॉट : गेंद को उछाल कर मारना।

पेनाल्टी कार्नर : हॉकी में बैंक लाइन से 25 गज के क्षेत्र में किसी भी नियम के भंग होने पर विरोधी टीम को पेनाल्टी कार्नर दिया जाता है। इसमें उस टीम का एक खिलाड़ी बैंक लाइन से गेंद को स्ट्राइकिंग सर्कल के ऊपर साथियों के पास फेंकता है और उन्हें विरोधी टीम के केवल पाँच खिलाड़ियों के विरुद्ध गेंद को गोल बाक्स में पहुंचाना होता है।

10.9 सारांश

- फीचर, लेखन की एक आकर्षक शैली है और खेलकूद पर फीचर लेखन से कई लोगों ने प्रसिद्धि हासिल की है। केवल अच्छे फीचर ही ऐसी धरोहर होते हैं जो लंबे समय तक दिलचस्पी कायम रखते हैं। इस इकाई में खेल फीचर के अभिप्राय को स्पष्ट करने के साथ–साथ उसके विषय का चुनाव किस प्रकार किया जाए, यह बताया गया है।

- इसके लिए खेल फीचर के प्रकारों की जानकारी दी गई है। किसी खेल, खिलाड़ी, या किसी प्रतियोगिता के अतिरिक्त भी आप कोई और विषय चुन सकते हैं। पैसे, खेलों से जुड़ी विभिन्न हस्तियों–अम्पायर, खेल कमेंटेटर आदि तथा किसी विशेष खेल संस्थान या मैदान या स्टेडियम पर भी फीचर लिखे जा सकते हैं।

- कौन–सा विषय आपके लिए उपयोगी रहेगा, इस संबंध में आपकी रुचि और विषय की प्रासंगिकता को महत्वपूर्ण बताया गया है। फीचर लेखन के लिए सामग्री संकलन एक महत्वपूर्ण कार्य है। विषय से जुड़े तथ्य, फोटो, विभिन्न साक्षात्कार और आपका अपना शोध, लेखन को आसान और रुचिकर बना सकता है।

- सामग्री को किस प्रकार प्रस्तुत किया जाए, इसके लिए फीचर के तीन मुख्य भागों आरंभ, मध्य और अंत की भी बात हुई है। इसके अतिरिक्त फीचर की भाषा–शैली पर विचार किया गया है। भाषा सरल हो, उसमें गति, प्रवाह हो, पैनापन और शैली रोचक और आकर्षक हो, जिससे फीचर तथ्यों और आंकड़ों की वजह से बोझिल न लगे।

- आशा है, इस इकाई को पढ़ने के बाद आप खेल फीचर लेखन की ओर प्रवृत्त होंगे और यह इकाई उसमें मददगार सिद्ध होगी।

अभ्यास

1) आपको जो खेल प्रिय हो, उससे संबंधित किसी अनुभव का उल्लेख कीजिए। यह उल्लेख खिलाड़ी या दर्शक, किसी भी रूप में हो सकता है उत्तर दस पंक्तियों से अधिक न हो।

.....

.....

.....

.....

2) आपको अपने शहर की फुटबॉल प्रतियोगिता पर फीचर लिखने के लिए सामग्री एकत्र करनी है। बताइए कि आप क्या–क्या सामग्री एकत्र करेंगे?

.....

.....

.....

.....

.....

3) किसी प्रतियोगिता के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी पर फीचर लिखने के लिए आप क्या तैयारी करेंगे?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4) अपने नगर में आयोजित किसी खेल प्रतियोगिता को देखें तथा उसके विवरण के आधार पर एक फीचर तैयार करें (लगभग 200 शब्दों में)।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

5) मुहम्मद कैफ या सानिया मिर्जा के खेल जीवन पर लगभग 15 पंक्तियों में एक फीचर लिखिए। इसके लिए पुस्तकालयों में उपलब्ध सामग्री का उपयोग करें और फीचर में खिलाड़ी का संक्षिप्त परिचय, खेल जीवन, उसकी उपलब्धियाँ, खेल तकनीक की विशेषता को भी अवश्य शामिल करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6) उपर्युक्त फीचर लेख का उचित शीर्षक दें।

10.10 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) i) उसमें खेल के नियम और तकनीकी पक्ष का ध्यान रखना होता है।
   ii) खेल से संबंधित आँकड़ों का ध्यान रखना होता है।
   iii) खेल की खास शब्दावली में पारंगत होना होता है।
2) खेल आधारित फीचर में खेल के संबंध में परिचयात्मक विवरण दिया जाता है जबकि प्रतियोगिता में खेल से संबंधित प्रतियोगिता को विषय बनाया जाता है।
3) क) खिलाड़ी आधारित क्योंकि इस फीचर के केंद्र में ध्यानचंद होंगे।
   ख) अन्य खेल फीचर के अंतर्गत क्योंकि यह शेष तीनों प्रकारों से संबद्ध नहीं है।
   ग) प्रतियोगिता आधारित–डेविस कप, टेनिस से संबंधित।
   घ) अंतरराष्ट्रीय खेल आधारित–शतरंज के खेल के बारे में।

बोध प्रश्न 2

1) i) रुचि और जानकारी वाले खेलों का चयन।
   ii) फोटो संकलन की आदत।
   iii) पुराने महत्वपूर्ण लेख और तालिकाओं का संकलन।
   iv) संभव हो तो मैच अथवा प्रतियोगिता स्वयं देखना।
2) i) तालिकाओं से तुलनात्मक आँकड़े प्राप्त होते हैं।
   ii) इनसे फीचर में आकर्षण बढ़ता है।
3) कम जगह में ज्यादा सूचना दी जा सकती है।
   i) फोटो महत्वपूर्ण व्यक्ति के हों।
   ii) विशेष अवसर के हों।
   iii) फोटो ध्यान आकर्षित करने वाले हों।
4) क)x ख) √ ग) घ) x
5) i) रेडियो ii) दूरदर्शन iii) पत्र–पत्रिकाएँ iv) पुस्तकें v) स्वयं खेल का मैदान जहाँ खेल हो रहे हों।

बोध प्रश्न 3

1) i) किसी समीक्षक या खिलाड़ी के वक्तव्य से ।
   ii) किन्हीं जिज्ञासु और उत्सुकतापूर्ण प्रश्नों से।
   iii) विवरणात्मक ढंग से।
2) i) सामग्री का जमाव आकर्षक ढंग से किया जाए।
   ii) भाषा सरल और शैली रोचक हो।
   iii) भाषा सरल संतुलित आँकड़े सम्मिलित किए जाएँ।

अभ्यास

1) उत्तर स्वयं लिखिए।
2) i) प्रतियोगिता का परिचय और इतिहास

ii) प्रमुख टीमों और खिलाड़ियों का विवरण

iii) प्रतियोगिता पर आपके अनुमान और निष्कर्ष

3) i) खिलाड़ी का परिचय प्राप्त करना

ii) उसकी उपलब्धियों के आँकड़े प्राप्त करना

iii) उसकी खेल तकनीक की विशेषता, अन्यों से तुलना के लिए सामग्री एकत्र करना।

iv) उससे बातचीत करना और अन्य विशेषज्ञों की राय लेना।

4) 5) और 6) का उत्तर आप स्वयं लिखिए।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 11 समुदाय संबंधी फीचर : विषय का चयन

इकाई की रूपरेखा

11.0 उद्देश्य

11.1 प्रस्तावना

11.2 समुदाय के लिए लेखन का अभिप्राय

11.3 समुदाय के लिए लेखन का महत्व

11.4 सामाजिक पृष्ठभूमि

11.5 समुदाय संबंधी लेखन के विभिन्न क्षेत्र

- 11.5.1 आदिवासी समुदाय
- 11.5.2 हाशिये पर लोग
- 11.5.3 नई सामुदायिक चेतना

11.6 विषय पर लेखन के प्रकार

- 11.6.1 आदिवासी समुदायों की जीवन–शैली
- 11.6.2 लोक कलाएं और कलाकार
- 11.6.3 समुदायों में बदलाव
- 11.6.4 सामुदायिक संघर्ष की कथा
- 11.6.5 पहचान बनाने की जद्दोजहद
- 11.6.6 आत्मनिर्भरता और सहयोग

11.7 खत्म होते समुदाय

11.8 विषय का चयन

- 11.8.1 रुचि और विशेषज्ञता
- 11.8.2 लेखन का उद्देश्य और प्रासंगिकता
- 11.8.3 प्रकाशन की प्रकृति

11.9 सामग्री का संकलन

- 11.9.1 विषय पर शोध
- 11.9.2 तथ्यों का संकलन
- 11.9.3 साक्षात्कार
- 11.9.4 फोटो और अन्य सामग्री

11.10 सामग्री का संयोजन और संपादन

- 11.10.1 आरंभ
- 11.10.2 मध्य
- 11.10.3 अंत और शीर्षक

11.11 भाषा शैली

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

11.12 सारांश

11.13 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

11.14 कुछ उपयोगी पुस्तकें

11.0 उद्देश्य

इस इकाई में आप विभिन्न समुदायों को ध्यान में रखकर लिखे जाने वाले फीचर के बारे में व्यावहारिक ज्ञान हासिल कर सकेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- समुदाय के बारे में लिखे जाने वाले फीचर की विषयवस्तु और सामाजिक पृष्ठभूमि की समझ हासिल कर सकेंगी/सकेंगे और समुदाय पर फीचर लेखन के महत्व और पत्रकारिता में उसकी जरूरतों को समझ सकेंगी/सकेंगे;
- यह जान सकेंगी/सकेंगे कि समुदाय को केंद्र में रखकर किन क्षेत्रों में फीचर लेखन किया जा सकता है;
- फीचर लेखन के लिए विषय के चयन और उसके लिए आवश्यक तैयारी के बारे में व्यावहारिक ज्ञान हासिल कर सकेंगी/सकेंगे, तथा
- फीचर के आरंभ, मध्य और अंत की तकनीकी जानकारी तथा इस तरह के फीचर में इस्तेमाल होने वाली भाषा–शैली की जानकारी हासिल करते हुए समुदाय पर एक बेहतर फीचर लेखन की क्षमता का विकास कर सकेंगी/सकेंगे।

11.1 प्रस्तावना

समाचार पत्रों के लिए फीचर लेखन से संबंधित व्यवहारमूलक पाठ्यक्रम की इस इकाई में हम आपको समुदाय पर लिखे जाने वाले फीचर के बारे में जानकारी देंगे। इसमें हम आपको बताएंगे कि कैसे भारतीय समाज में हाशिये पर रहने वाले समुदायों में अपनी अस्मिता और पहचान को लेकर जागरूकता आई है। कैसे वे मुख्य धारा में शामिल होने की जद्दोजहद में हैं। हम उस सामाजिक पृष्ठभूमि को समझने का प्रयास करेंगे जिनसे इन समुदायों को ज्यादा आत्मीय तरीके से और गहराई से समझा जा सके। इनकी समझ हमें एक अच्छे फीचर की विषय वस्तु तैयार करने में मददगार साबित होगी। हम विस्तार से बदलती सामाजिक पृष्ठभूमि तथा भारत के आर्थिक–सामाजिक परिदृश्य में इन समुदायों को समझने का प्रयास करेंगे। हम यह देखेंगे कि समुदायों से जुड़े वे कौन से प्रमुख मुद्दे हैं, जिनके आधार पर फीचर तैयार करने के लिए दिशा–संकेत मिल सकते हैं। इस तरह के फीचर में प्रयोग होने वाली भाषा–शैली और उसकी बुनावट पर अलग से विचार किया जाएगा। इससे आपकी इन वर्गों पर लिखे जाने वाले फीचर की प्रस्तुति को बेहतर बनाने में मदद मिलेगी।

11.2 समुदाय के लिए लेखन का अभिप्राय

समाजशास्त्र में समुदाय को ऐसे सदस्यों के समूह के तौर पर परिभाषित किया गया है, जहां समूह के सदस्य सिर्फ किसी विशेष लाभ के चलते नहीं, बल्कि जीवन की कुछ बुनियादी स्थितियों के चलते एक साथ रहते हैं। सामान्य तौर पर माना जाता है कि एक समुदाय का हिस्सा बने व्यक्ति के जीवन की संपूर्ण बुनियादी आवश्यकताएं उसी समुदाय में पूरी हो जाती हैं, मगर आधुनिक समाज में कोई समुदाय अपने चारों

तरफ ऐसी चारदीवारी नहीं खींच सकता जो व्यक्ति को शेष दुनिया से काट कर रखे। आधुनिक समाज में समुदाय के भीतर कई समुदाय अपना अस्तित्व बनाकर रखते हैं। शहर एक क्षेत्र का हिस्सा हो सकता है, वह क्षेत्र देश का वृहत्तर वैश्विक समुदाय का हिस्सा होता है।

आरएम मैकाइवर और चार्ल्स एम. पेज ने अपनी किताब 'सोसाइटीः एन इंट्रोडक्टरी ऐनेलिसस' में समुदाय के लिए स्थानीयता और सामूहिक संवेदना को बुनियादी तत्व के बतौर स्वीकार किया है। उनका मानना है कि कोई भी समुदाय अपनी स्थानीयता अस्तित्व ग्रहण करता है, भले वह बंजारा यानि घुमंतू समाज ही क्यों न हो?। एक खास इलाके और समूह भावना को बल देने वाले रीति–रिवाजों और आदतों से बंधा होता है। दूसरी तरफ, आज मौजूदा संदर्भों में पूरी तरह से सामुदायिक संवेदनाओं के विभिन्न तत्वों को विश्लेषण भी करना होगा। एक खास किस्म की सामुदायिक भावना से जुड़े लोग दुनिया भर में बिखरे हो सकते हैं वहीं, एक ही शहर में तमाम भाषाओं, जाति, धर्म और नस्लों के लोग मौजूद रहते हुए भी किसी समुदाय का हिस्सा हो सकते हैं।

समुदाय को सामान्य अर्थों में परिभाषित करने के बाद अब हम यह देखते हैं पत्रकारिता में इस पर केंद्रित फीचर लेखन की क्या संभावनाएं विकसित हुई हैं। हाल के वर्षों में आई सूचना क्रांति की सामुदायिक लेखन को मुख्यधारा में लाने में बड़ी भूमिका रही है। टेक्नोलॉजी के विकास, सूचना क्रांति और विभिन्न सामाजिक आंदोलनों ने उन सामाजिक इकाइयों को अपनी बात मुख्यधारा तक पहुंचाने का मौका दिया जो अभी तक हाशिये पर थे। वहीं मीडिया ने भी अपनी खोजपरक शैली में हाशिये पर खड़े लोगों को स्वर दिया और मुख्य धारा में शामिल होने की उनकी जद्दोजहद में मददगार साबित हुआ। आजादी के बाद भारतीय पत्रकारिता की बड़ी उपलब्धि सामुदायिक चेतना को स्वर और बल देना है। देखते–देखते दूरदराज के गांव, जनजातीय समुदाय, समाज में हाशिये पर पड़े समुदायों के लोग इसी पत्रकारिता की बदौलत अपनी मौजूदगी दर्ज कराने लगे हैं। उदाहरण देखें –

''वैज्ञानिकों का मानना है कि जहां गर्बियांग बसा है वहां हजारों साल पहले एक झील थी। जाने–माने भूगर्भशास्त्री एवं हिमालयीय भूगर्भवेत्ता डा. खड्ग सिंह वल्दीया पिछले वर्ष इस गांव में गए थे। उनका कहना है कि यह गांव 50 से भी ज्यादा वर्षों से धंस रहा है जिसका कारण इसका एक पुराने समय में लुप्त हुई झील की नरम जमीन पर बसा होना है। इस जमीन को काली नदी की तेज धारा नीचे से लगातार काट रही है और इसका ऊपरी हिस्सा धंस रहा है। वैज्ञानिक यह भी मानते हैं कि ज्यादा आबादी का बोझ झेलते वक्त गांव के धंसने की रफ्तार भी ज्यादा थी और बड़ी तादाद में लोगों के पलायन के बाद से गांव का धंसना भी कम हो गया है।''

(पांव तले नहीं हैं जमीं, महेश पांडे, इंडिया टुडे, 8 अगस्त 2005)

11.3 समुदाय के लिए लेखन का महत्व

अघोषित तौर पर समुदाय के लिए लेखन पत्रकारिता का एक अहम हिस्सा बन चुका है। अंग्रेजी के मुकाबले हिन्दी पत्रकारिता में सामुदायिक चेतना पर कम काम नहीं हुआ है, पर इसे सुनियोजित तौर पर परिभाषित करने और सामने लाने की कोशिश नहीं की गई है। समुदाय के लिए फीचर लेखन एक बेहतर उद्देश्य को लेकर चलने

वाली पत्रकारिता का हिस्सा है। हैरत की बात है कि बीते सालों में व्यावसायीकरण का खासा दबाव होने के बावजूद पत्रकारिता ने अपनी इस खूबी को जीवित रखा है।

किसी विशेष समुदाय के अनूठेपन, हालात और संघर्ष को सामने लाने वाली रिपोर्टों तथा फीचरों की संख्या में इजाफा हुआ है। समुदाय के लिए लेखन की प्रकृति गंभीर होती है और इसके लिए गहन शोध और स्थितियों के सीधे आंकलन की जरूरत पड़ती है। समुदाय को केंद्र में रख कर तैयार फीचर देश के कोने–कोने में मौजूद विविधता से भरी लोक संस्कृति को सामने लाने में मदद करते हैं। तमाम जनजातियों और आदिवासी समूहों के संघर्षों और उनकी कठिनाइयों की तरफ सभ्य समाज का ध्यान आकर्षित किया है। हमारे समाज में हाशिये पर मौजूद तमाम वर्गों की उपेक्षा और दर्द को स्वर दिया है। इतना ही नहीं समुदाय के लिए लिखे जाने वाले फीचरों की मदद से ही हम मौजूदा समाज में मौजूद उन छोटी इकाइयों और उनके कामकाज को पहचान पाते हैं जो बिना किसी शोर–शराबे के खामोशी से अपने काम में लगे हैं। देखें उदाहरण –

''फर्राटेदार अंग्रेजी बोलने वाली रेशमा हबीब कहती हैं, 'मैं सांख्यिकी का अध्ययन कर रही हूँ' मुझे इस पर विश्वास ही नहीं होता। उसे जानने वाले दूसरे लोगों को भी विश्वास नहीं होता। बंगलूर के राजेंद्रनगर में पांच बच्चों वाले एक गरीब परिवार की 16 वर्षीय रेशमा ने वाकई लंबा सफर तय किया है। वह अपने परिवार के साथ एक झुग्गी बस्ती में रहती है। पिता दिल के मरीज हैं और मां घरेलू महिला हैं। परिवार में सिर्फ एक भाई काम करने वाला है, सो रेशमा के लिए स्कूली शिक्षा हासिल करना लगभग नामुमकिन था। लेकिन उसने 58 फीसदी अंकों के साथ 10वीं पास करके बागों के शहर के क्राइस्ट कॉलेज में प्री–यूनिवर्सिटी कोर्स (पीयूसी) में दाखिला ले लिया है। भविष्य की योजना, सफल कारोबार करना।

इसका ज्यादातर श्रेय कॉलेज के छात्र–छात्राओं को जाता है। कॉलेज में गठित समूह सेंटर फॉर सोशल ऐक्शन के स्वयंसेवियों ने रेशमा जैसे गरीब युवक–युवतियों के सशक्तीकरण को अपना मिशन बनाया है। वे न केवल झुग्गी बस्तियों और दूसरे गरीब इलाकों में अभावग्रस्त विद्यार्थियों का पता लगाते हैं, बल्कि उनके लिए ट्यूटोरियल की भी व्यवस्था करते हैं, और सबसे बढ़कर, आधुनिक शिक्षा हासिल करने के लिए जरूरी पैसा भी मुहैया कराते हैं।''

(पढ़ो और पढ़ाओ भी, स्टीफन डेविड, इंडिया टुडे, 30 जुलाई 2003)

11.4 सामाजिक पृष्ठभूमि

समुदाय के लिए फीचर लेखन की सामाजिक पृष्ठभूमि दरअसल सूचना के इस्तेमाल से जुड़ी है। समाज के हाशिये पर सिमटे रहने वाले वर्गों को सूचना क्रांति की बदौलत ही अपनी मौजूदगी दर्ज करने का मौका मिला। सूचना और संचार माध्यमों से जुड़े लोगों ने भी समाज के इन अनदेखे कोनों में ताक–झांक शुरू की, जिसके सकारात्मक नतीजे सामने आए। आजादी के बाद भारत में हुए सामाजिक आंदोलनों में बड़ा परिवर्तन यह देखने को मिला कि छोटे समूह और समुदाय अपनी अस्मिता को लेकर सचेत होने लगे। अभी तक सामाजिक आंदोलन किसी बड़े आदर्श या अवधारणा को लेकर चलते थे और लोगों को उसे जुड़ने का आह्वान करते थे। यह परिवर्तन की वैश्विक लहर थी, जिससे भारतीय समाज भी अछूता न रहा और तमाम समुदायों ने

अपनी पहचान का संघर्ष आरंभ किया। हम समुदाय के लिए फीचर लेखन की मूल अवधारणा पर विचार करें तो परिवर्तन के इस बुनियादी पहलू को नजरअंदाज नहीं कर सकते। दूसरे शब्दों में कहें तो समुदाय के लिए लिखे जाने वाले सारे लेखन के पीछे अस्मिता को पहचानने की यह कोशिश छिपी हुई है।

आदिवासी समुदायों का संघर्ष अंग्रेजों के जमाने से चल रहा था। वे सभ्य समाज के लिए 'अनोखे' और 'अजूबा' थे। उन पर अगर कुछ गंभीरता से काम हुआ तो वह भी पुस्तकालयों और पत्रिकाओं में कैद होकर रह गया। फिर मीडिया ने उनकी संस्कृति और संघर्ष को स्वर देना शुरू किया। इसमें मुख्यधारा की पत्रकारिता और जिसे हम वैकल्पिक मीडिया कहते हैं, उसका बराबर का योगदान रहा। समाज के दलितों और पिछड़ों का राजनीतिक–सामाजिक उभार तेजी से हो रहा था। गंभीर किस्म की पत्रकारिता ने समाज में दिखाई देने वाले इन परिवर्तनों की सतही व्याख्या करने की बजाय उनका गहराई से विश्लेषण किया। गंभीर पत्रकारिता में आदिवासी, दलित, पिछड़े और महिलाएं एक व्यापक विमर्श का हिस्सा बनने लगे। दलित और स्त्री विमर्श जैसे पद बने। इसने मुख्यधारा की पत्रकारिता पर भी असर डाला और उसके नजरिये को परिपक्व किया।

11.5 समुदाय संबंधी लेखन के विभिन्न क्षेत्र

अब हम समुदाय पर लिखे जाने वाले फीचर के विषय–क्षेत्रों पर चर्चा करेंगे। समुदाय के लिए लिखे जाने वाले फीचर को मुख्य रूप से तीन शीर्षकों के अंतर्गत समेट सकते हैं। इन शीर्षकों के दायरे में हम मौजूदा समय में समुदाय को लेकर लिखे जा रहे लगभग हर प्रकार के फीचर को समेट सकते हैं। आइए, क्रमवार इन पर विचार करते हैं।

11.5.1 आदिवासी समुदाय

आदिवासी समुदाय हमारे देश का एक बहुत बड़ा और उपेक्षित हिस्सा है। आजादी मिलने के बावजूद देश के कई हिस्सों में आदिवासी गुलामों जैसा जीवन गुजार रहे हैं। आदिवासियों का अपने जंगल और जमीन से अटूट रिश्ता रहा है। जमीन पर अधिकार के लिए उन्होंने कड़े संघर्ष किए। जंगलों और पहाड़ों की ऊबड़–खाबड़ जमीनों को कड़ी मेहनत करके उसे रहने और खेती लायक बनाया। बाद के दौर में बने कानूनों ने उन्हें आहिस्ता–आहिस्ता वन क्षेत्रों और जमीनों से बेदखल करना शुरू कर दिया। बड़े पैमाने पर आदिवासी अपने इसी हक के लिए संघर्ष करते रहे हैं। कुछ बंजारा और घुमंतू किस्म के आदिवासी समुदाय अपराध की तरफ मुड़ गए तो बहुत से समुदाय अपराधी होने के शक में उत्पीड़ित हो रहे हैं। इनमें से बहुत से आदिवासी अपनी लोक कलाओं के सहारे जीवन–यापन करते थे, मगर यह कौशल भी अब सिमटता जा रहा है। कुल मिलाकर आदिवासियों को 'सभ्य समाज' से घृणा और उपेक्षा ही मिली है, उन्हें न तो मुख्यधारा में शामिल किया गया और न ही वे चाहकर भी ऐसा कर पाए। आज भी उन्हें दो वक्त की रोटी के लिए संघर्ष करना पड़ता है। देखें उदाहरण –

''जिंदगी उनके लिए नर्क है। साठ साल के सुंदर हों या चौबीस साल का पप्पू इनकी सुबह शुरू होती है दो रोटियों की तलाश से और शाम भी इसी में ढल जाती है। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ से महज 52 किलोमीटर दूर बाराबंकी जिले के

बांसा में रहने वाले चकछिन्ने (पत्थर काटने वाले) जाति के लोग अनाज की जगह चूहा, लुखरी (लोमड़ी), वनबिलार खाकर जी रहे हैं।''

(आउटलुक, 18 अगस्त 2003 'चकछिन्ने' एक नई सुबह का इंतजार

योगेश मिश्र,)

11.5.2 हाशिये पर लोग

वन क्षेत्रों में रहने वाले आदिवासी ही नहीं, बल्कि हमारी मुख्यधारा का हिस्सा कहलाने वाले तमाम समुदाय ऐसे हैं, जो लंबे समय से हाशिये पर होने के कारण आज अपनी पहचान के लिए संघर्ष कर रहे हैं। चाहे वह कोई अल्पसंख्यक समुदाय हो, पीढ़ी–दर–पीढ़ी काम करने वाले हुनरमंद कारीगर हों, ग्रामीण इलाकों में रहने वाली स्त्रियां हों, शहरी आबादी में मौजूद दलित हों, उपेक्षा और हिकारत से देखे जाने वाले हिजड़े हों, रेलवे प्लेटफार्म, चौराहों और मलिन बस्तियों में भटकने वाले आवारा बच्चे हों या फिर वेश्याएं हों, मौजूदा पत्रकारिता और सामाजिक आंदोलनों ने इन सभी को देखने के परंपरागत नजरिए को बदला है। अभी तक उन्हें जिस उपेक्षा भरी निगाह से देखा जाता था, उसमें बदलाव आया है, दृष्टिकोण ज्यादा उदार और मानवीय हुआ है। यह फीचर लेखन का एक संभावनाशील और विस्तृत क्षेत्र है। इस वजह से ही इन तमाम उपेक्षित लोगों के मौजूदा हालात और उसके पीछे वजहों को एक बड़ी बहस का हिस्सा बनाने की कोशिश हुई है और उसमें काफी हद तक सफलता भी मिली है।

11.5.3 नई सामुदायिक चेतना

बीते सालों में समाज की मुख्यधारा में भी नई सामुदायिक चेतना का विकास देखने को मिला है। लोककलाओं के संरक्षण के प्रयास हुए हैं। छोटे–छोटे तमाम समूहों में जागरूकता आई है और उन्होंने मिलकर खुद को आत्मनिर्भर बनाने से लेकर विभिन्न सामाजिक योगदानों तक में अपनी जिम्मेदारी को अंजाम दिया हैं। ऐसे तमाम लोग हैं जिन्होंने सामुदायिक चेतना विकसित करने का काम किया है। बीते दो–तीन दशक छोटे स्तर पर किए प्रभावशाली प्रयासों के दौर कहे जा सकते हैं। देश के अलग–अलग इलाकों में चलने वाले तमाम आंदोलनों के सफल होने की बड़ी वजह सामुदायिक चेतना और उसकी धड़कन को पहचानना भी था। मीडिया का रुख भी इन आंदोलनों के प्रति सकारात्मक रहा है और इस रुख की वजह से ही इन आंदोलनों में लगे लाखों लोगों को बल मिला है। चाहे वह पहाड़ में शराब के खिलाफ महिलाओं का आंदोलन हो, हरे–भरे पेड़ों को काटे जाने के विरोध में चला 'चिपको आंदोलन' हो, पॉलीथीन के इस्तेमाल के खिलाफ स्कूली बच्चों की एकजुटता हो या फिर बड़े बांधों की वजह से होने वाले विस्थापन के खिलाफ संगठित होते जन–आंदोलन। यह नई सामुदायिक चेतना हमें महानगरों में छोटे पैमाने पर किए जा रहे कई प्रयासों में भी दिखाई देती है। यह एक व्यापक और निरंतर घटित होते रहने वाला क्षेत्र है, जहां फीचर लेखन की अपार संभावनाएं हैं।

11.6 विषय पर लेखन के प्रकार

हमने यह देखा कि समुदाय संबंधी लेखन को मुख्य तौर पर कितने क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है। इन क्षेत्रों में हम तमाम विषय तलाश सकते हैं और उन पर विशेषज्ञता हासिल करते हुए अच्छे फीचर लिख सकते हैं। समुदाय से संबधित इन

क्षेत्रों में फीचर लिखने के लिए विषय के विस्तार की संभावनाओं को भी टटोलना होगा। इन्हें सीधे–सीधे खांचे में नहीं बांटा जा सकता क्योंकि तेजी से आ रहे सामाजिक बदलाव के मद्देनजर इनमें हमेशा असीमित संभावनाएं रहेंगी। आगे हम इसी पर थोड़ा और विस्तार से विचार करेंगे और यह देखेंगे कि समुदाय पर कितने प्रकार के फीचर लिखे जा सकते हैं।

11.6.1 आदिवासी समुदायों की जीवन–शैली

आदिवासी समुदायों की जीवन शैली पर लंबे समय से फीचर लिखे जाते हैं। बदलते दौर को देखते हुए इस रुझान में कोई खास फर्क नहीं आया आदिवासी समुदायों का रहन–सहन समाज के लिए कुतूहल का विषय भी रहा है। अनोखी प्रथाएं, परम्पराएं, रीति–रिवाज और वेशभूषा हमेशा से लोगों की दिलचस्पी का केंद्र रहे हैं। आदिवासियों के रहन–सहन पर केंद्रित एक अच्छा फीचर उसे सिर्फ कौतुक या मनोरंजन का विषय बनने से बचाता है, बल्कि इसी बहाने वह पाठक का ध्यान इन समुदायों की केंद्रीय मानवीय स्थिति की तरफ ले जाता है। इस तरह के ब्योरे भले ही दिलचस्प हों, मगर हम उनसे जुड़कर सोचना आरंभ कर देते हैं। उत्तर भारत के थारुओं की जीवन शैली का चित्रण करता एक उदाहरण प्रस्तुत है :

''जन्माष्टमी पूजन के लिए घरों में दीवार पर बनने वाले चित्र थारूओं की आस्थाओं, मान्यताओं की झलक देते हैं। इसमें बंशी बजाते, कालिया नाग पर सवार कृष्ण की आकृतियों के साथ ही पेड़–पौधे, जंगली जानवर होते हैं तो पांडव के आसपास ही, बरमुंडवा भी देखने को मिलता है।

बरमुंडवा बारह मुखों वाली आकृति है, जो वास्तव में रावण है। दशानन के साथ दो और मुखों के जुड़ जाने के बारे में इन्हें कुछ मालूम नहीं। इसी चित्र में कुछ घरों में हनुमान जी की आकृति भी बना दी जाती है। राम और रावण में इनकी जबर्दस्त आस्था है और इन्हें वे अलग करके नहीं देखते। यही वजह है कि थारुओं की बस्ती 'एस्कॉन' के लोगों को वृदांवन में बैठकर भी अपनी ओर खींचती है। श्रावस्ती के रनियापुर में तो ईसाई मिशनरी के लोगों ने बाकयदा अभियान भी चलाया, मगर नाकामयाब रहे।''

(संस्कार अपनी जगह मगर फिल्मों का जबदस्त रंग है

थारुओं पर, प्रभात, अमर उजाला, 10 मार्च, 1998)

11.6.2 लोक कलाएं और कलाकार

भारतीय समाज में कला जीवन की सहज गति में घुली–मिली हुई है। पंरपरागत समुदायों में लोक कलाओं का सुंदर रूप देखने को मिलता है। ऐसे तमाम समुदाय हैं जो बहुत पहले से ही अपने खास हुनर की बदौलत ही जीवन–यापन करते आए है। बदलते वक्त, टेक्नोलॉजी और मशीनीकरण के चलते उनके हुनरमंद हाथों की कद्र घटने लगी। ऐसे लोग मजबूरी में अपनी पुश्तैनी कला छोड़कर दूसरे काम करने लगे। फीचर के माध्यम से इन समुदायों में छिपे हुनर को सामने लाने का प्रयास किया जा सकता है, मिटती हुई लोक कलाओं की तरफ लोगों का ध्यान आकर्षित किया जा सकता है और संरक्षण के लिए चल रहे प्रयासों को रेखांकित किया जा सकता है। उनके उदाहरण देखें –

''इस बीच ज्यादातर अनपढ़ हिन्दू–मुस्लिम बुनकरों ने खुद डिजाइन तैयार करना शुरू कर दिया। जोधपुर के आधा दर्जन गांवों में करीब तीन हजार बुनकर सालावास दरियां बनाने लगे। धीरे–धीरे उन्होंने अपना बाजार बना लिया। नौवीं तक पढ़े प्रजापति सरीखे कुछ बुनकर राजस्थानी पगड़ी पहनकर पर्यटकों को लुभाने लगे और अनंदा राम सरीखे कुछ बुनकरों के साथ गांव जाने लगे। रूपराज ने इस कारोबार की संभावनाओं को भांपकर 1984 में अपना हथकरघा लगा लिया था। आज उनके 18 हथकरघों में 50 बुनकर काम कर रहे हैं।''

(रंगीन सपनो की बुनावट, रोहित परिहार,

इंडिया टुडे, 24 नवंबर 2004)

11.6.3 समुदायों में बदलाव

वास्तविकता यह है कि परपंरागत समझे जाने वाले समुदाय भी परिवर्तन की लहर से अछूते नहीं रह गए हैं। यही वजह है कि अब आदिवासियों की जीवन शैली को महज दांतों तले उंगली दबाकर देखने की बजाय फीचर लेखक की निगाह उन बदलावों की तरफ भी जाती है, जो आदिवासी और सभ्य समाज की मुठभेड़ से उपजे हैं। इन परिवर्तनों से गहरे सामाजिक अर्थ निकलते हैं। समुदायों में तेजी से आ रहे इस परिवर्तन पर फीचर लेखन की व्यापक संभावनाएं हैं। यहां बस्तर के आदिवासियों पर लिखे एक फीचर के अंश को बतौर उदाहरण प्रस्तुत किया जा रहा हैं, जिससे इस तरह के लेखन की अवधारणा और स्पष्ट होगी–

''बस्तर के नए बने जिले कांकेर के एक छोटे से कस्बे में आदिवासियों के एक शिविर में जब एक आदिवासी बाला ने पानी का गिलास बढ़ाया, तो मैंने शहरी आदतवश 'थैंक यू' कहा। जवाब में उसने खास अंग्रेजी अंदाज में 'वेलकम' कहा तो हमारा चौंकना लाजमी था। यहां जिस आदिवासी बाला का जिक्र है उसकी मां उस शिविर में अपने विशेष आदिवासी पहनावे के कारण अलग से ही पहचान में आ जाती थी। जब बोलने का मौका आया तो हालबी भाषा में उसने अपनी बात रखी, मगर उसकी पंद्रह–सोलह साल की लड़की इंदिरा बस्तर ने बताया कि वह मुंबई कहे जाने वाले जबलपुर के एक अंग्रेजी स्कूल में पढ़ती है। कांकेर, दंतेवाड़ा, धमतरी, जबलपुर आदि इलाकों में रहने वाले गोंड, मारिया, मुड़िया, हालबा, बैगा, धुरवा समुदायों के आदिवासियों की नई पीढ़ी इस बात की हामी है कि अंग्रेजी और कंप्यूटर का ज्ञान उनकी तरक्की का कारण हो सकता है। आप कांकेर जैसे छोटे शहर में निकल जाएं तो कम से कम दर्जन भर साइबर कैफे आपको दिख जाएंगे और उनमें आधी–आधी रात तक बैठने वाले छात्रनुमा लड़के भी।

बस्तर के आदिवासी इलाकों में सक्रिय आदिवासी समता मंच की कार्यकर्ता इंदू नेताम कहती हैं कि घर–घर पसरते टीवी के साम्राज्य ने आदिवासियों के अंदर भी उपभोक्ता वस्तुओं की लालसा पैदा कर दी है। जो आदिवासी समाज महज कुछ दशक पहले तक यह मानता रहा है कि जो मजा जंगल में घूमने में है। वह नौकरी–चाकरी करके पैसा कमाने में कहां है, वही आज जमीन बेच–बेच कर घर को उपभोक्ता सामान से भरने में लगा है।''

(गात हन हम धरती दाई के गुन रे, प्रभात रंजन,
जनसत्ता, 17 अप्रैल 2005)

11.6.4 सामुदायिक संघर्ष की कथा

समुदायों के संघर्ष की कथा भी फीचर का विषय बनती है। वे मुख्यधारा का हिस्सा न बन पाने की जद्दोजहद से गुजर रहे हैं। बदले वक्त ने उनकी भूमिका को अप्रासंगिक बना दिया है। भारतीय समाज में ऐसे तमाम समुदाय हैं जो बदलते वक्त से तालमेल न बिठा पाने के कारण हाशिये पर धकेल दिए गए हैं। वे अपनी आजीविका और समाज में खुद का अस्तित्व बनाए रखने के संघर्ष से जूझ रहे हैं। इनके सघर्ष को भी फीचर का विषय बनाया जा सकता है। एक उदाहरण देखें –

''सरकार की ओर से इन्हें जमीन का पट्टा तो हासिल हुआ है, लेकिन बीस साल गुजर गए, पट्टे जमीन की शक्ल भी इन्होंने नहीं देखी। जिले के सरकारी दस्तावेज पर नजर दौड़ाएं तो उनके नाम गरीबी रेखा के नीचे रहने वालों में शामिल हैं और उनको राशन कार्ड भी जारी किए गए हैं। लेकिन हकीकत यह है कि इनके पास चावल और गेंहू खरीदने के लिए आना–पाई भी नहीं हैं। नई पीढ़ी के चकछिन्नों ने पैदल चलकर ही सही, बाराबंकी जिले तक अपनी जद बढ़ा ली है। शहर में आमद–रफ्त करने वाले चकछिन्ने थोड़े चतुर सुजान होने लगे हैं। एक लड़का अपनी चतुराई की कहानी सुनाते हुए कहता है, 'अनजान आदमी को बताते हैं कि उसके घर में विषखोपड़ा है। अगर कोई निकलवाने को तैयार हो जाता है तो पांच–दस रुपये हाथ लग जाते हैं। हम लोग अपने पासका विषखोपड़ा निकालकर दिखा देते हैं।''

('चकछिन्ने' एक नई सुबह का इंतजार, योगेश मिश्र,

आउटलुक, 18 अगस्त 2003)

11.6.5 पहचान बनाने की जद्दोजहद

समुदायों के साथ ही सामुदायिक चेतना के विकास की समझ भी फीचर के लिए एक उर्वर क्षेत्र है। सिर्फ दबी–कुचली हालत में रहने वाले लोगों के समुदाय ही नहीं, बल्कि जागरूक समुदाय भी संघर्षरत हैं। नई तकनीक से साक्षात्कार, शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन के चलते इन समुदायों में अपनी पहचान बनाने की कोशिश होने लगी है। ये लोग समाज की मुख्यधारा का हिस्सा बनना चाहते हैं, मगर अपनी छवि को मिटाए बगैर। इनमें आदिवासी समुदायों से लेकर शहरी इलाकों में रोजगार के लिए बसे उपेक्षित लोग और ग्रामीण तक शामिल हैं। एक उदाहरण देखें :

''गांवों में मार्केटिंग की कामयाबी का प्रतीक बने शैंपू के सैशे आज यहां की हर दुकान में आपको टंगे मिल जाएंगे। हर हफ्ते यहां की परचून की दुकान से कोल्ड ड्रिंक की करीब 150 बोतलें बिक जाती हैं। ग्रामीण भारत तेजी से ठंडा गटकने लगा है। पिछले सात साल में गांवों में कार्बोनेटेड ड्रिंक्स की खपत में 65 फीसदी का इजाफा हुआ है। 1.64 करोड़ शहरी मध्यवर्गीय घरों के मुकाबले देश के ग्रामीण क्षेत्रों में मध्यवर्गीय घरों की तादाद 1.56 करोड़ है। यानी करीब उसी के बराबर। आदर्श नंगला उन्हीं घरों का एक आइना है–यहां कमोबेश हर घर में टेलीफोन, रसोई गैस सिलिंडर और मोटरसाइकिल हैं। हर सुबह आपको यहां चार अखबार और ब्रिटानिया ब्रेड मिल जाएगी।''

(धुंधली–सी रोशनी में, शारदा उगरा,

इंडिया टुडे, 22 अगस्त 2005)

11.6.6 आत्मनिर्भरता और सहयोग

यह जानना भी दिलचस्प होगा कि कैसे आत्मनिर्भरता और सहयोग की बदौलत समुदायों में नई चेतना का विकास हुआ है। समाज के तमाम छोटे समूहों में आई जागरूकता से परिवर्तन के नए आयाम सामने आए हैं। इन समुदायों ने अपने तरीके से खुद को आगे बढ़ाने की राह तलाश की है और आपसी सहयोग से खुद को, आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया है। अपने समुदाय में सालों से जड़ जमा चुकी कुरीतियों को खत्म करने का जिम्मा भी उठाया है। इन समुदायों में शहरी लोगों से लेकर गांवों में रहने वाले तक शामिल हैं। ये सामूहिक तौर किए गए प्रयास भी हो सकते हैं और एक समुदाय में आई चेतना के फलस्वरूप निजी स्तर पर की जाने वाली कोशिशें भी। उदाहरण देखें –

''देश के दूर–दराज कस्बों की लड़कियां कंप्यूटर या एमबीए प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने में जुट रही हैं। इन कस्बों से कई ऐसी लड़कियां दिल्ली तक आ गई हैं। हाल ही में बिहार के भागलपुर जिले के नौगछिया से एक मां अपनी तीन बेटियों को लेकर दिल्ली के कटवरिया सराय में आकर बस गई है। सिर्फ इसलिए कि उसकी तीनों बेटियां पढ़–लिखकर अपने पांवों पर खड़ी हो सकें। पिता केले की खेती करता है और अपनी बूढ़ी मां के साथ नौगछिया में ही रहता है। सबसे बड़ी लड़की बैंक में प्रोबेशनरी ऑफीसर बनने के लिए प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रही है। दूसरी कंप्यूटर में एमसीए कर रही है। तीसरी सरोज कहती है 'मैं किसी मल्टीनेशनल में काम करना चाहती हूं।' शादी के मामले में जात–पात के दकियानूसी विचार को पीछे छोड़ आया है यह परिवार। इन लड़कियों की मां कहती हैं, 'दिल्ली में ही अच्छे लड़कों से अपनी लड़कियों की शादी कर देंगी। किसी भी जाति के मिल जाएं।''

(हैं कसबे की पर छा गई, शैलेश कुमार झा,

आउटलुक, 24 नवंबर 2003)

11.7 खत्म होते समुदाय

कुछ समदाय ऐसे भी हैं जो वक्त की तेज रफ्तार में खत्म होते जा रहे हैं। अनचाहे तौर पर ही उनकी संस्कृति मिटती जा रही है क्योंकि उसे संभालने वाले उत्तराधिकारी मौजूद नहीं हैं। इन समुदायों को भी हम फीचर का विषय बना सकते हैं। इन पर लिखे जाने वाले फीचर में हम उस निर्मम अनिवार्यता की तरफ भी पाठकों का ध्यान आकृष्ट करते हैं, जिसकी वजह से समाज में लंबे समय से बहता एक सोता अचानक सूखने की कगार पर पहुंच जाता हैं। इसमें उस समुदाय के लोगों का इंसानी जीवन संघर्ष भी शामिल होता है। इसी तरह के फीचर का एक उदाहरण प्रस्तुत है –

''वे तारीखें 59 वर्षीया रूबी नामिया के जेहन में आज भी ताजा हैं जब उनकी माँ और तीन भाइयों ने इस्राइल में जा बसने की खातिर केरल को अलविदा कह दिया था। वे क्षण भले ही हृदयविदारक रहे हों, लेकिन रूबी, उनके कपड़ा व्यापारी पति अब्राहम और उनकी तीन बेटियों का लगाव संभावनाओं से भरे उस देश के मुकाबले देवभूमि के प्रति ज्यादा गहरा था। यूं तो नामिया परिवार को यहूदी होने पर गर्व है, मगर इससे भी ज्यादा गर्व उन्हें अपने मलयाली होने पर है और यह सब इस तथ्य के

बावजूद है कि अपनी तेजी से घटती आबादी के कारण समाज में परंपराओं को जिंदा रखने की जद्दोजहद में यहूदी समुदाय पिछड़ता जा रहा है।''

(जुदा न होंगे इस जमीन से, एमजी राधाकृष्णन

इंडिया टुडे, 21 जून 2004)

यहां हम थारुओं पर लिखा गया एक फीचर का अंश बतौर उदाहरण प्रस्तुत कर रहे है। इसमें आप देखेंगे कि कैसे एक समुदाय की गतिविधि के बहाने उसकी संस्कृति, जीवन संघर्ष और समाज में उनकी पहचान के संकट को एक साथ सामने लाया जा सकता है। इसके लेखक प्रभात ने बतौर शोधार्थी और छायाकार कई वर्षों तक थारुओं से जीवंत संपर्क बनाए रखा। अमर उजाला में प्रकाशित यह फीचर बाद में गोविंद वल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान से प्रकाशित उनकी पुस्तक में भी शामिल हुआ।

संस्कार अपनी जगह मगर फिल्मों का जबरदस्त रंग है थारुओं पर

''थारुओं की बारात है। डोली के आगे चलते बच्चे और युवक फिल्मी गानों की तर्ज पर ऐसे नाच रहे हैं कि एक–बारगी तो शहरी शोहदे भी शरमा जाएं। भरी हुई बंदूकों से फायर करती युवक मंडली खुद को 'वीडियो' के नायक जैसा ही महसूस करने लगती है। प्रधान के समधी के घर तो दूल्हे की डोली का इंतजार करती औरतें तब चक्कर में पड़ गई, जब दूल्हा जीप में सवार होकर दरवाजे पर पहुंच गया। यह सिर्फ बानगी है।

जनजातियों के आर्थिक उत्थान और विकास की सरकारी कोशिशें पूरी तरह सार्थक भले नहीं हुईं, मगर लोक जीवन में घालमेल की मौजूदा स्थिति के लिए उन्होंने उत्प्रेरक का काम जरूर किया। शहरी जीवन और इसके तौर–तरीकों से नावाकिफ थारू तराई के जंगलों में प्रकृति से सीखते हुए उसके बीच ही रहते आए हैं, पता नहीं कब से अपना समाज, जीवन जीने का अपना निराला ढंग, जंगलों और खेतों से दिन भर के खाने को जुटा लिया, तो फिर बेफिक्र होकर नाचने–गाने में मस्त। धीरे–धीरे कुदरती चीजें इंसान की न होकर सरकार की हो गई, तो जंगल भी सरकार की मिल्कियत हो गए। थारुओं की हदें बांध दी गई। इसके बदले में सरकार ने उन्हें जमीन, मकान और शिक्षा देकर उपकृत किया। सरकार और शहर की नजर लग गई। थारुओं का 'थारूपन' चुकने लगा हैं। अब वे निखालिस जाड़ (चावल से बनी शराब) के नशे से संतुष्ट नहीं हो पाते, उन्हें फिल्मों का नशा है, फिल्मी गानों का नशा हैं, नायक–नायिकाओं की अदाकारी की नकल का नशा है। थारुओं के गांव तक सड़कों के जरिए पहुंचे शहर ने उन्हें जितना दिया, उससे कहीं ज्यादा छीन लिया। शहर से लगातार संपर्क की वजह से वे अब बोउक (बेवकूफ) थोड़े ही रह गए, मगर दरअसल वे खुद क्या हो गए, उन्हें भी नहीं मालूम।

नेपाल से सटे उत्तर प्रदेश के पूरे तराई क्षेत्र के जंगलों में थारू रह रहे हैं। नैनीताल में किच्छा और खटीमा से लेकर पीलीभीत, खीरी, गोंडा, बहराइच और श्रावस्ती में थारुओं की बड़ी आबादी आबाद है। जंगल, जानवर और खेती के सिवाय उन्हें दुनिया की और चीजों से सरोकार नहीं था, इसलिए ये कबाइली जीवन के संस्कारों को जीते चले आए। शैतान से डरते, बीमारी से निजात को जड़ी–बूटियां खुद ही पहचान लेते, बुरी आत्माओं से बचने को गुरवा (गुनिया) की शरण में जाते और शिव को पूजकर आशीर्वाद लेते।

स्वभाव से शांत और सरल होने का ही नतीजा है कि बाहरी दुनिया से पहले साक्षात्कार में इनका सिर्फ शोषण हुआ–श्रम का शोषण, देह का शोषण, आर्थिक शोषण। हद तो यह है कि पूर्वी उत्तर प्रदेश में कई जगह अब भी कुछ ऐसे रिक्शेवाले है, जो थारुओं को ही अपने रिक्शे पर बैठाने की जुगत में रहते हैं। 'अस्पताल जाना हैं, किरावा केतना' के जवाब में रिक्शेवाला तय करता है, 'दू रुपया खंभा' और दस–बारह खंभे गिनाकर आसानी से बीस–बाईस रुपये की मजूरी कर लेता है, हालांकि अधिसंख्य अब रिक्शेवाले को बताने लगे हैं, 'नाहिं, कईसे, अब हम ओतना बउक त नांय हुई।''

(प्रभात, अमर उजाला, 10 मार्च 1998)

बोध प्रश्न 1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1) आजादी के बाद भारत में आदिवासियों की स्थिति में कितना बदलाव आया है? वे किन दिक्कतों का सामना कर रहे हैं? उदाहरण सहित विवेचना करें।

.....

.....

.....

.....

.....

2) उदारीकरण के बाद ग्रामीण युवाओं के रहन–सहन और उनकी सोच में क्या परिवर्तन देखने को मिला है? संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

.....

.....

.....

.....

.....

3) अपने शहर में रहने वाले किसी खास समुदाय के लोगों का पता करें। उनसे बातचीत के आधार पर यह जानने का प्रयास करें कि वे अपनी संस्कृति और रीति–रिवाजों को कैसे जीवित रखे हुए हैं। इन सबकी सहायता से एक संक्षिप्त फीचर लिखें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

11.8 विषय का चयन

अब तक आपको यह अंदाजा लग गया होगा कि समुदाय पर फीचर लेखन का क्षेत्र खासा विस्तृत है। एक लेखक अपने अध्ययन, विश्लेषण तथा आसपास के माहौल के सतर्क निरीक्षण से इन्हीं क्षेत्रों में कई नए आयाम तलाश सकता हैं। समुदाय से संबंधित फीचर के लिए विषय चुनने के दौरान हमें कुछ बुनियादी बातों का भी खयाल रखना चाहिए। आगे हम उन्हीं पर विचार करेंगे।

11.8.1 रुचि और विशेषज्ञता

समुदाय से जुड़ा कोई भी विषय चुनते वक्त अपनी रुचि का खास ध्यान रखें। बिना दिलचस्पी के आप किसी भी विषय पर बेहतर काम नहीं कर सकते। समुदाय संबंधी लेखन का क्षेत्र काफी व्यापक है। यह विषय के प्रति खास, श्रम, शोध और विशेषता की मांग भी करता है, लिहाजा आपको अपनी तैयारी करनी चाहिए जिससे आप समुदाय से जुड़े किसी खास क्षेत्र में विशेषज्ञता के जरिए पहचान बना सकें। यह जरूरी है कि आप अपनी दिलचस्पी वाले क्षेत्र के बारे में अधिक से अधिक जानकारी हासिल करें और उससे अपना जीवंत संपर्क बनाएं।

11.8.2 लेखन का उद्देश्य व प्रासंगिकता

समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में समुदाय पर फीचर लिखते वक्त हमें लेखन के मकसद का खास खयाल रखना होगा। हमारा उद्देश्य सिर्फ किसी के रहन–सहन, खान–पान या रीति–रिवाजों का ब्योरा प्रस्तुत करना भर नहीं है। यह भी देखना होगा कि उस खास समुदाय के प्रति हम पाठक में क्या नजरिया विकसित कर रहे हैं। हम समुदायों की खूबियों, उनकी समूह भावना, आपसी सहयोग को सामने लाते हैं तो इसे व्यापक सामाजिक चेतना से जोड़ना होगा। अन्य विषयों के मुकाबले यह थोड़ा कठिन अवश्य है, लेकिन हम अपने आलेख को समयानुकूल और प्रासंगिक नहीं बनाएंगे तो फीचर असरदार नहीं बन पाएगा। अपने स्तर पर यह पहले ही तय कर लेना होगा कि फीचर में हम समुदाय विशेष के किस पक्ष को सामने लाना चाहते हैं और उस चयन के पीछे हमारा अपना क्या दृष्टिकोण है। उदाहरण के तौर पर यहां हम जिस फीचर का अंश प्रस्तुत कर रहे हैं उनमें लेखक अपनी चिंताओं को स्पष्ट तौर पर पाठकों के सामने रख रहा है –

''संस्कृति के नाम पर संपन्न कार्यक्रमों में लोकगीत की अनुपस्थिति पीड़ा देती है। लोकगीतों, लोक कथाओं, लोक इतिहास और लोक परंपराओं की अनदेखी का परिणाम यह निकला कि इन आयोजनों और प्रदर्शनों पर एकरूपता हावी होती चली गई। हम फर्क नहीं कर सकते कि यह किस अंचल की संस्कृति है। आखिर रुहेलखंड की संस्कृति और लोक परंपराओं को बचाने के लिए हमने क्या किया? मुझे याद है कि 1970 के आस–पास आस्ट्रेलिया के एल. ब्रेनन इस इलाके के इतिहास अनुसंधान के लिए आए थे। उन्हें यह देखकर निराशा हुई कि इधर के लोग अपनी संस्कृति और इतिहास से कितने बेखबर हैं। क्या कुछ लोग राहुल सांकृत्यायन और देवेंद्र सत्यार्थी की तरह अपने इलाकों में विलुप्त होती लोक परंपरा को बढ़ाने के लिए आगे नहीं बढ़ सकते? यह तभी संभव है। जब हम लोक को प्यार करते हों।''

(आओ, लोक की ओर देखें, सुधीर विद्यार्थी

अमर उजाला, 31 अगस्त 2004)

11.8.3 प्रकाशन की प्रकृति

समुदायों के लिए फीचर लिखने के दौरान हमें प्रकाशन की प्रकृति का भी ध्यान रखना होगा। सभी पत्रिकाओं में समुदायों पर लिखे फीचर को स्थान नहीं मिल सकता। लेकिन कुछ गंभीर किस्म की पत्रिकाओं में इस तरह के लेखन की खासी संभावनाएं होती हैं। अखबारों में छपने वाले फीचर आम तौर पर समुदायों के किसी प्रेरणादायक, अनूठे या उनके संघर्ष को बयान करने वाले पक्ष तक ही सीमित रहते हैं, जबकि पत्रिकाओं में समुदाय के पूरे आचरण और रहन–सहन संबंधी तमाम पहलुओं को समेटा जा सकता है।

11.9 सामग्री का संकलन

फीचर तैयार करने से पहले उससे संबंधित सामग्री का संकलन फीचर लेखन का एक अहम कार्य है। किसी भी विषय पर फीचर तैयार करने से पहले हमें आवश्यक सामग्री एकत्र करनी होती है, जिसमें आम तौर पर विषय से संबंधित आंकड़े, फोटो, लोगों के साक्षात्कार आदि को शामिल किया जाता है। आगे हम इन पर सिलसिलेवार विचार करेंगे।

11.9.1 विषय पर शोध

किसी भी अन्य विषय के मुकाबले समुदाय फीचर लेखन में शोध सबसे ज्यादा आवश्यक है। किसी समुदाय के बारे में बिना पर्याप्त जानकारी के शोध लिखना लगभग असंभव है। आम तौर पर समुदायों पर अच्छा फीचर तैयार करने के लिए दोहरे स्तर पर शोध की जरूरत पड़ती है। सबसे पहले हम जिस समुदाय को अपने लेखन का विषय बनाने जा रहे हैं, उसके बारे में पहले किए जा चुके शोध कार्य और अध्ययन को हमें अवश्य आधार बनाना चाहिए। समुदायों के निर्माण की प्रक्रिया जटिल होती है। यदि हम उन पर हुए अध्ययन की पृष्ठभूमि को साथ लेकर नहीं चलेंगे तो सतही नतीजों तक नहीं पहुंच सकते हैं। इस सबके बावजूद समुदायों से सीधे संपर्क के बिना फीचर तैयार नहीं हो सकता। इसके लिए यह आवश्यक है कि हम समुदायों के रहन–सहन और तौर–तरीकों का सीधे उनके बीच जाकर अध्ययन करें। यहां हम पवन सक्सेना की एक रिपोर्ट बतौर उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं, जिसे 'द स्टेट्समैन एवार्ड फॉर रूरल रिपोर्टिंग' भी मिल चुका है –

''लोग जाति और धर्म के बंधनों की चाहे जितनी बातें करें, कसमें खाएं, सच तो यह है कि गरीब की कोई बिरादरी नहीं होती। यही वजह है कि बरेली के पिछड़े गांवों के गरीब किसान, जाटव बंगाल के चंद्रवंशी, उरांव आदिवासियों की बेटियों से ब्याह कर रहे हैं। रोटी के लिए दूर–दराज की बेटियों से बना यह रिश्ता लखनऊ–दिल्ली राष्ट्रीय राजमार्ग के किनारे मीरगंज के पास बसे कुछ गांवों में साफ झलकता है। मीरगंज से कुछ पहले बसा है परतापुर बफरी। करीब तीन हजार की आबादी वाले इस गांव में चंद बड़े किसान हैं और तमाम खेतिहर मजदूर, जो हथेली पर रखे गए साठ रुपयों की बदौलत हर दिन अपनी मेहनत बेचते हैं और इनके पीछे इनके घरों को संभालती हैं अनजानी भाषा बोलने वाली तीखे नैन–नक्शों की मालकिन बंगाली बालाएं, जिनको यहां के युवक पांच–पांच हजार रुपये खर्च करके पश्चिम बंगाल के तमाम जिलों से ब्याह लाए हैं।''

(गरीबों की जिंदगी में ताल मिला रही हैं बंगाली बीवियां
पवन सक्सेना, अमर उजाला, 8 जनवरी, 2002)

11.9.2 तथ्यों का संकलन

फीचर लेखन की प्रक्रिया का एक अहम हिस्सा तथ्यों का संकलन है। तथ्यों की मदद से फीचर की पूरी रूपरेखा और विशिष्टता निर्धारित होती है। समुदाय के लिए लेखन में तथ्यात्मकता का खास महत्व है। इन तथ्यों की मदद से हम अपने फीचर को विश्वसनीय और पाठकों के लिए दिलचस्प बनाते हैं। इसके लिए जरूरी है कि तय किए गए विषय पर शोध और सर्वेक्षण के दौरान एकत्र तथ्यों का विश्लेषण किया जाए। इससे यह अंदाजा हो जाएगा कि कौन सा तथ्य फीचर के लिए आवश्यक है, और कौन सा अनुपयोगी? उपयोगी तथ्यों को आकर्षक और सुनियोजित तरीके से प्रस्तुत करने पर फीचर पठनीय और दिलचस्प बनता है।

11.9.3 साक्षात्कार

समुदाय पर लिखे जाने वाले फीचर में साक्षात्कार का इस्तेमाल अवश्य होना चाहिए। साक्षात्कार की मदद से सामुदायिक जन–जीवन को ज्यादा प्रामाणिक और जीवंत ढंग से प्रस्तुत करने में मदद मिलती है। साथ ही इससे विषय की एकरसता और बोझिलता भी दूर होती है। बहुत से समुदायों के लोग बाहरी समाज से ज्यादा खुलना या उनके साथ घुलना–मिलना पसंद नहीं करते, लिहाजा साक्षात्कार के लिए उन्हें विश्वास में लेना बहुत जरूरी होता है। बातचीत के टुकड़ों को जस का तस प्रस्तुत करने की बजाय उसे फीचर के भाषा और विन्यास का हिस्सा बनाकर प्रस्तुत करना चाहिए। लोगों से बातचीत के वही टुकड़े इस्तेमाल करें जिनकी आपके फीचर के साथ संगत बनती हो। उदाहरण देखें :

''जरूरत पूरा करने के लिए इन्हें जब कभी पैसों की दरकार होती है तो ये गोह और धामिन सांप की खाल बेचते हैं। खालें कितने में बिकती हैं, यह पूछने पर सुंदर बताते हैं, 'गरीबी में चाहे जित्ते में बिक जाएं, रुपया–दू रुपया में। इन्हें नहीं पता कि कौन लोग इसे खरीदते हैं। लेकिन खरीदारों की शक्ल से वे पूरी तरह वाकिफ हैं। जबकि हर खरीदने वाले बाद में इसे हजारों में बेचते हैं। जिले के दस्तावेज में इन्हें बारख पाल जाति के रूप में चिह्नित किया गया है। बाराबंकी के पूर्व जिलाधिकारी बीएल मीणा ने इन्हें चिह्नित करने के लिए एक कमेटी बनाई थी। मीणा चले गए। कमेटी फाइलों में गर्द खा रही है।''

('चकछिन्ने' एक नई सुबह का इंतजार

योगेश मिश्र, आउटलुक,18 अगस्त 2003)

11.9.4 फोटो और अन्य सामग्री

समुदाय पर लिखे जाने वाले फीचर के साथ तस्वीरों का खासा महत्व है। जैसा कि आप जानते हैं, पत्रकारिता के बदले रंग–ढंग में अब प्रस्तुति पर ज्यादा जोर दिया जा रहा है। लिहाजा हम अपने फीचर के साथ आंकड़ों की प्रस्तुति, ग्राफ, चार्ट और फोटो का भी इस्तेमाल कर सकते हैं। समुदाय पर लिखे गए फीचर के साथ फोटो देने से उसका प्रभाव काफी बढ़ जाता है। लोक–कलाओं, रीति–रिवाजों और रहन–सहन पर आधारित फीचर में तो तस्वीरें लगभग अनिवार्य होती है, क्योंकि तस्वीरों की मदद से समुदायों के रहन–सहन को ज्यादा विश्वसनीय ढंग से प्रस्तुत करने में मदद मिलती है। ध्यान रखें कि ऐसी तस्वीरें ही दी जाएं जो विषय के अनुकूल हों।

11.10 सामग्री का संयोजन और संपादन

इस इकाई के अंतिम हिस्से में हम इस बात पर विचार करेंगे कि फीचर लिखते समय हमें किन–किन बातों का ध्यान रखना चाहिए। साथ ही जिस विषय या समस्या को हम फीचर के माध्यम से रखना चाहते हैं, उसकी प्रस्तुति को कैसे दिलचस्प बनाएं। यानी फीचर की भाषा किस तरह की हो, शुरुआत, मध्य और अंत कैसा हो। आइये देखें कि फीचर को बेहतर स्वरूप कैसे दिया जा सकता है।

11.10.1 आरंभ

समुदाय पर तैयार किए गए फीचर की शुरूआत दिलचस्प होनी चाहिए। यह भी आवश्यक है कि आम तौर पर समुदाय संबंधी लेखन की प्रकृति ही गंभीर होती है, इसलिए आपका लेखन अतिरिक्त रूप से गंभीरता ओढ़े हुए नहीं दिखना चाहिए। फीचर की शुरूआत हम किसी प्रसंग, जीवंत उदाहरण या साक्षात्कार से कर सकते हैं। यह तरीका पाठकों का ध्यान खींचता है और फिर हम उसे मूल विषय या समस्या की ओर ले जाते हैं। यदि हम आरंभ में ही समस्या पर चर्चा आरंभ कर देंगे तो फीचर सपाट और उबाऊ हो जाएगा। फीचर की शुरूआत का एक उदाहरण देखें –

''शादी–ब्याह के मौके पर नाते–रिश्तेदारों को खिलाने–पिलाने का रिवाज यूं तो देष के हर समाज में हैं, पर राजस्थान के आदिवासी इलाकों में भोज देने पर ही शादी को सामाजिक स्वीकृति मिलती है। भोज देने का खर्च दिनों–दिन बढ़ते जाने और स्थानीय निवासियों की आर्थिक स्थिति में खास बदलाव न होने की वजह से उदयपुर और सिरोही जिले के आदिवासी गांवों में कई दंपत्ति अपनी शादी को सामाजिक स्वीकृति नहीं दिला पाए हैं। ऐसे दंपत्ति अपनी सगाई के बाद शादी किए बगैर 'साथ–साथ' रह रहे हैं और उनके बच्चे भी पैदा हो रहे हैं।''

(कुरीतियों की काट, रोहित परिहार, इंडिया टुडे, 21 जून 2004)

11.10.2 मध्य

फीचर का मध्य भाग सबसे महत्वपूर्ण होता है। इसे पूरे आलेख की रीढ़ भी कह सकते हैं, क्योंकि हम अपनी मूल संकल्पना को यहां स्थापित करते हैं और पाठकों को विषय के विस्तार में ले जाते हैं। दिलचस्प शुरुआत के बावजूद यदि हम मध्य भाग को बेहतर नहीं बना पायें तो पूरे फीचर का संतुलन बिगड़ जाएगा और वह बेजान हो जाएगा। अतः इस हिस्से को तैयार करने में हमें काफी मेहनत करनी चाहिए। आम तौर पर विषय से संबंधित सभी बातों पर विस्तार से चर्चा मध्य भाग में ही होती है। मुख्य विषय पर गंभीरता से चर्चा भी फीचर के इसी हिस्से में होती है। इसके लिए तथ्यों का बेहतर प्रस्तुतिकरण, बातचीत, साक्षात्कार, आंकड़ो आदि का भरपूर इस्तेमाल करना चाहिए। एक उदाहरण देखें –

''अस्सी के दशक में इंदौर के इंजीनियरिंग कालेज में तीन या चार लड़कियां थीं। आज न सिर्फ यहां लड़कियां साफ्टवेयर इंजीनियर बन रही हैं, बल्कि बिजनेस मैनेजमैंट जैसे कोर्स भी कर रही हैं। वे अपने स्वयं के व्यवसाय और प्रतिष्ठान भी चला रही हैं। सिर्फ इंदौर ही नहीं, देवास, उज्जैन, रतलाम, मंदसौर, बुरहानपुर, विदिशा जैसी जगहों की लड़कियां भी कैरियर में नई राह देख रही हैं और अपने ग्रामीण तथा कस्बई परिवेश से निकलकर उच्च शिक्षा हेतु हॉस्टलों में रह रही हैं। ताज्जुब नहीं कि इनफोसिस व सेज जैसी बड़ी कंपनियों के कैंपस इंटरव्यू जब होते हैं

तो मध्य प्रदेश और मालवा की ये लड़कियां सहर्ष चुनी जाती हैं। मालवा की काली मिट्टी में पली रूपा और शीना जैसी लड़कियां इन कंपनियों के बेंगलूर और हैदराबाद ऑफिस में साफ्टवेयर इंजीनियर हैं।''

(हैं कस्बे की पर छा गई, शैलेश कुमार झा

आउटलुक, 24 नवंबर 2003)

11.10.3 अंत और शीर्षक

फीचर के अंतिम भाग में हम आम तौर पर मूल विषय के प्रति अपने सरोकारों को दोहराते हैं और पाठकों को सजग रहने या उनके प्रति सोचते रहने की प्रेरणा देते हैं। इस क्रम में हम फीचर में कही गई बातों का सारांश भी प्रस्तुत कर सकते हैं। यह अंतिम हिस्सा काफी परिश्रम की मांग करता है। कोशिश करनी चाहिए कि फीचर का अंत चुस्त और मार्मिक हो। यदि अंत में किसी किस्म का बिखराव या अस्पष्टता दिखी तो सारी मेहनत बेकार हो जाएगी। पहले कही बातों का भी पाठक पर प्रभाव नहीं पड़ेगा और फीचर बेअसर हो जाएगा। इसी तरह से फीचर का शीर्षक देते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह मूल विषय को ध्वनित करने के साथ पाठकों को फीचर पढ़ने के लिए आकर्षित कर सकें। बहुत अधिक लंबा या निबंधात्मक रूप शीर्षक फीचर के लिए उपयुक्त नहीं माना जाता है। शीर्षकों को वाक्य अथवा वाक्यांश में प्रस्तुत करें तथा अनावश्यक विस्तार से बचें। मुहावरे और रोचक जुमले शीर्षक को आकर्षक बनाते हैं। शीर्षक का वाक्यांश फीचर के मूल मर्म से मेल खाता अवश्य होना चाहिए। देखें उदाहरण–

''अन्न की जगह चूहा, चौगाड़, लुखरी और बनविलाव खाकर जिंदगी बसर कर रहे इन चकछिन्नों तक अनाज और रोटी आखिर कब पहुंचेगी! इन चकछिन्नों के लिए न तो स्वतंत्रता दिवस का कोई मतलब है और न ही 26 जनवरी का। इनके लिए रोज वही शाम और रोज वही दिन होता है। किसी रात भूखे सोते हैं। तो किसी रात कुछ पेट में होता है। इनकी पीढ़ियां केवल किसी तरह से पेट पालने में गुजर गई। युवा चकछिन्नों में अब इससे इतर कुछ करने की चाहत है। वे ऐसी विषम परिस्थितियों में हंसते हैं, गाते हैं और मस्त रहते हैं और इस उम्मीद में हैं कि 'वह सुबह कभी तो आएगी।''

('चकछिन्ने' एक नई सुबह का इंतजार, योगेश मिश्र

आउटलुक, 18 अगस्त 2003)

11.11 भाषा शैली

समुदाय पर लिखे जाने वाले फीचर की भाषा–शैली पर खास ध्यान देने की जरूरत है। विषय की गंभीर प्रकृति के बावजूद लेखक को यह ध्यान रखना होगा कि बात कहने का तरीका बहुत दुरूह या अस्पष्ट न हो। समुदाय पर लिखे जाने वाले फीचर की भाषा में प्रवाह होना चाहिए, विवरणों की बहुलता होनी चाहिए। इन विवरणों की मदद से समुदाय की जीवंत प्रस्तुति में मदद मिलती है। उदाहरण देखें–

''जंगल और खेतों में कम होते रिश्ते के चलते ही थारुओं को बाहरी दुनिया में आना पड़ा–मजूरी करने। बेहद मेहनती हैं, सो काम कराने वालों को अखरते नहीं। शिक्षा के

विस्तार से समय के स्तर पर भी आगे आए हैं। गांव की प्रधानी से लेकर स्कूल में पढ़ाने तक के काम में साझेदारी ने अशिक्षित समाज की कुछ रूढ़ियों को तोड़ने का काम भी किया। बहराइच के मिहिपुरवा में फकीरपुरी से आते वक्त पड़ोसी गांव के प्रधान मिल गए। रास्ते में सेमल के एक विशाल और एकाकी पेड़ की ओर इशारा करके बताया, पहले डर के मारे रात को कोई इधर से नहीं गुजरता था। कहते हैं, इस पेड़ पर शैतान रहता है। इधर से गुजरने पर सुर्ती मांगता है। न देओ, तो जमीन में गाड़ देता हैं। फिर खुद ही बोले, 'अब हालांकि बहुत लोग इस बात पर यकीन नहीं करते हैं। शैतान है तो भगवान भी तो है। पांच पांडव हैं, राम हैं, कृष्ण हैं, हनुमान हैं, शंकर हैं।''

(संस्कार अपनी जगह मगर फिल्मों का जबरदस्त रंग है।

थारुओं पर, प्रभात, अमर उजाला, 10 मार्च, 1998)

11.12 सारांश

- इस इकाई में हमने देखा कि कैसे सूचना क्रांति के चलते विभिन्न समुदायों और हाशिये पर सिमटे लोगों में जागरूकता आयी है। उनके जीवन संघर्ष और परेशानियों से समाज अवगत हुआ है। विभिन्न सामाजिक आंदोलनों की मदद से समुदायों ने खुद को मुख्यधारा के साथ जोड़ने का प्रयास किया है। हमने यह भी समझा कि पत्र पत्रिकाओं में समुदाय पर फीचर लेखन की क्या संभावनाएं हैं।
- हमने समुदायों में आए बदलावों की सामाजिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण किया और समुदाय पर लिखे जा रहे फीचर के विषय क्षेत्र पर भी विस्तार से उदाहरणों के साथ विमर्श किया। यह जानने की कोशिश की कि वे कौन से क्षेत्र हैं जिन्हें ध्यान में रखकर समुदायों पर बेहतर फीचर तैयार हो सकते हैं।
- हमने यह भी समझने का प्रयास किया कि पत्र–पत्रिकाओं में लेखन को ध्यान में रखते हुए समुदायों के कितने रूपों को समझा जा सकता है। हमने समझा कि आदिवासी समुदायों की जीवन–शैली, लोक कलाएं और कलाकार, समुदायों में बदलाव, सामुदायिक संघर्ष की कथा, समुदायों में पहचान बनाने की जद्दोजहद, आत्मनिर्भरता और सहयोग की अवधारणा को हम किस तरह फीचर का विषय बना सकते हैं। इस इकाई में हमने समुदाय के लिए लिखे जाने वाले फीचर का विषय चुनने से लेकर इन पर लिखे जाने वाले फीचर के उद्देश्य तथा प्रासंगिकता, सामग्री के संकलन की विधि, सामग्री के संयोजन और संपादन के तरीके और भाषा शैली पर विस्तार से विचार किया। हमने समझा कि फीचर का पूरा कलेवर किस तरह से तैयार किया जा सकता हैं, जिससे हमें समुदाय के बारे में फीचर लिखने में आसानी हो सके।

अभ्यास

1) आपको अपने शहर की मलिन बस्तियों में रहने वाली लड़कियों के रहन सहन पर एक फीचर तैयार करना है तो किन बातों का ध्यान रखेंगे? कारण सहित अपनी बात को स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) अपने क्षेत्र में रहने वाले आदिवासी समुदाय पर आपको एक फीचर तैयार करना है। इस सिलसिले में आप किस तरह से सामग्री का संकलन और संयोजन करेंगे? संक्षेप में बताएं।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) अपने शहर में ऐसे लोगों की तलाश करें जो किसी समुदाय की बेहतरी के लिए काम कर रहे हों और सामूहिकता की भावना को बल देते हुए लोगों को अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक कर रहे हों। इनके कामकाज और साक्षात्कार के आधार पर एक फीचर तैयार करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

11.13 बोध प्रश्नों /अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) इस इकाई के अध्ययन के बाद स्वयं उत्तर लिखने का प्रयास करें।

11.14 कुछ उपयोगी पुस्तकें

प्रेमचंद्र गोस्वामी : पत्रकारिता के प्रतिमान : यूनिक ट्रेडर्स, चौड़ा रास्ता, जयपुर।

प्रवीण दीक्षित : जनमाध्यम और पत्रकारिता : सहयोगी साहित्य संस्थान, कानपुर।

डॉ. बृजभूषण सिंह आदर्श : रूपक लेखक : मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।

ब्रियन निकोलस : फीचर्स विद फ्लेयर : प्रेस इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया।

रामचंद्र तिवारी : पत्रकारिता के विविध रूप : आलेख प्रकाशन, दिल्ली।

डॉ. अर्जुन तिवारी : आधुनिक पत्रकारिता, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY